E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com website:www.adhuniksamachar.com

आधुनिक समाचार

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

11 YEARS ANNIVERSARY

वर्ष -11 अंक-288 | प्रयागराज, मंगलवार 24 फरवरी, 2026 | पृष्ठ- 8 | मूल्य : 3.00 रूपये

दिल्ली विधानसभा को ब्लास्ट की धमकी,खालिस्तानी ग्रुप के नाम से आया ई-मेल

नयी दिल्ली। दिल्ली विधानसभा भवन और लाल किले

को बम ब्लास्ट में उड़ाने की धमकी दी गई है। सोमवार को खालिस्तानी ग्रुप के धमकी का ई-मेल भेजी गया है। जानकारी मिलने के बाद सुरक्षा एजेंसियां सतर्क हुईं, विधानसभा भवन की सर्चिंग की जा रही है। बम स्क्वाड और डॉग स्क्वॉड सर्च में जुटी हैं। फिलहाल कोई भी संदिग्ध वस्तु नहीं मिली है। वहीं, लाल किला की भी सुरक्षा बढ़ाई गई है। इससे पहले दिल्ली स्थित थौला कुआं के आर्मी पब्लिक स्कूल और लोधी रोड वेऽ एयरफोर्स बाल भारती स्कूल को ईमेल के जरिए धमकी दी गई थी। जानकारी मिलने पर दिल्ली पुलिस, बम स्क्वाड, डॉग स्क्वॉड और दिल्ली फायर सर्विस की टीमें स्कूल पहुंची। पूरा कैंपस खाली कराया गया। हालांकि जांच में संदिग्ध वस्तु नहीं मिली है।नोएडा के 12 स्कूलों को 19 फरवरी को बम से उड़ाने की धमकी का ईमेल आया था। जांच करने पर किसी भी प्रकार का विस्फोटक नहीं मिला। यह धमकी ऐसे समय मिली जब स्कूलों में सीबीएसई की परीक्षाएं जारी थी।राजस्थान हाईकोर्ट की जयपुर बैंच को 19 फरवरी को बम से उड़ाने की धमकी मिली थी। यह पिछले साढ़े तीन महीने में जयपुर बैंच को 9वीं बार दी गई बम की धमकी थी। डॉग स्क्वायड, बम स्क्वायड और पुलिस टीम ने पूरे परिसर की तलाशी ली पर कुछ भी संदिग्ध नहीं मिला। अफरातफरी के कारण नियमित सुनवाई करीब आधे घंटे देरी से शुरू हुई थी।गुजरात की 6 अदालतों को 17 फरवरी को बम से उड़ाने की धमकी मिली थी। इनमें गांधीनगर, अहमदाबाद, वडोदरा, वलसाड समेत 6 जिला अदालतों को ईमेल आए थे। सभी कोर्ट के कैंपस खाली कराए गए थे पर पुलिस को कुछ भी संदिग्ध नहीं मिला।हरियाणा के पंचकूला कोर्ट के सेशन जज को ईमेल के जरिए धमकी मिली थी। 9 फरवरी को आए इस ईमेल में कोर्ट को बम से उड़ाने की बात लिखी थी। इसके बाद कोर्ट में हड़कंप मच गया था। कोर्ट को खाली कराकर जांच की गई। धमकी के बाद पंजाब और हरियाणा हाईकोर्ट भी खाली करवाए गए थे। तलाशी करने पर पुलिस की टीम और डॉग स्क्वायड को कुछ संदिग्ध नहीं मिला।

एआई समिट हंगामा, 5वां आरोपी एमपी से गिरफ्तार,आरोपी कृष्ण हरि की कार से पीएम फेस वाली टीशर्ट मिली

नयी दिल्ली। दिल्ली में आयोजित एआई इम्पैक्ट समिट में इंडियन यूथ कांग्रेस के कार्यकर्ताओं के विरोध प्रदर्शन

मामले में दिल्ली पुलिस ने 5वीं गिरफ्तारी की है। मध्य प्रदेश के ग्वालियर से यूथ कांग्रेस नेता जीतेंद्र यादव को गिरफ्तार किया। इसके अलावा 2 और सदस्यों को हिरासत में लिया है। सोमवार को पुलिस ने इंडियन यूथ कांग्रेस के दिल्ली अध्यक्ष उदय भानु चिब से भी पूछताछ की है। ग्वालियर से हिरासत में लिए गए दो लोगों ने राजा गुर्जर और अजय कुमार के नाम शामिल हैं। आरोप है कि ये सभी शर्टलैस प्रदर्शन में शामिल थे। वीडियो के जरिए इनकी पहचान की गई है। दिल्ली की तिलक नगर थाना ने यह एक्शन लिया है। सभी को दिल्ली लाया गया है। इस मामले में पुलिस गैर जमानती धाराओं में एफआईआर दर्ज की है। 21 फरवरी को पटियाला कोर्ट ने पहले से गिरफ्तार 4 आरोपियों को 5 दिन की पुलिस रिमांड में भेजा था। दरअसल, 20 फरवरी को इंडियन यूथ कांग्रेस के 11 सदस्यों ने भारत मंडपम में घुसकर एआई समिट के दौरान शर्टलैस होकर पीएम मोदी की फोटो वाली टी-शर्ट लहराई थी। इस दौरान पीएम मोदी कॉम्प्रोमाइज्ड के नारे लगाए थे।दिल्ली पुलिस ने आरोपी और यूथ कांग्रेस के नेता कृष्ण हरि की गाड़ी बरामद की। कार से पीएम मोदी चेहरा छपी टी-शर्ट और पोस्टर भी मिले हैं। कांग्रेस के एआई समिट में हंगामा करने के विरोध में भाजपा ने पूरे देश में विरोध किया था। भाजपा ने दिल्ली, महाराष्ट्र, गुजरात, बिहार, तेलंगाना और जम्मू-कश्मीर में प्रदर्शन किया था। मुंबई के मुलुंड में भाजपा कार्यकर्ताओं ने राहुल गांधी के काफिले को काले झंडे दिखाए थे। 20 फरवरी को दिल्ली स्थित भारत मंडपम में इंडियन यूथ कांग्रेस के कार्यकर्ताओं ने शुक्रवार को एआई समिट 2026 में भारत-अमेरिका ट्रेड डील के खिलाफ प्रदर्शन किया। प्रदर्शन के कई वीडियो भी सामने आए थे। इसमें 10 से ज्यादा कार्यकर्ता हाथ में सफेद रंग की टी-शर्ट लिए हुए थे। टी-शर्ट पर पीएम मोदी और अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की फोटो लगी है। उस पर लिखा है- पीएम इज कॉम्प्रोमाइज्ड। गिरफ्तार लोगों ने बिहार से यूथ कांग्रेस के नेशनल सेक्रेटरी कृष्ण हरि, बिहार में आईवाईसी स्टेट सेक्रेटरी कुंदन यादव, उत्तर प्रदेश में आईवाईसी स्टेट प्रेसिडेंट अजय कुमार और तेलंगाना से नरसिम्हा यादव शामिल हैं।दिल्ली पुलिस में एडिशन कांस्टेबल देवेश कुमार महला ने बताया कि यह घटना दोपहर करीब 12:30 बजे घटी। प्रदर्शनकारियों ने ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन कराया और क्यूआर कोड स्कैन करके समिट हॉल में एंट्री की। उन्होंने ऊपर स्वेटर और जैकेट पहनी हुई थी और अंदर टी-शर्ट। हॉल नंबर 5 के पास उन्होंने अपने स्वेटर और जैकेट उतार दिए और टी-शर्ट लहराते हुए विरोध प्रदर्शन किया। कार्यकर्ताओं पर पुलिस के साथ झड़प करने का भी आरोप है। दिल्ली पुलिस सूत्रों के अनुसार, कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने पहले काले रंग के छाते पर स्टिकर चिपकाकर भारत मंडपम में घुसने की योजना बनाई थी। फिर उन्हें एहसास हुआ कि गेट पर जांच के दौरान काले छाते पकड़े जाएंगे। इसलिए उन्होंने टी-शर्ट पर स्टिकर चिपका दिए। स्टिकर कहां छपवाए गए थे, यह पता लगाने के लिए जांच जारी है।

तारिक रहमान के पीएम बनते ही बांग्लादेशी सेना में बदलाओं शुरू,भारत से रक्षा सलाहकार को वापस बुलाकर प्रमोशन दिया

चीफ ऑफ जनरल स्टाफ भी बदला

ढाका। बांग्लादेश का प्रधानमंत्री बनने के कुछ दिन बाद ही तारिक रहमान ने सेना में बड़े पैमाने पर फेरबदल किया गया है। रविवार

को जारी आदेशों में ऑपरेशनल और इंटेलिजेंस पदों पर नई नियुक्तियां की गईं। भारत में तैनात रक्षा सलाहकार ब्रिगेडियर जनरल एमडी हाफिजुर रहमान को मेजर जनरल पद पर प्रमोट किया गया है। उन्हें वापस बुलाकर 55वीं इन्फैंट्री डिविजन का जनरल ऑफिसर कमांडिंग नियुक्त किया गया है। लेफ्टिनेंट जनरल मुहम्मद मैनूर रहमान को सेना का चीफ ऑफ जनरल स्टाफ बनाया गया है। वे इससे पहले आर्मी ट्रेनिंग एंड डॉक्ट्रिन कमांड के प्रमुख थे। उन्होंने लेफ्टिनेंट जनरल मिजानुर रहमान शमीम की जगह ली है, जिन्हें रिटायरमेंट लीव पर भेज दिया गया था। मेजर जनरल कैसर राशिद चौधरी को डायरेक्टरेट जनरल ऑफ फोर्सेस इंटेलिजेंस का डायरेक्टर नियुक्त किया गया है। वे आर्मी मुख्यालय में ब्रिगेडियर जनरल के पद पर कार्यरत थे। उन्होंने मेजर जनरल मोहम्मद जहांगीर आलम की जगह ली है, जिन्हें फिलहाल विदेश मंत्रालय में राजदूत के रूप में नियुक्त किया गया है। लेफ्टिनेंट जनरल मीर मुशफिकुर रहमान को सशस्त्र बल डिविजन का प्रिंसिपल स्टाफ ऑफिसर बनाया गया है। वे इससे पहले चटगांव स्थित 24वीं इन्फैंट्री डिविजन के जनरल ऑफिसर कमांडिंग थे। मौजूदा पीएसओ लेफ्टिनेंट जनरल एसएम कामरुल हसन को विदेश मंत्रालय में राजदूत के पद पर ट्रांसफर कर दिया गया है।मेजर जनरल जेएम एमदादुल इस्लाम को ईस्ट बंगाल रेजिमेंटल सेंटर का कमांडेंट नियुक्त किया गया है। वहीं मेजर जनरल फिरदौस हसन सलीम को 24वीं इन्फैंट्री डिविजन का जीओसी बनाया गया है।ये बड़ा फेरबदल तारिक रहमान की नई बीएनपी सरकार के लिए सेना पर अपनी मजबूत पकड़ बनाने का पहला बड़ा कदम माना जा रहा है। फरवरी 2024 में छात्र आंदोलन से शेख हसीना की सरकार गिरने के बाद मुहम्मद यूनुस की अंतरिम सरकार बनी थी, जिसने सेना के कई शीर्ष पदों पर अपने करीबी या पुरानी व्यवस्था से जुड़े अधिकारियों को तैनात किया था। अब 12 फरवरी 2026 के चुनाव में बीएनपी की भारी जीत के बाद तारिक रहमान 17 फरवरी को प्रधानमंत्री बने, तो नई सरकार ने जल्दी से इन पदों पर बदलाव किए। इसके पीछे मुख्य वजह यह माना जा रहा है कि पुराने अधिकारियों (जो यूनुस सरकार या हसीना काल से जुड़े थे) को हटाकर बीएनपी के करीबी या नई सरकार वेऽ प्रति वफादार अधिकारियों को महत्वपूर्ण कमांड और खुफिया पद दे रही है, ताकि सेना नई सरकार के खिलाफ कोई असंतुलन पैदा न करे और सेना मजबूत हो सके। सेना के बड़े पदों पर नए अधिकारियों की नियुक्ति से नई सरकार को सेना का साफ समर्थन मिलेगा। इससे सरकार के खिलाफ बगावत या अस्थिरता की संभावना कम हो सकती है, खासकर जब हाल में देश में राजनीतिक तनाव रहा है।जो अधिकारी पिछली सरकारों जैसे मोहम्मद यूनुस या शेख हसीना के करीब माने जाते थे, उन्हें हटाया या दूसरे पदों पर भेजा जा रहा है। इससे नई सरकार के विरोधी माने जाने वाले लोगों का प्रभाव कम होगा। भारत में तैनात रक्षा सलाहकार को वापस बुलाकर नई जिम्मेदारी दी गई है। इससे दिल्ली में बांग्लादेश की मिलिट्री लीडरशिप बदलेगी। आगे चलकर भारत-बांग्लादेश रिश्तों में थोड़ा नया संतुलन देखने को मिल सकता है। नए अधिकारियों के आने से सेना का फोकस राष्ट्रीय सुरक्षा और रक्षा पर ज्यादा हो सकता है। इससे सरकार को अर्थव्यवस्था, कानून-व्यवस्था और विकास जैसे मुद्दों पर काम करने का ज्यादा मौका मिलेगा। कुल मिलाकर, ये फेरबदल नई सरकार की 'पावर कंसोलिडेशन' का हिस्सा है। यानी सत्ता को मजबूत करना और पुरानी व्यवस्था से जुड़े जोखिमों को खत्म करना। एक्सपर्ट्स का मानना है कि इससे तारिक रहमान की सरकार को अगले कुछ महीनों में ज्यादा स्थिरता मिलेगी।

पाकिस्तान का दावा-आत्मघाती हमलों का बदला लिया

अफगानिस्तान पर एयरस्ट्राइक कर 80 लड़ाके मार डाले,टीटीपी-आईएस को टारगेट किया

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के उप गृह मंत्री तलाल चौधरी ने सोमवार को बताया कि

अफगानिस्तान के सीमावर्ती इलाकों में तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान के ठिकानों पर कार्रवाई की गई। उनके मुताबिक कम से कम 70 लड़ाके मारे गए। बाद में पाकिस्तानी मीडिया डॉन ने दावा किया कि मरने वालों की संख्या बढ़कर 80 हो गई है। हालांकि सरकार ने इस दावे के समर्थन में कोई सबूत सार्वजनिक नहीं किया। दरअसल, पाकिस्तान की सेना ने रविवार तड़केऽ अफगानिस्तान के सीमावर्ती इलाकों में एयरस्ट्राइक की। सेना ने कहा कि टीटीपी और इस्लामिक स्टेट से जुड़े 7 कैंपों को निशाना बनाया गया। पाकिस्तान सरकार ने इसे हालिया आत्मघाती हमलों के बाद जवाबी अटैक बताया। पाकिस्तान ने कहा, 'हमारे पास पुख्ता सबूत हैं कि हमले अफगानिस्तान की जमीन से चल रहे नेटवर्क ने कराए।'वहीं अफगानिस्तान सरकार ने कहा कि हमले में मासूम नागरिकों को निशाना बनाया गया। मीडिया चैनल टोलो न्यूज के मुताबिक हमले में नांगरहार के एक घर को निशाना बनाया, जिससे एक ही परिवार के 23 लोग मलबे के नीचे दब गए। अमेरिकी मानवाधिकार संगठन इंटरनेशनल ह्यूमन राइट्स फाउंडेशन के मुताबिक इसमें 16 लोगों की मौत हो गई। इसमें महिलाएं और बच्चे भी शामिल हैं। पाकिस्तान ने अंतरराष्ट्रीय समुदाय

से अपील की है कि वह 2020 में दोहा में अमेरिका के साथ हुए समझौते के तहत तालिबान पर दबाव डाले, ताकि अफगान जमीन का इस्तेमाल दूसरे देशों के खिलाफ न हो। 2020 का दोहा समझौता जिसे अफगानिस्तान में शांति प्रयास भी कहा जाता है। यह अमेरिका और तालिबान के बीच 29 फरवरी 2020 को कतर की राजधानी दोहा में हस्ताक्षरित हुआ था। यह समझौता अफगानिस्तान में 2001 से चल रहे युद्ध को समाप्त करने और अमेरिकी बलों की वापसी का रास्ता बनाने के लिए किया गया था।**आगे की खबर पजे संख्या 07 पर..**

सोना रु3 हजार महंगा, रु1.58 लाख पर पहुंचाःचांदी रु15 हजार महंगी होकर रु2.65 लाख किलो हुई, इस साल 35 हजार बढ़ चुकी

नयी दिल्ली। सोने-चांदी के दाम में आज यानी 23 फरवरी को तेजी है। इंडिया बुलियन एंड ज्वेलर्स एसोसिएशन के अनुसार, 10 ग्राम 24 कैरेट सोने का भाव 3,362 रुपए बढ़कर 1,58,428 रुपए पहुंच गया है। इससे पहले यह 1,55,066 रुपए पर था। वहीं, एक किलो चांदी की कीमत 15,236 रुपए बढ़कर 2,65,550 रुपए पर आ गई है। कल इसकी कीमत 2,50,314 रुपए किलो थी। एक्सपर्ट्स के अनुसार आने वाले दिनों में सोने-चांदी कीमतें और बढ़ सकती हैं। इस साल सोने-चांदी की कीमत में लगातार उतार-चढ़ाव देखने को मिल रहा है। सोना 2026 में अब तक 25,000 रुपए और चांदी 35,000 रुपए महंगी हो चुकी है। इस दौरान 29 जनवरी को सोने ने 1.76 लाख रुपए और चांदी ने 3.86 लाख रुपए का ऑल टाइम हाई भी बनाया था। 2025 में सोना रु57 हजार (75फीसदी) बढ़ा है। 31 दिसंबर 2024 को 10 ग्राम 24 कैरेट सोना रु76 हजार का था, जो 31 दिसंबर 2025 को रु1.33 लाख रुपए हो गया। चांदी इस दौरान रु1.44 लाख (167फीसदी) बढ़ी। 31 दिसंबर 2024 को एक किलो चांदी रु86 हजार की थी, जो साल के आखिरी दिन रु2.30 लाख प्रति किलो हो गई। इन्वेस्टमेंट बैंकिंग कंपनी यूबीएस के अनुसार सोने की मांग में तेजी बनी हुई है। 2025 में दुनियाभर के केंद्रीय बैंकों ने 863 टन सोना खरीदा था। अब अनुमान है कि 2026 में यह खरीदारी बढ़कर 950 टन तक पहुंच सकती है। इसके साथ ही, गोल्ड ईटीएफ में निवेश भी

बढ़कर 825 टन होने की उम्मीद है।यूबीएस को पूरा भरोसा है कि 2026 में सोने की कीमतें और छू सकता है। अगर रुपए के हिसाब से बात करें तो सोने का भाव 1.80 लाख रुपए प्रति 10 ग्राम तक जा सकता है। सोना खरीदते समय इन 2 बातों का रखें ध्यान- 1. सर्टिफाइड गोल्ड ही खरीदें: हमेशा ब्यूरो ऑफ इंडियन स्टैंडर्ड का हॉलमार्क लगा हुआ सर्टिफाइड गोल्ड ही खरीदें। ये नंबर अल्फान्यूमेरिक यानी कुछ इस तरह से हो सकता है-"4524। हॉलमार्किंग से पता चलता है कि सोना कितने कैरेट का है। 2. कीमत क्रॉस चेक करें: सोने का सही वजन और खरीदने के दिन उसकी कीमत कई सोर्सेज (जैसे इंडिया बुलियन एंड ज्वेलर्स एसोसिएशन की वेबसाइट) से क्रॉस चेक करें। सोने का भाव 24 कैरेट, 22 कैरेट और 18 कैरेट के हिसाब से अलग-अलग होता है।

स्कूली बच्ची पर चढ़ा ट्रक, सिर शरीर से हुआ अलग,मामा के साथ बाइक से जा रही थी

प्रयागराज। स्कूल जा रही 10 साल की बच्ची के ऊपर से ट्रक गुजर गया। उसका सिर धड़ से अलग हो गया। हादसा इतना भीषण था कि सिर सड़क पर ही चिपक गया। उसकी मौके पर मौत हो गई। बच्ची के कंधे पर स्कूली बैग टंगा रहा। सोमवार सुबह बच्ची मामा और भाई के साथ बाइक से स्कूल जा रही थी, तभी सामने से रॉन्ग साइड में आ रहे बाइक सवार ने टक्कर मार दी। टक्कर के बाद बच्ची सड़क की ओर गिर गई।जबकि मामा और छोटा भाई दूसरी ओर गिर गए। तभी पीछे से आ रहे ट्रक के पहिए के नीचे बच्ची आ गई और सिर पूरी तरह से सड़क में चिपक गया। हादसे की दिल दहला देने वाली तस्वीर सामने आई है। इसमें दिख रहा कि मामा बच्ची के शव के बगल में बैठा हुआ है। सड़क पर बच्ची

का खून बिखरा है। मामा रोते हुए घरवालों को हादसे की जानकारी दे रहा है। हादसा नैनी सेंट्रल जेल वेऽ सामने हुआ। यहां से बच्ची का स्कूल सिर्फ 500 मीटर दूर है। हादसे के बाद चालक ट्रक लेकर भाग गया। इसकी जानकारी मिलते ही बच्ची का परिवार मौके पर पहुंच गया। परिवार वाले शव देखकर चीखने लगे। इसके बाद शव सड़क पर रखकर बैठ गए। हादसे वेऽ बाद प्रयागराज-मिर्जापुर हाईवे पर करीब एक किलोमीटर लंबा जाम लग गया। हालांकि, पुलिस ने बाद में परिजनों को समझाकर जाम खुलवाया।बच्ची फलीशा (10) महेवा की रहने वाली थी। वह अपने भाई वेऽ साथ बेथनी कॉन्वेंट स्कूल में पढ़ती थी। फलीशा के पिता का निधन तीन साल पहले हो गया था। मां रोजी प्राइवेट स्कूल में पढ़ाती हैं। वह बच्चों के साथ भाई के घर पर ही रहती हैं। पोस्टमार्टम के बाद शाम को बच्ची का शव शव घर पहुंचा तो कोहराम मच गया। बच्ची की मां शव देखकर बेसुध हो गईं। परिजन ने किसी तरह उन्हें संभाला। कुछ देर बाद नमाज-ए-जनाजा के लिए शव मस्जिद ले जाया गया और कब्रिस्तान में सुपुर्द-ए-खाक कर दिया गया। मामा वलीउल्लाह ने बताया- फलीशा की मां रहमतुलनिशा महेवा वेऽ ही आरएनटी पब्लिक स्कूल में टीचर हैं। रहमतुलनिशा को स्कूल से 6 हजार सैलरी मिलती है। फलीशा उनकी इकलौती बेटी थी। बेटी को अच्छी एजुवेऽशन वेऽ लिए रहमतुलनिशा उसे अच्छे स्कूल में पढ़ा रही थी। वही जीने का सहारा थी। उसवेऽ बर्थडे की तैयारी भी चल रही थी। बर्थ-डे 2 दिन बाद 25 फरवरी को था।हादसे के बाद महेवा पूरब पट्टी स्थित बच्ची वेऽ घर में कोहराम मचा हुआ है। हादसे की खबर मिलने पर मां बेसुध हो गईं। बीच-बीच में होश में आने पर बार-बार वह अपनी बच्ची को पुकार रही हैं। मां और अन्य परिजनों का भी रो-रो कर बुरा हाल है।

स्कूल बस-ट्रक की टक्कर,चालक मोबाइल चार्ज करते समय नियंत्रण खो बैठा

प्रयागराज। पुलिस कमिश्नरेट प्रयागराज के गंगानगर जोन स्थित थरवई थाना क्षेत्र में सोमवार सुबह स्कूली बच्चों से भरी बस और ट्रक के बीच जोरदार टक्कर हो गई। हादसा बेरुई गांव के पास फाफामऊ-सहसों फोरलेन हाईवे पर हुआ। टक्कर इतनी भीषण थी कि बस का अगला हिस्सा बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। हादसे के समय बस में करीब 51 छात्र सवार थे, जो यूपी बोर्ड हाईस्कूल की अंग्रेजी विषय की परीक्षा देने जा रहे थे। सभी छात्र शिव सेवा इंटर कॉलेज के बताए जा रहे हैं। उनका परीक्षा केंद्र बाबू जे आर डी पाल इंटर कॉलेज में निर्धारित था। हादसे में पांच छात्र गंभीर रूप से घायल हो गए, जबकि दर्जनों छात्रों को हल्की चोटें आई हैं। तीन छात्रों के पैर में फ्रैक्चर बताया जा रहा है। दो अन्य छात्रों को उपचार के लिए स्थानीय

अस्पताल में भर्ती कराया गया है। बस चालक भी गंभीर रूप से घायल हुआ है। सभी घायलों को बहरिया सीएचसी और एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां उनका इलाज जारी है।मौके पर पहुंचे अभिभावकों का कहना है कि बस चालक ट्रक को ओवरटेक करने की कोशिश कर रहा था, इसी दौरान यह हादसा हुआ। वहीं बस में सवार घायल छात्र सोनू पटेल और शुभम यादव के अनुसार, चालक मोबाइल चार्ज लगाने के दौरान लापरवाही बरत रहा था, जिससे बस का नियंत्रण बिगड़ गया और वह ट्रक से जा टकराई। घटना के बाद ट्रक चालक वाहन समेत मौके से फरार हो गया। सूचना मिलते ही थरवई थाना पुलिस मौके पर पहुंची और राहत-बचाव कार्य शुरू कराया। पुलिस ने अज्ञात ट्रक चालक के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है और उसकी तलाश की जा रही है। आसपास के सीसीटीवी फुटेज भी खंगाले जा रहे हैं। पुलिस का कहना है कि मामले की जांच की जा रही है और दोषी के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

इंटर छात्र का सुसाइड का कारण-मैथ से डर लग रहा-एग्जाम से पहले दोस्त को किआ था कॉल की

प्रयागराज। एग्जाम से ठीक पहले इंटर के छात्र ने सुसाइड कर लिया। उसने अपने दोस्त को आखिरी कॉल की। उससे कहा- मैथ से बहुत डर लग रहा। मैं समझ नहीं पा रहा कि कैसे पेपर दे पाऊंगा। इतना कहने के बाद वह अपने रूम में गया। वहां फंदे से लटक कर जान दे दी। छात्र दसवीं में अपने स्कूल का टॉपर रहा था। परिवार वालों और स्कूल के मुताबिक छात्र पढ़ने में बहुत होनहार था। घटना सोमवार सुबग धूमनगंज थानाक्षेत्र के मुडेरा इलाके की है।मुंडेरा में जय सिंह अपनी पत्नी और दो बेटे समीर (17) और प्रिंस (10) के साथ रहते हैं। समीर कक्षा 12 में पढ़ता था। जबकि, प्रिंस कक्षा 5 का छात्र है। समीर के पेपर चल रहे थे। वह मुन्नी देवी इंटर कॉलेज में पढ़ता था। सोमवार को उसका मैथ का पेपर था। चचेरे भाई सत्यम ने बताया- सोमवार दोपहर 2:30 बजे से समीर यादव (17) का मैथ का पेपर था। वह पिछले कुछ दिनों से मैथ के एग्जाम की तैयारी को लेकर तनाव में था। रविवार रात भी वह देर तक पढ़ाई करता रहा।सोमवार सुबह करीब 7 बजे समीर की मां उसे जगाने के लिए पहुंचीं। कमरे के बाहर से कई बार आवाज लगाने के बाद भी अंदर से कोई रेस्पॉन्स नहीं मिला। शक होने पर परिजनों ने दरवाजा खोलने की कोशिश की। जब दरवाजा खोला गया तो अंदर का नजारा देखकर सभी सन्न रह गए। समीर कमरे के अंदर फंदे से लटका हुआ था। परिजनों ने तुरंत उसे नीचे उतारा और अस्पताल ले जाने की कोशिश की। लेकिन तब तक उसकी मौत हो चुकी थी। सूचना मिलते ही धूमनगंज पुलिस मौके पर पहुंच गई। चचेरे भाई सत्यम के मुताबिक, सुसाइड से ठीक पहले समीर ने अपने एक दोस्त को फोन किया था। उसने कहा था कि उसे मैथ समझ में नहीं आ रही है। परीक्षा को लेकर बहुत डर लग रहा है। दोस्त ने समीर को समझाने की कोशिश भी की। लेकिन कुछ देर बाद ही उसने फोन काट दिया। घटना के बाद जब समीर के फोन की कॉल हिस्ट्री चेक की गई तो उसमें अंतिम बार दोस्त का नंबर डायल मिला। जब दोस्त से बात की गई तो उसने परिवार वालों को ये जानकारी दी। समीर के पिता जय सिंह मुंडेरा मंडी में किराने की छोटी दुकान चलाकर परिवार चलाते हैं। वह दो भाइयों में बड़ा था। छोटा भाई प्रिंस पांचवीं कक्षा में पढ़ता है। बेटे की मौत के बाद से ही माता-पिता का रो-रोकर बुरा हाल है। परिजनों ने बताया कि समीर पढ़ाई में बेहद गंभीर और अनुशासित था। 10वीं कक्षा में वह अपने स्कूल का टॉपर रहा था। अन्य सभी विषयों में उसकी पकड़ मजबूत थी, लेकिन गणित को लेकर वह अक्सर दबाव महसूस करता था। वह मुंडेरा स्थित मुन्नी देवी इंटर कॉलेज में इंटर का छात्र था और भविष्य में प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करना चाहता था धूमनगंज थाना प्रभारी राजेश उपाध्याय ने बताया- छात्र ने सुसाइड किया है। शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया गया है। परिवार की ओर से कोई शिकायत नहीं मिली है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। छात्र के मोबाइल की कॉल डिटेल के अलावा बाकी एंगल पर जांच की जा रही है।

जिलाधिकारी ने कर-करेत्तर, राजस्व वसूली एवं राजस्व वादों की समीक्षा बैठक कर, दिए निर्देश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जिलाधिकारी हर्षिता माथुर की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में कर-करेत्तर, राजस्व वसूली एवं राजस्व वादों की मासिक समीक्षा बैठक सम्पन्न हुई। जिलाधिकारी ने विभागवार समीक्षा करते हुए निर्देश दिये कि सभी सम्बन्धित विभाग, निर्धारित लक्ष्य के सापेक्ष शत प्रतिशत लक्ष्य की पूर्ति सुनिश्चित करायें। परिवहन, आबकारी, विद्युत, व्यापार कर, खनन, स्टाम्प, नगर निकाय सहित अन्य विभागों के राजस्व वसूली की समीक्षा कर कम वसूली वाले विभागों को प्रगति में सुधार लाने के निर्देश दिये। जिलाधिकारी ने लम्बित राजस्व वादों की समीक्षा कर निर्देश दिये कि लम्बित वादों की समीक्षा कर अधिक से अधिक वादों का निस्तारण कराया जाये। बैठक में अपर जिलाधिकारी (न्यायिक) विशाल कुमार यादव, अपर जिलाधिकारी (वित्त एवं राजस्व) अमृता सिंह, नगर मजिस्ट्रेट राम अवतार, ज्वाइंट मजिस्ट्रेट प्रफुल्ल शर्मा, सहित समस्त उप जिलाधिकारीगण, तहसीलदार, नायब तहसीलदार व सम्बन्धित अधिकारी उपस्थित रहे।

मातृ एनीमिया प्रबंधन को मजबूत करने की पहल

चिकित्सा अधिकारियों एवं स्टाफ नर्सों का प्रशिक्षण संपन्न

DG training mam inaugurating FCM training today in Raebareli District,,

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। मातृ मृत्यु दर में कमी लाने तथा गर्भवती एवं धात्री में एनीमिया की प्रभावी रोकथाम एवं उपचार सुनिश्चित करने के उद्देश्य से चिकित्सा अधिकारियों (Medical Officers) एवं स्टाफ नर्सों का एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम सोमवार को जनपद के एक होटल में उत्तर प्रदेश तकनीकी सहयोग इकाई (यूपीटीएसयू) के सहयोग से आयोजित किया गया। कार्यक्रम का विषय 'मातृ एनीमिया का समुचित प्रबंधन एवं एफआरयू स्तर पर Ferric CaRoxy Maltose (FCM) की शुरुआत' रहा। कार्यक्रम का उद्घाटन महानिदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. रंजना खरे द्वारा किया गया। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि गर्भावस्था के दौरान एनीमिया मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य के लिए गंभीर चुनौती है। एफआरयू स्तर पर Ferric CaRoxymaltose (FCM) की उपलब्धता से मध्यम एवं गंभीर एनीमिया से पीड़ित गर्भवती महिलाओं को शीघ्र एवं प्रभावी उपचार मिल सकेगा, जिससे मातृ जटिलताओं एवं मृत्यु दर में कमी आएगी।प्रशिक्षक डॉ. अंजू अग्रवाल, विभागाध्यक्ष प्रसूति एवं स्त्री रोग, किंग जार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय (केजीएमयू) ने बताया कि एनीमिया के कई कारण होते हैं–अर्जित एनीमिया जैसे शरीर में आयरन की कमी, विटामिन 12 एवं फोलेट की कमी, तथा कुछ शारीरिक समस्याएं। वहीं वंशानुगत कारणों में सिकल सेल एनीमिया और थैलेसीमिया शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हुकवर्म संक्रमण भी एनीमिया का एक प्रमुख कारण है।उन्होंने बताया कि गर्भवती महिलाओं में एनीमिया का सबसे सामान्य कारण आयरन एवं आवश्यक सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी होती है। आयरन की गोलियां लेने से कब्ज, उल्टी या असहजता होने के कारण कई महिलाएं आयरन फोलिक एसिड का सेवन छोड़ देती हैं, जिससे एनीमिया बढ़ जाता है। ऐसी स्थिति में इंजेक्टेबल एफसीएम एक सुरक्षित एवं प्रभावी विकल्प है। इस विषय पर केजीएमयू में किए गए शोधों में इसके सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं, जिसके आधार पर सरकार ने इसे लागू करने का निर्णय लिया हैऔर पायलट के तौर पर सात जिलों में शुरू हो रहा है । प्रशिक्षण में एनीमिया की उन्होंने कहा कि महिला को सिर्फ एक डोज लगेगी जिससे कि उसे अस्पताल के बार बार चक्कर नहीं लगाने पड़ेंगे। एफसीएम की पहचान, वर्गीकरण, उपचार प्रोटोकॉल, सुरक्षित उपयोग, दुष्प्रभाव प्रबंधन तथा केस आधारित चर्चाओं पर विस्तृत जानकारी दी गई। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. नवीन चंद्रा ने बताया कि एनीमिया प्रबंधन की यह पहल निश्चित रूप से सकारात्मक परिणाम देगी। यह मातृ स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जिससे जनपद में सुरक्षित मातृत्व को बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने बताया कि जनपद में कुल पाँच फर्स्ट रेफरल यूनिट हैं। पहले चरण में जिला महिला अस्पताल सहित सभी पाँच एफआरयू–सलोन, बछरावां, डलमऊ, लालगंज एवं ऊँचाहार से तीन-तीन स्टाफ को प्रशिक्षित किया गया है। भविष्य में अन्य सीएचसी को भी प्रशिक्षण दिया जाएगा। कार्यक्रम के दौरान 10 एनीमिक गर्भवती महिलाओं को 'पोषण पोटली' भी वितरित की गई, जिसमें आयरन युक्त खाद्य सामग्री एवं पोषण संबंधी परामर्श शामिल था। इसका उद्देश्य गर्भवती महिलाओं के पोषण स्तर में सुधार लाना एवं एनीमिया की रोकथाम को मजबूत करना है। इस अवसर पर उप मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ.शरद वुशवाहा, जिला स्वास्थ्य शिक्षा एवं सूचना अधिकारी डी.एस.अस्थाना, डॉ. शिवानी शुक्ला, डा साक्षी वर्मा, हेमंत शुक्ला, यासीन अहमद जिला मातृ स्वास्थ्य परामर्शदाता यूपीटीएसयू टीम एवं अन्य स्वास्थ्य अधिकारी मौजूद रहे।

मा0 विधायक सलोन द्वारा मृतक के आश्रितों को उपलब्ध कराई गई आर्थिक सहायता

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। मा0 विधायक सलोन अशोक कुमार ने आज मृतक मोहित पटेल के आश्रितों को सरकार की विभिन्न योजनाओं के तहत मिलने वाली धनराशि और अन्य लाभों के प्रमाण पत्र प्रदान किये। उल्लेखनीय है कि मोहित पटेल पुत्र गेंदालाल निवासी ग्राम गोसाई का पुरवा मजरे ममुनी परगना व तहसील सलोन जनपद रायबरेली की मृत्यु हो गई थी। मृत्क अपने परिवार में एक मात्र कमाऊ सदस्य था। इनके परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण मृतक के परिवार को शासन द्वारा मुख्यमंत्री विवेकाधीन कोष के तहत 5 लाख रुपये की सहायता धनराशि, आवासीय पट्टा (भूमि 125 वर्ग मीटर), निराश्रित महिला पेंशन योजना के तहत (प्रतिमाह धनराशि रु0-1000), राष्ट्रीय पारिवारिक लाभ योजना के तहत (एकमुश्त आर्थिक सहायता धनराशि रु0-30000), मुख्यमंत्री आवास योजना के लाभ का चेक व प्रमाण पत्र उपलब्ध कराया गया इसके साथ ही मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना के तहत (रु0-2500/प्रतिमाह) का लाभ दिलाए जाने हेतु कार्यवाही की जा रही है।इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी (वि0रा0) अमृता सिंह, उप जिलाधिकारी सलोन चन्द्र प्रकाश गौतम, क्षेत्राधिकारी सलोन यदुवेन्द्र बहादुर पाल आदि उपस्थित रहें।

लखनऊ विश्वविद्यालय में नमाज को लेकर छात्र आमने-सामने

लखनऊ। लखनऊ यूनिवर्सिटी कैंपस में नमाज पढ़ने का विवाद बढ़ गया है। रविवार को जिस जगह मुस्लिम छात्रों ने नमाज पढ़ी और इफ्तार किया, सोमवार को उसी जगह हिंदू छात्रों ने जय भवानी, जय श्रीराम के जयकारे लगाए। फिलहाल, कैंपस के अंदर माहौल तनावपूर्ण है। इसे देखते हुए वहां फोर्स लगाई गई है। कांग्रेस से राज्यसभा सांसद इमरान प्रतापगढ़ी ने फेसबुक पर पोस्ट किया। लिखा- विश्वविद्यालय प्रशासन कैंपस को नफरत की प्रयोगशाला न बनाए। उस जगह को बच्चों के लिए खोल दिया जाए। दरअसल, कैंपस के अंदर लाल बारादरी बिल्डिंग है, जिसके अंदर मस्जिद होने का दावा किया जा रहा है। हालांकि, कई छात्रों का यह भी कहना है कि उसके अंदर एक छोटा मंदिर भी है। बिल्डिंग काफी जर्जर हो गई है, इसलिए विश्वविद्यालय प्रशासन उसका रेनोवेशन करा रहा है। रविवार को जैसे ही खोदाई शुरू हुई, बड़ी संख्या में एनएसयूआई के स्टूडेंट मौके पर पहुंच गए। छात्रों ने निर्माण कार्य का विरोध करते हुए हंगामा शुरू कर दिया। कहा- लाल बारादरी एएसआई द्वारा संरक्षित स्थल है, इसलिए बिना उसकी अनुमति के कोई कंस्ट्रक्शन नहीं किया जा सकता।इसके बाद कुछ छात्रों ने वहां नमाज पढ़ी। शाम को वहीं पर इफ्तार भी किया। नमाज पढ़ने वाले छात्रों को मानव श्रृंखला बनाकर हिंदू छात्रों ने घेर लिया। जब वे नमाज पढ़कर उठे, तब

यह मानव श्रृंखला हटी।एनएसयूआई से जुड़े छात्र विशाल सिंह ने कहा कि आज प्रॉक्टोरियल बोर्ड आकर मिला है। उनसे बात होने के बाद उनके आश्वासन के मुताबिक काम होने का इंतजार करेंगे। नमाज वाली जगह फिर से खोली जाए। हमारी बात नहीं मानी जाएगी तो सुनियोजित तरीके से प्रदर्शन करेंगे।एबीवीपी ने पुलिस और एलयू प्रशासन से उन छात्रों की गिरफ्तारी मांगी है जो कल से प्रदर्शन कर रहे हैं। एबीवीपी से जुड़े छात्र जतिन शुक्ला ने एसीपी अंकित कुमार को ज्ञापन दिया। ज्ञापन देने के बाद राइट विंग समर्थित छात्र गुट मौके से निकला। इनकी मांग थी कि रविवार से आंदोलन कर रहे संयुक्त मोर्चा के छात्रों के खिलाफ मुकदमा दर्ज हो और उन पर कार्रवाई हो। मौके पर चीफ प्रॉक्टर राकेश द्विवेदी और लखनऊ पुलिस की टीम एसीपी की तरफ से एसीपी अंकित कुमार से एबीवीपी के छात्र बात कर रहे हैं। उनकी मांग है कि कल कैंपस में नमाज पढ़ने और उत्पात मचाने वाले छात्र गिरफ्तार किए जाएं।एबीवीपी के छात्र लखनऊ विश्वविद्यालय कैंपस की पुलिस चौकी पहुंच गए। उन्होंने पुलिस से कहा- कैंपस के अंदर की धरोहर पर इस तरह कब्जा नहीं होना चाहिए। इस बातचीत के दौरान नोकझोंक भी हुई। पुलिस के सामने ही कुछ छात्रों ने पुलिस के खिलाफ नारेबाजी की।एबीवीपी से जुड़े छात्र जतिन शुक्ला ने कहा- यह बिल्डिंग एएसआई (आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया) को फॉरवर्ड की जानी है। विश्वविद्यालय प्रशासन इसकी फेंसिंग करा रहा था। अब इस बिल्डिंग को कुछ लोग मस्जिद होने का दावा करने लगे। मस्जिद होती तो क्या यहां इमाम न होते, यहां मस्जिद न होती? यह बिल्डिंग धरोहर है। आज यहां आपने नमाज पढ़ी, कल कोई आएगा शतचंडी यज्ञ कराकर भंडारा कराएगा। कोई गुरबानी पढ़ेगा तो कोई मोमबत्ती जला देगा। इस तरह से तो यहां का माहौल ही बदल जाएगा। यह शिक्षा का मंदिर है, इसे शिक्षा का मंदिर रहने दीजिए। यदि ये मस्जिद हैं तो कहा हैं.. यहां के इमाम और मौलाना। अजान के लाउड स्पीकर कहा हैं। हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर पवन अग्रवाल सर ने जब वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ पदभार ग्रहण किया तब लोगों के पेट में भयंकर दर्द उफन पड़ा था। आज वही विरोध करने वाले कैंपस के अंदर नमाज अदा करवा रहे हैं, इफ्तार पार्टी दे रहे हैं।

वाटरशेड महोत्सव में ग्रामीणों को जल एवं पर्यावरण संरक्षण हेतु किया गया जागरूक

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। विकासखंड सरेनी में प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना वाटरशेड 2.0 के अंतर्गत आयोजित वाटरशेड महोत्सव में जल का मानव जीवन में महत्व एवं परियोजना के परिणाम परक कार्यों उसके परिणाम तथा लाभों इत्यादि के बारे में ग्रामीणों में जागरूकता एवं सहभागिता को बढ़ाने के लिए भारत सरकार के निर्देश के क्रम में विकास खंड सरेनी के माइक्रो वाटरशेड कोड मुरारमऊ के ग्राम पंचायत रसूलपुर में वाटरशेड महोत्सव का आयोजन भूमि संरक्षण विभाग रायबरेली के द्वारा सोमवार को कराया गया। वाटरशेड महोत्सव में मुख्य अतिथि के रूप में विकासखंड सरेनी के ब्लॉक प्रमुख की प्रतिनिधि डॉक्टर अनिल सिंह के द्वारा औपचारिक शुरुआत किया गया। जिसमें श्रमदान, वृक्षारोपण, स्कूली बच्चों के साथ सुबह प्रभातफेरी निकालकर जल, जंगल, जमीन बचाने का सन्देश घर-घर पहुँचाया गया। इसके साथ ही मोटर साइकिल रैली एवं स्वयं सहायत समूह कि महिलाए व अन्य ग्रामीण महिलओं द्वारा वाटरशेड यात्रा के उद्देश्य को सफल बनाने के लिए कलश यात्रा निकाली गयी। इसके साथ-साथ रसूलपुर बाजार में वाटरशेड महोत्सव गोष्ठी की गई जिसमें भूमि संरक्षण अधिकारी जगदीश प्रसाद द्वारा वाटरशेड 2.0 परियोजना में जल के महत्व को समझाते हुए बताया गया कि पानी के एक भी बूंद को व्यर्थ न जाने दें। तथा ग्रामीणों को यह भी बताया गया कि फसलों उत्पादन में वृक्षक कैसे परियोजना का लाभ प्राप्त कर सकते हैं। जिला कृषि अधिकारी अखिलेश पाण्डेय द्वारा किसानों को फसलों से अच्छा उत्पादन प्राप्त करने के लिए सम सामयिक जानकारी देते हुए उर्वरक को कैसे कम प्रयोग करना है इसके बारे में बताया गया। और अंत में मुख्य अतिथि डॉ अनिल सिंह द्वारा जल संरक्षण की शपथ दिलाई और बताया कि सभी लोग धरती माता की रक्षा, सुरक्षा करके शुद्ध हवा, शुद्ध पानी एवं शुद्ध भोजन प्राप्त कर अपना जीवन सम्पन्न और खुशहाल बनाये। महोत्सव के अवसर पर ग्राम प्रधान देवपुर श्री विष्णु प्रताप सिंह, प्रधान समोदा श्री राजीव त्रिवेदी,ग्राम प्रधान रसूलपुर श्री सुरेश सिंह, ग्राम प्रधान काजी खेड़ा श्री रामबरन सिंह,ग्राम प्रधान राम खेड़ा शिवमोहन, ग्राम प्रधान सातवा खेड़ा कृष्ण कुमार साहू, बीडीसी रसूलपुर शुभम शर्मा, बीडीसी गोविंदपुर संतोष कुमार तथा भूमि संरक्षण विभाग के वरिष्ठ तकनीकी सहायक प्रशांत कुमार उपाध्याय, जेई विनोद कुमार एवं शिवम सोनी, ड्राफ्टमैन घनश्याम, इंस्पेक्टर वीरेंद्र प्रताप सिंह, भूपेंद्र सिंह, संजय कुमार, आशीष यादव तथा शिवेंद्र पटेल एवं शिवकुमार इत्यादि लोगों ने प्रतिभा एवं सहयोग किया।

मा0 विधायक सदर द्वारा आयोजित सरस मेले में महिला समूह की महिलाओं को पुरस्कार व प्रमाण पत्र देकर किया सम्मानित

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जनपद रायबरेली में राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन की ओर से 03 दिवसीय सरस मेले का आयोजन किया जा रहा है। द्वितीय दिवस के अवसर पर मुख्य अतिथि सदर विधायक मा0 अदिति सिंह द्वारा सरस मेला में प्रतिभाग करने वाले समस्त स्टॉलों का अवलोकन किया गया। समूह द्वारा उत्पादित किये जा रहें उत्पादों को उच्च स्तर की मार्केटिंग व्यवस्था सुदृढ़ करने हेतु उत्पादों की खरीदारी कर समूह की महिलाओं को प्रोत्साहित किया गया। इस अवसर पर जनपद में संचालित समस्त प्रेरणा कैण्टीन एवं अन्य स्वंय सहायता समूह की महिलाओं द्वारा व्यंजन प्रतियोगिता में प्रतिभाग किया गया, जिसमें प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरूस्कार पाने वाली महिलाओं को प्रमाण-पत्र एवं मा0 विधायक द्वारा 5000 की धनराशि देकर पुरुस्कृत किया गया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मेशन के समूहों द्वारा मल्टीग्रेन आटा, आलू चिप्स पापड, पापकार्न, झाड़ू, टॉयलेट क्लीनर, फ्लोर क्लीनर, कम्पोस्ट खाद्य आदि उत्पादों के स्टॉल, वन विभाग, बेसिक शिक्षा विभाग, आरसेटी, बाल विकास पुष्टाहार, महिला कल्याण विभाग, कृषि विभाग सहित अन्य विभागों के स्टॉल लगाये गयें। मेले में उत्पादों की बिक्री से महिलाओं में विशेष उत्साह रहा। इस मौके पर जिला विकास अधिकारी अरूण कुमार, उपायुक्त (स्वतः रोजगार) सविता सिंह, खण्ड विकास अधिकारी अमावां संदीप कुमार, खण्ड विकास अधिकारी महराजगंज वर्षा सिंह, जिला पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी मोहन त्रिपाठी सहित जिला पंचायत सदस्य राघवेन्द्र प्रताप सिंह, रामश्री एवं समस्त जिला मिशन प्रबधंक, ब्लॉक मिशन प्रबंधक सहित 500 से अधिक समूह की महिलायें उपस्थित रहीं।

राजकीय सम्प्रेक्षण गृह, वन स्टाप सेन्टर व बालिका आश्रय गृह का किया गया निरीक्षण

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। मा0 अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण/जनपद न्यायाधीश, रायबरेली अमित पाल सिंह के दिशा-निर्देशन में सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, रायबरेली अमोद कंठ द्वारा राजकीय सम्प्रेक्षण गृह, वन स्टाप सेन्टर व बालिका आश्रय गृह का निरीक्षण किया गया। सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, रायबरेली द्वारा वन स्टाप सेन्टर, रायबरेली के सम्बन्ध में उपस्थित काउन्सलर श्रद्धा सिंह से जानकारी ली गयी। काउन्सलर द्वारा वन स्टाप सेन्टर में महिलाओं के लिए उपलब्ध सुविधाओं से सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण को अवगत कराया गया।

सचिव द्वारा निर्देशित किया गया कि यदि किसी प्रकार की समस्या के सम्बन्ध में प्रार्थनापत्र प्राप्त हो तो अविलम्ब उसे कार्यालय जिला विधिक सेवा प्राधिकरण प्रेषित करें।

सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, रायबरेली द्वारा राजकीय सम्प्रेक्षण गृह, वन स्टाप सेन्टर व बालिका आश्रय गृह का निरीक्षण के दौरान प्रबन्धक अरुण मिश्रा से आवासित बालिकाओं के सम्बन्ध में जानकारी ली गयी।

बालिका आश्रय गृह के निरीक्षण के दौरान सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा नवांगतुक बालिकाओं को विधिक अधिकार, चिकित्सकीय, मानसिक, दैनिक आवश्यकताओं की वस्तुओं को नियमानुसार उपलब्ध कराये जाने की सलाह दी गयी।

फोर्टिस नोएडा के डॉक्टरों ने 18-माह के शिशु का जीवन बचाया

मूंगफली का सेवन करने की वजह से यह बच्चा कार्डियाक अरेस्ट और रेस्पिरेट्री फेलियर का शिकार हुआ था

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। फोर्टिस नोएडा

के डॉक्टरों ने एक असाधारण जीवन-रक्षक क्लीनिकल हस्तक्षेप कर मेरठ के एक 18-वर्षीय बच्चे को नाजुक कंडीशन से निकालकर उसे नया जीवनदान दिया है। इस बच्चे ने दुर्घटनावश मूंगफली निगल ली थी जिसकी वजह से उसकी हालत बेहद गंभीर हो गई थी, और तब उपचार के लिए उसे अस्पताल लाया गया। डॉ मयंक सक्सेना, एडिशनल डायरेक्टर, पल्मोनोलॉजी, फोर्टिस हॉस्पीटल नोएडा के नेतृत्व में डॉक्टरों की टीम ने इस बच्चे के वायुमार्ग में फंसी मूंगफली को क्रायो-बायप्सी फोरसेप से सफलतापूर्वक निकाला, और 2 दिनों के बाद इस बच्चे को स्थिर अवस्था में अस्पताल से छुट्टी दी गई। इस बच्चे ने एक दिन पहले गलती से मूंगफली निगल ली थी और उसे पहले मेरठ के ही एक स्थानीय अस्पताल ले जाया गया। समय के बाद उसके लक्षण हल्के पड़ गए थे, और उसका पारंपरिक तरीके से इलाज किया जा रहा था। डॉक्टरों को यह लगा था कि संभवतः मूंगफली खुद से ही बाहर निकल गई थी या बच्चे के खाद्य मार्ग में चली गई थी। इसलिए, उन्होंने आगे कोई जांच नहीं की।

लेकिन अगले कुछ ही घंटों में इस मूंगफली ने काफी पानी/नमी सोख ली थी, और इसके फूलने के बाद आकार इतना बढ़ गया था कि वह वायुमार्ग में रुकावट बन गई, जिसकी वजह से बच्चे को सांस लेने में कठिनाई होने लगी। इस बच्चे को रातों-रात सांस लेने में परेशानी होने लगी थी और तब बच्चे के अभिभावक उसे आधी रात को ही इलाज के लिए फोर्टिस हॉस्पीटल नोएडा लेकर आए। जब इस बच्चे को अस्पताल लाया गया तो उसे सांस लेने में काफी तकलीफ थी और उसका ऑक्सीजन लेवल काफी कम था, जिससे यह साफ था कि उसके वायुमार्ग में रुकावट थी। अस्पताल लाए जाने पर, उसे रेस्पिरेटरी फेलियर के चलते कार्डियाक अरेस्ट भी हुआ। फोर्टिस नोएडा में पिडियाट्रिक आईसीयू टीम ने तुरंत एडवांस लाइफ सपोर्ट पर रखा जिसमें इमरजेंसी इनट्यूबेशन और मैकेनिकल वेंटिलेशन शामिल था। बच्चे के वायुमार्ग में फंसी बाहरी वस्तु की पहचान करने और उसे निकालने के लिए तत्काल ब्रोंकोस्कोपी की गई। क्रायो-बायप्सी फोरसेप और डॉरमिया बास्केट जैसी उन्नत तकनीकों का इस्तेमाल करते हुए, मेडिकल टीम ने मूंगफली के सभी टुकड़ों को सावधानीपूर्वक निकाला।

यह हाइ-रिस्क ब्रोंकोस्कोपी में करीब 5 से 6 घंटे का समय लगा, और इसमें काफी सटीकता, धैर्य और तालमेल की जरूरत थी।

इस प्रक्रिया के बाद, बच्चे की हालत अगले 24 घंटों तक नाजुक बनी रही और वह डॉ अंकित प्रसाद, कंसल्टेंट पिडियाट्रिक, फोर्टिस हॉस्पीटल नोएडा की देखरेख में रहा। धीरे-धीरे इस बच्चे की कंडीशन में सुधार होने लगा, और पूरी तरह रिकवर होने के बाद उसे स्थिर हालत में अस्पताल से छुट्टी दे दी गई।

इस मामले की जानकारी देते हुए, डॉ मयंक सक्सेना, एडिशनल डायरेक्टर, पल्मोनोलॉजी, फोर्टिस हॉस्पीटल नोएडा ने कहा, 'मूंगफली जैसी ऑर्गेनिक वस्तु का वायुमार्ग में फंसना काफी खतरनाक हो सकता है। धीरे-धीरे ये पदार्थ पानी सोखते रहते हैं, और आकार में बढ़ते रहते हैं जो आगे चलकर वायुमार्ग को अवरुद्ध कर सकते हैं। शुरू में ये लक्षण हल्के होते हैं लेकिन तेजी से बिगड़ सकते हैं। शुरुआती जांच के तहत इमेजिंग, तत्काल डायग्नॉसिस और खासतौर से छोटे बच्चों में, तुरंत उसे हटाया जाना जरूरी होता है।'

यूपी की खाद्य प्रसंस्करण नीति से निवेश, रोजगार और निर्यात को नई रफ्तार

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) लखनऊ। उत्तर प्रदेश

में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग तेजी से एक प्रमुख औद्योगिक हब के रूप में विकसित हो रहा है। यूपी की खाद्य प्रसंस्करण नीति से निवेश, रोजगार और निर्यात को नई रफ्तार मिल रही है। प्रदेश सरकार द्वारा लागू उत्तर प्रदेश खाद्य प्रसंस्करण उद्योग नीति-2023 का उद्देश्य राज्य में निवेश, रोजगार और निर्यात को प्रोत्साहित करते हुए किसानों की आय में वृद्धि करना है। खाद्य प्रसंस्करण विभाग इस क्षेत्र मे सुदृढ़ नीति एवं पारदर्शी व्यवस्था के साथ आगे बढ़ रहा है। प्रदेश में असंगठित क्षेत्र के अंतर्गत लगभग 3.50 लाख खाद्य प्रसंस्करण इकाइयाँ स्थापित एवं क्रियाशील हैं, जबकि संगठित क्षेत्र में 80,000 से अधिक इकाइयाँ कार्यरत हैं। इनमें से 3000 से अधिक इकाइयों का वार्षिक टर्नओवर 100 करोड़ रुपये या उससे अधिक है। यह क्षेत्र लगभग 2.55 लाख लोगों को प्रत्यक्ष रोजगार उपलब्ध करा रहा है। सरकार का लक्ष्य प्रत्येक जनपद में 1000 नई इकाइयाँ स्थापित कर 75,000 अतिरिक्त इकाइयों की स्थापना करना है, जिससे कुल संख्या को लगभग 1.40 लाख तक पहुंचाया जा सके। राज्य में 15 एग्रो-फूड प्रोसेसिंग पार्क भी विकसित किए जा रहे हैं। प्रदेश में निजी निवेश के माध्यम से बड़ी खाद्य प्रसंस्करण इकाइयाँ स्थापित की जा रही हैं, जिनमें छमेजसन्न (ग्रेटर नोएडा), Haldiram's (नोएडा/लखनऊ), चंतसम च्तवकनबजे (बहेरी) तथा डवजीमत कंपतल (वाराणसी) प्रमुख हैं। हल्दी, आम, आँवला, मिर्च, नमकीन एवं दुग्ध प्रसंस्करण पर विशेष बल दिया जा रहा है, जिससे उत्तर प्रदेश प्रसंस्कृत खाद्य उत्पादों का प्रमुख निर्यातक राज्य बनकर उभर रहा है। नीति के अंतर्गत नई खाद्य प्रसंस्करण इकाइयों को परियोजना लागत का 35 प्रतिशत (अधिकतम 5 करोड़ रुपये) अनुदान दिया जा रहा है। इकाइयों के विस्तार, आधुनिकीकरण एवं उन्नयन हेतु 35 प्रतिशत (अधिकतम 1 करोड़ रुपये) का प्रावधान है। मूल्य वर्धन एवं कोल्ड चेन इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए प्लांट एवं मशीनरी पर 35 प्रतिशत तथा फ्रीजिंग सुविधा पर 50 प्रतिशत (अधिकतम 10 करोड़ रुपये) तक अनुदान उपलब्ध है। ग्रामीण क्षेत्रों में सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापना पर महिला उद्यमियों को 90 प्रतिशत तथा पुरुष उद्यमियों को 50 प्रतिशत तक अनुदान दिया जा रहा है। निर्यात हेतु परिवहन लागत पर 25 प्रतिशत सब्सिडी, रेफर वैन/मोबाइल यूनिट के लिए 5 वर्ष तक ब्याज सब्सिडी (अधिकतम 50 लाख रुपये), कृषि प्रसंस्करण क्लस्टर पर 35 प्रतिशत (अधिकतम 10 करोड़ रुपये) तथा फार्म गेट इंफ्रास्ट्रक्चर पर 35 प्रतिशत (अधिकतम 5 करोड़ रुपये) की सहायता दी जा रही है। भूमि एवं शुल्क संबंधी प्रोत्साहनों में 12.5 एकड़ से अधिक कृषि भूमि क्रय की अनुमति, भूमि उपयोग परिवर्तन (सीएलयू) शुल्क में 50 प्रतिशत छूट, बाह्य विकास शुल्क में 75 प्रतिशत छूट तथा स्टांप शुल्क की 100 प्रतिशत प्रतिपूर्ति का प्रावधान किया गया है। साथ ही एकल एकीकृत बाजार व्यवस्था के अंतर्गत मंडी शुल्क एवं उपकर में छूट प्रदान की जा रही है। उद्यमी सिंगल विंडो पोर्टल 'निवेश मित्र' के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं, जिससे पारदर्शी एवं समयबद्ध स्वीकृति प्रक्रिया सुनिश्चित की गई है। गुणवत्तापूर्ण, सुरक्षित एवं मूल्यवर्धित खाद्य उत्पादों की उपलब्धता सुनिश्चित करना तथा किसानों, उद्यमियों और युवाओं को सशक्त बनाना ही इस नीति का मूल उद्देश्य है। उत्तर प्रदेश खाद्य प्रसंस्करण उद्योग नीति-2023 राज्य को आत्मनिर्भर, रोजगारयुक्त और निर्यातोन्मुख बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हो रही है।

बिना पंजीयन एवं अनधिकृत रूप से संचालित गेस्ट हाउस, होटल, लॉज, धर्मशाला के प्रोपराइटर एवं प्रबन्धक सराय ऐक्ट में पंजीयन कराना सुनिश्चित करें

बिना पंजीयन एवं अनधिकृत रूप से संचालन पाये जाने पर संबंधित के विरुद्ध की जायेगी कड़ी कार्यवाही-अपर जिलाधिकारी नगर

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। अपर जिलाधिकारी

नगर श्री सत्यम मिश्र ने प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से बताया है कि जनसामान्य एवं पर्यटकों की सुरक्षा के दृष्टिगत अनधिकृत रूप से व सराय ऐक्ट में बिना पंजियन संचालित गेस्ट हाउस, होटल, लॉज, धर्मशाला के प्रोपराइटर एवं प्रबन्धक अपर जिलाधिकारी नगर के कार्यालय में आवेदन करके अपने-अपने गेस्ट हाउस, होटल, लॉज, धर्मशाला का पंजीयन सराय ऐक्ट में करायना सुनिश्चित करें। उन्होंने बताया कि जनपद प्रयागराज में बिना पंजीयन एवं अनधिकृत रूप से संचालित गेस्ट हाउस होटल, लॉज, धर्मशाला को नियमानुसार बन्द कराने की कार्यवाही की जायेगी।

अविमुक्तेश्वरानंद बोले- मैं भाग नहीं रहा, सामना करूंगा,गुरु गड़बड़ निकल जाए तब रोना

प्रयागराज। शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद के

खिलाफ बच्चों से यौन शोषण की मुक़दमा होने के बाद प्रयागराज पुलिस ने जांच तेज कर दी है। प्रयागराज पुलिस की एक टीम ने हरदोई में पीड़ित के परिवार का बयान लिया है। दूसरी टीम सोमवार दोपहर पुलिस टीम वाराणसी पहुंची। टीम शंकराचार्य से पूछताछ कर सकती है। जरूरत पड़ने पर गिरफ्तार भी कर सकती है। इधर, सोमवार सुबह शंकराचार्य ने वाराणसी के आश्रम में वकीलों के साथ बैठक की। माना जा रहा, गिरफ्तारी से बचने के लिए वह हाईकोर्ट का रुख कर सकते हैं। बैठक के बाद शंकराचार्य ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर कहा- मैं कहीं भाग नहीं रहा। पुलिस का सामना करूंगा। जिन छात्रों के यौन शोषण का आरोप लगा है, वे मेरे गुरुकुल के नहीं हैं। जनता को यूपी पुलिस पर भरोसा नहीं। जहां भाजपा सरकार नहीं, उस राज्य की पुलिस से जांच कराई जाए। वहीं, एक महिला सुबह अविमुक्तेश्वरानंद का आशीर्वाद लेने पहुंची। वह शंकराचार्य पर लगे आरोपों से भावुक हो गई और फूट-फूटकर रोने लगी। शंकराचार्य ने उसे समझाया। कहा- रोना तब, जब गुरु गड़बड़ निकले। यूपी कांग्रेस ने मामले में प्रधानमंत्री मोदी को लेटर लिखकर निष्पक्ष जांच की मांग की है। प्रदेश अध्यक्ष अजय राय ने कहा- 'ज्योतिष्पीठ के शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद, उनके शिष्य मुकुंदानंद और 2-3 अज्ञात लोगों को आरोपी बनाया गया है। प्रतिशोध की बू आती है। यह कार्रवाई तब हुई, जब शंकराचार्य ने कुंभ मेले की अव्यवस्थाओं और श्रद्धालुओं को हुई परेशानियों पर प्रदेश सरकार से सवाल किए थे।

' इससे पहले रविवार को पुलिस शिकायतकर्ता आशुतोष महाराज के साथ माघ मेला क्षेत्र पहुंची। उस स्थान का निरीक्षण किया, जहां शंकराचार्य का शिविर लगा था। पुलिस ने शिविर के आने-जाने के रास्तों और आसपास के इलाके का नक्शा तैयार किया। दरअसल, 24 जनवरी को आशुतोष महाराज ने पुलिस कमिश्नर से शिकायत की थी।

उन्होंने माघ मेला-2026 और महाकुंभ-2025 के दौरान बच्चों के साथ यौन शोषण के आरोप लगाए थे। इसके बाद 8 फरवरी को उन्होंने पुलिस पर कार्रवाई न करने का आरोप लगाते हुए प्रयागराज की स्पेशल पॉक्सो कोर्ट में केस दायर किया। 13 फरवरी को 2 बच्चों को कोर्ट में पेश किया। 21 फरवरी को कैमरे के सामने बच्चों के बयान दर्ज किए गए। कोर्ट के आदेश पर उसी दिन झूंसी थाने में मुक़दमा हुई। इसमें अविमुक्तेश्वरानंद, उनके शिष्य मुकुंदानंद और 2-3 अज्ञात लोगों को आरोपी बनाया गया है।

विदाई के बाद सीधे इंटरव्यू देने पहुंची दुल्हन

आगरा। आगरा में शादी की रस्मों के बाद दुल्हन की विदाई होनी थी। लेकिन, दूल्हा उसको विदा कर अपने घर ले जाने की जगह सरकारी नौकरी का इंटरव्यू दिलाने लेकर चला गया। दरअसल, दुल्हन ने शादी के पहले ही बाल विकास विभाग में आंगनबाड़ी वर्कर की वैकेंसी के लिए फॉर्म भर रखा था। संयोग से इसी बीच दुल्हन की शादी तय हो गई। जिस दिन विदाई होनी थी, उसी दिन उसका इंटरव्यू भी था। दूल्हे ने दुल्हन की भावनाओं को समझा। उसने झटपट शादी की रस्में निपटाईं और दुल्हन को आगरा के विकास भवन ले गया। वहां दुल्हन ने शादी के जोड़े में ही इंटरव्यू दिया। मामला लाडूखेड़ा का है।लाडूखेड़ा ब्लॉक मुख्यालय के रहने वाले मनोज कुशवाहा साइबर कैफे चलाते हैं। करीब 3 महीने पहले अनीशा कुशवाहा अपने किसी काम से उनके साइबर कैफे पर आई थीं। वह पास के ही गांव में रहती हैं। इस बीच दोनों के बीच बातचीत शुरू हुई। फिर दोनों एक-दूसरे को पसंद करने लगे। इसके बाद दोनों ने शादी करने का फैसला कर लिया। दोनों ने अपने-अपने घर पर बात की, तो घरवाले भी उनकी शादी करने के लिए तैयार हो गए। इसके बाद 21 फरवरी को मनोज और अनीशा की शादी हुई। शादी से एक दिन पहले ही अनीशा को पता चला कि रविवार को उसका आंगनबाड़ी वर्कर की पोस्ट के लिए इंटरव्यू है।

गोंडा में हाईकोर्ट वकील की हत्या,नौ बीघे जमीन पर कब्जे की लड़ाई

गोंडा। गोंडा में जमीन विवाद में हाईकोर्ट के वरिष्ठ वकील की पीटकर हुई हत्या का वीडियो सामने आया है। वीडियो में पूरा घटनाक्रम रिकॉर्ड है। पुलिस इस फुटेज को अपनी जांच का अहम हिस्सा मान रही है। उधर, गांव में तनाव को देखते हुए भारी पुलिस बल तैनात कर दिया गया है। इस मारपीट में वकील के बेटे और 2 भतीजे भी घायल हैं। गोंडा मेडिकल कॉलेज में उनका इलाज चल रहा है। पुलिस ने वीडियो के आधार पर 3 आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। दरअसल, 9 बीघा जमीन को लेकर कोर्ट में केस चल रहा था। अपने पक्ष में फैसला आने के बाद वकील रविवार को खेत की जुताई करने पहुंचे थे। तभी विरोधी पक्ष के 15-20 लोगों ने लाठी-डंडों और धारदार हथियार लेकर पहुंचे और हमला कर दिया।वकील की हत्या के बाद सामने आए वीडियो में दिख रहा है कि ट्रैक्टर से विवादित खेत की जुताई की जा रही है। ट्रैक्टर पर दो लोग बैठ हैं। 10 से 12 लोग लाठी-डंडे और हॉकी लेकर खड़े हैं। वीडियो में आवाज आ रही है कि देखिए हमने इस जमीन का बैनामा कराया है, उसे दबंगई से जोता जा रहा है। वीडियो में वकील सुभाष चंद्र भी दिख रहे हैं। इसी दौरान हॉकी लेकर एक आदमी उनके पास पहुंचता है। फिर दोनों दोनों पक्षों में कहासुनी के बाद मारपीट शुरू हो जाती है। कुछ देर बाद आवाज आती है, पुलिस आ गई भागो। फिर वीडियो में अंधेरा छा जाता है और आवाज आती है कि ट्रैक्टर चढ़ा दिया।सुदाई पुरवा गांव के 67 वर्षीय सुभाष चंद्र मिश्रा लखनऊ हाईकोर्ट में प्रशासनिक अधिवक्ता रहे हैं। वह अवध बार एसोसिएशन के मंत्री भी रह चुके हैं। उनके दो बेटे हैं-बड़ा बेटा अभिषेक मिश्रा भी हाईकोर्ट में अधिवक्ता है, जबकि छोटा बेटा अनुराग मिश्रा खेती-बाड़ी संभालता है। अधिवक्ता सुभाष चंद्र मिश्रा के पिता पारस मिश्रा की 30 साल पहले मौत हो चुकी है। उनके चार बेटे थे-सुभाष चंद्र मिश्रा (हाईकोर्ट अधिवक्ता), दिनेश मिश्रा (मृत), अरुण मिश्रा (वर्तमान में किसान इंटर कॉलेज भंभुआ में क्लर्क के पद पर तैनात) और सबसे छोटे बेटे अभय मिश्रा। पारस मिश्रा के छोटे भाई जगदंबा मिश्रा की केवल दो बेटियां थीं। उन्होंने कोरोना काल में अपनी मौत से 1-2 साल पहले अपने 9 बीघा जमीन की वसीयत अपने भतीजे सुभाष मिश्रा, दिनेश मिश्रा और अभय मिश्रा के नाम कर दी थी। वसीयत करते समय जगदंबा मिश्रा ने अपने भतीजे अरुण मिश्रा के नाम जमीन नहीं की थी, क्योंकि पिता पारस मिश्रा की मौत के बाद उन्हें अनुकंपा नियुक्ति मिल चुकी थी। अरुण मिश्रा को पिता की नौकरी भाई सुभाष चंद्र मिश्रा, दिनेश मिश्रा और अभय मिश्रा के आपसी समझौते के आधार पर मिली थी। कोरोना काल में जगदंबा मिश्रा की मौत के बाद उनकी पत्नी रामावती के नाम 9 बीघा जमीन दर्ज हो गई थी।मौत के करीब दो साल बाद अधिवक्ता सुभाष चंद्र मिश्रा के सगे छोटे भाई अरुण मिश्रा ने अपनी चाची रामावती से अपने नाम तथा गांव के पट?टीदार और पूर्व प्रधान हरि शरण मिश्र एवं राम केवल मिश्रा के नाम जमीन का बैनामा करा लिया। बैनामा होने के बाद से अरुण मिश्रा, हरि शरण मिश्र और राम केवल मिश्रा इस जमीन पर अपना हक जताने लगे। इसे लेकर अधिवक्ता सुभाष चंद्र मिश्रा ने करनैलगंज ग्राम न्यायालय में वाद दायर किया। कोर्ट ने सुनवाई के

बाद सुभाष चंद्र मिश्रा को जमीन पर कब्जा लेने की अनुमति दी और विपक्षी पक्ष को हस्तक्षेप करने से मना किया। कोर्ट के इसी आदेश को लेकर शनिवार को सुभाष चंद्र मिश्रा का पक्ष करनैलगंज कोतवाली पहुंचा और लिखित आदेश देकर जमीन पर कब्जा दिलाने की मांग की। पुलिस ने कहा कि यदि जमीन उनकी है तो वे कब्जा कर सकते हैं। इसके बाद अधिवक्ता सुभाष चंद्र मिश्रा अपने दोनों भाइयों दिनेश मिश्रा और अभय मिश्रा तथा परिवार के अन्य सदस्यों के साथ खेत की जुताई करने गए। इसी दौरान विवाद हो गया।पोस्टमार्टम रिपोर्ट के मुताबिक, सुभाष चंद्र मिश्रा की मौत सिर में गंभीर चोट लगने से हुई। शरीर पर कुल आठ चोटों के निशान मिले हैं। दो डॉक्टरों के पैनल ने वीडियोग्राफी के साथ पोस्टमार्टम किया। रिपोर्ट में बताया गया कि सिर में चोट से खून जम गया था, जिससे नसें काम करना बंद कर गईं और इलाज के दौरान उनकी मृत्यु हो गई।करनैलगंज कोतवाली पुलिस ने वकील के भतीजे विश्वास मिश्रा की तहरीर पर सुभाष चंद्र के छोटे भाई अरुण कुमार मिश्रा, पट्टीदार पूर्व ग्राम प्रधान हरिशरण मिश्रा, रामकेवल और संतोष कुमार के खिलाफ हत्या का मुकदमा दर्ज करवाया है। जिसमें अरुण कुमार मिश्रा को मुख्य आरोपी बनाया गया है। वह फरार है। अन्य की तलाश में टीमें दबिश दे रही हैं। गांव में एहतियातन पुलिस बल तैनात है। करनैलगंज कोतवाल नरेंद्र प्रताप राय के अनुसार, दो वीडियो सामने आए हैं, एक में कोई विवाद स्पष्ट नहीं है, जबकि दूसरे में विवाद और ट्रैक्टर चलाते एक व्यक्ति को देखा जा सकता है। पुलिस वीडियो की सत्यता की जांच कर रही है।घटना के बाद अधिवक्ताओं में भारी आक्रोश है। उन्होंने पुलिस की कार्यशैली पर सवाल उठाए और निष्पक्ष जांच की मांग की। गोंडा में नाराज अधिवक्ताओं ने कटरा बाजार से भाजपा विधायक बावन सिंह के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। भाजपा विधायक बावन सिंह मुर्दाबाद के नारे लगाए। दरअसल, रविवार को पोस्टमार्टम के दौरान अधिवक्ताओं से भाजपा विधायक ने कहा था कि यहां कुछ मत करिए, हाईकोर्ट जाकर के प्रदर्शन करिए। इसी बयान को लेकर के गोंडा की अधिवक्ताओं में नाराजगी है। हालांकि पुलिस अधीक्षक विनीत जायसवाल के आश्वासन के बाद स्थिति कुछ शांत हुई।अनुराग ने बताया कि रविवार को जैसे ही वे लोग खेत पर पहुंचे, आरोपियों ने हमला कर दिया। लाठी-डंडों से पिटाई की गई और फायरिंग भी की गई। गोली उनके भाई के कान के पास से निकल गई। परिजनों ने आरोप लगाया कि घटना में 20 से 30 लोग शामिल थे। उन्होंने सभी आरोपियों की तत्काल गिरफ्तारी और कड़ी सजा की मांग की है। एएसपी पश्चिमी राधेश्याम राय ने बताया- वकील के भतीजे विश्वास चंद्र की शिकायत पर 4 आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। 2 आरोपियों को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है। अन्य आरोपियों की तलाश की जा रही है। गांव में एहतियातन पुलिस बल तैनात है।हत्याकांड मामले में पुलिस ने 24 घंटे के भीतर तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। इनमें पूर्व प्रधान हरि शरण मिश्रा, राम केवल मिश्रा और संतोष कुमार मिश्रा शामिल हैं। तीनों को न्यायालय में पेश किया गया, जहां से उन्हें न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है। पुलिस ने कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच आरोपियों का मेडिकल परीक्षण कराया और उन्हें जेल भेजा गया है। यह सुनिश्चित किया गया कि इस प्रक्रिया की जानकारी अधिवक्ताओं को न मिल सके। अधिवक्ता सुभाष चंद्र मिश्रा का सगा छोटा भाई अरुण मिश्रा, जो क्लर्क के पद पर तैनात है, अभी भी फरार है। गोंडा पुलिस अधीक्षक विनीत जायसवाल ने अरुण मिश्रा की गिरफ्तारी के लिए चार पुलिस टीमें गठित की हैं। पुलिस टीमें कई स्थानों पर दबिश दे रही हैं। अपर पुलिस अधीक्षक पश्चिमी राधेश्याम राय ने बताया कि सुदाईपुरवा में एक विवादित जमीन को लेकर दो सगे भाइयों और उनके परिजनों के बीच मारपीट हुई थी। इस घटना में सुभाष चंद्र मिश्रा की मौत हो गई थी, जबकि आकाश और विश्वास घायल हुए थे, जिनका इलाज कराया गया है।अधिवक्ता बेटे अभिषेक मिश्रा ने नम आंखों से रोते हुए अपने कापते हाथों से पिता सुभाष चंद्र मिश्रा को मुखाग्नि देकर के अंतिम संस्कार किया है। करनैलगंज स्थित सरयू घाट पर अधिवक्ता सुभाष चंद्र मिश्रा का अंतिम संस्कार किया गया। इस दौरान कटरा बाजार से भाजपा विधायक बावन सिंह सहित भारी संख्या में लोग मौजूद रहे।

रासलीला के आठवें दिन हुआ सुदामा चरित्र का मंचन,वृंदावन के कलाकारों ने सुदामा चरित्र का किया मार्मिक मंचन

श्री कृष्ण रासलीला में सुदामा चरित्र का मंचन देख भक्त हुए मंत्रमुग्ध, द्वारकाधीश की हुई दिव्य आरती

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। रासलीला समिति रॉबर्टसगंज द्वारा नगर के रामलीला मैदान में आयोजित 11 दिवसीय रासलीला के आठवें दिन कलाकारों ने महारास के साथ भगवान श्रीकृष्ण व सुदामा की मित्रता का नृत्य के माध्यम से बड़ा ही मार्मिक मंचन किया गया। वृंदावन के कलाकारों द्वारा लीला

जंगल जाकर लकड़ी लाने को कहा। मित्र को मुसीबत में देख भगवान भी अपने याद किए पाठ को भूलने का नाटक कर बैठे। इस पर क्रोधित गुरु ने उन्हें भी सुदामा के साथ जंगल से लकड़ी लाने का आदेश दिया। भूख लगने पर खाने के लिए सुदामा को दो मुट्ठी चने दिए। जंगल में कृष्ण लकड़ियां लाने चले गए। उसी समय सुदामा को भूख लगी और उन्होंने पूरा चना खा लिया। लकड़ी लेकर लौटे कृष्ण ने भूख लगने पर सुदामा से चने मांगे तो सुदामा ने सच सच बता दिया। इस पर भगवान ने उन्हें श्राप दिया कि 'हक पराया खाय के, यही मिलेगी सीख, हो दरिद्री आज से, दर दर मांगे भीख।' पढ़ाई पूरी करने के बाद श्रीकृष्ण मथुरा के राजा बन गए और सुदामा भिखारी। फिर एक समय आया कि सुदामा श्रीकृष्ण से मिलने पहुंचे। देने के लिए कुछ नहीं था तो वे अपने साथ कच्चा चावल ले गए। सुदामा को देख श्रीकृष्ण अति प्रसन्न हुए। उन्होंने सुदामा के लिए चावल खाने शुरू किए। एक मुट्ठी खाकर एक तथा दूसरी मुट्ठी चावल खाकर जब उन्होंने सुदामा को दो लोक का मालिक बना दिया। जब वे तीसरी मुट्ठी चावल खाने लगे तो वहां खड़ी रुक्मिणी ने उन्हें रोककर कहा कि तीनों लोक सुदामा को दे देंगे तो स्वयं कहां रहेंगे प्रभु। इस पर श्रीकृष्ण ने अपने हाथ रोक लिए और सुदामा को दो लोक का मालिक बना दिया।आठवें दिन के रासलीला का समापन द्वारकाधीश की दिव्य आरती के साथ हुई।इस अवसर पर समति के जितेन्द्र सिंह, रामप्रसाद यादव, मनोज सिंह,रामू मिश्र,सत्येंद्र पांडेय,धर्मेश सिंह खरवार, सचिन गुप्ता, धीरज जालान,अशोक श्रीवास्तव,विजय कानोड़िया,संतोष सिंह चंदेल, कमला कांत पांडेय,मिठाई लाल सोनी,शीतल सोनी,गिरीश पांडेय, ब्रजेश शुक्ला सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

अध्यक्ष, वरिष्ठ उपाध्यक्ष व महामंत्री पद पर एक-एक समेत कुल 9 प्रत्याशियों ने लिया पर्चाः राजेश कुमार यादव एडवोकेट

24 फरवरी तक मिलेगा पर्चा और प्रत्याशी कर सकेंगे पर्चा दाखिला, डिस्ट्रिक्ट बार एसोसिएशन सोनभद्र के चुनाव वर्ष 2025-2026 का हाल

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। डिस्ट्रिक्ट

बार एसोसिएशन (डीबीए) सोनभद्र के निर्वाचन सत्र 2025-26 के लिए नामांकन प्रक्रिया सोमवार को शुरू हो गई। पहले दिन अध्यक्ष, वरिष्ठ उपाध्यक्ष व महामंत्री पद के लिए एक-एक सहित कुल 9 प्रत्याशियों ने विभिन्न पदों के लिए नामांकन पत्र लिया। 24 फरवरी को भी पर्चा मिलेगा और प्रत्याशी अपना पर्चा भी दाखिल करेंगे। जिसकी वजह से चुनावी सरगर्मी तेज हो गई है। मुख्य निर्वाचन अधिकारी राजेश कुमार यादव एडवोकेट ने बताया कि अध्यक्ष पद के लिए सत्यप्रकाश सिंह एडवोकेट ने पर्चा लिया है। वरिष्ठ उपाध्यक्ष पद के लिए बिंदु यादव एडवोकेट एवं महामंत्री पद के लिए राजेंद्र कुमार यादव एडवोकेट ने पर्चा लिया है। इसके अलावा उपाध्यक्ष 10 वर्ष से ऊपर के लिए चतुर्भुज शर्मा एडवोकेट, उपाध्यक्ष 10 वर्ष से नीचे के लिए आशुतोष देव पांडेय एडवोकेट ने भी नामांकन पत्र लिया है। वहीं कार्यकारिणी सदस्य कनिष्ठ के लिए चंद्रकला गिरी एडवोकेट, सुमन एडवोकेट, मार्तंड प्रताप सिंह एडवोकेट एवं रमन कुमार एडवोकेट ने नामांकन पत्र लिया है। मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने यह भी बताया कि नामांकन पत्र विक्रय की अंतिम तिथि 24 फरवरी 2026 दिन मंगलवार निर्धारित है। जबकि प्रत्याशी 24 फरवरी को अपना नामांकन पत्र भी दाखिल कर सकेंगे। बता दें कि नामांकन प्रक्रिया शुरू होते ही अध्यक्ष, महामंत्री, वरिष्ठ उपाध्यक्ष और उपाध्यक्ष के प्रत्याशियों ने अपने समर्थकों के साथ वकील मतदाताओं से संपर्क साधना शुरू कर दिया है, जिससे चुनावी सरगर्मी तेज हो गई है। चुनाव में सहयोग के लिए प्रदीप कुमार मौर्य एड, पवन कुमार सिंह एड, चंद्रप्रकाश सिंह एड, शांति वर्मा एड एवं सहायक चुनाव अधिकारी सुरेश सिंह कुशवाहा एड व राजकुमार सिंह पटेल एड मौजूद रहे।

रामगढ़ और कोरियाव केंद्र पर धान खरीद हुई चालू,राष्ट्रीय लोक दल ने आरएफसी से किया था आग्रह

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। जिलाध्यक्ष राष्ट्रीय लोक दल सोनभद्र श्री श्रीकांत त्रिपाठी जी ने पूर्व में डिप्टी आर0एम0ओ0 महोदय से जनपद के किसानों की मांग पर शिवपुर, कोरियाव एवं रामगढ़ क्रय केंद्रों पर पुनः धान खरीद चालू करने के लिए पत्रक सौंपा

था।। पूर्व में शिवपुर केंद्र पर धान खरीद चालू भी कर दी गई थी।।

आज जिलाध्यक्ष जी ने मिर्जापुर में संभागीय खाद्य नियंत्रक (आरएफसी) महोदय से मिलकर उपर्युक्त दो केंद्रों पर धान खरीद यथाशीघ्र चालू करने का आग्रह किया था।

। आरएफसी महोदय ने सूचित किया है कि उक्त दो केन्द्र कोरियाव एवं रामगढ़ केंद्र में खरीद चालू कर दी गई है।।

पुनः धान खरीद चालू होने से किसान बंधुओं की बड़ी समस्या का समाधान हुआ है।

। राष्ट्रीय लोक दल सदैव किसान हित के लिए समर्पित है-समस्त जानकारी जिला प्रवक्ता विकास पाण्डेय ने अवगत करवाया

संत गाडगे महाराज जी की जयंती पर समाजवादी पार्टी ने किया शत-शत नमन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। सोमवार को संत गाडगे महाराज जी की जयंती समाजवादी पार्टी जिला कार्यालय सोनभद्र पर

मनाई गई। इस अवसर पर आयोजित संगोष्ठी को संबोधित करते हुए समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ताओं ने संत गाडगे महाराज जी को शत-शत नमन किया।संगोष्ठी को संबोधित करते हुए समाजवादी पार्टी के जिला अध्यक्ष राम निहोर यादव ने कहा कि संत गाडगे महाराज जी का पूरा नाम देबूजी जिगराजी जनोकर था। गाडगे महाराज वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाले समाज सुधारक थे। उन्होंने अपना पूरा जीवन दलितों की सेवा में लगा दिया। उनका कीर्तन लोकज्ञान का अंग था। वह हमेशा कीर्तनों के माध्यम से समाज के पाखंड और परंपरा की आलोचना करते थे। गाडगे बाबा ने समाज को शिक्षा के महत्व के बारे में समझाते हुए स्वच्छता और चारित्रिक शिक्षा देते थे। वह हमेशा हर समाज के गरीबों का मदद करते थे। संत गाडगे महाराज के रास्ते पर चलते हुए समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने आज सड़क से सदन तक गरीबों की आवाज उठाने का काम कर रहे हैं और हर गरीबों का अपने स्तर से मदद करने का काम कर रहे हैं। यदि गरीबों का कोई मसीहा है तो वह समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव हैं। संगोष्ठी को संबोधित करने वाले में मुख्य रूप से जिला महासचिव मोहम्मद सईद कुरैशी, अनिल प्रधान, अशोक पटेल, सरदार पारब्रह्म सिंह, विष्णु कुशवाहा, अभय यादव, अभिनव पांडे, दयाराम मौर्य, राजनाथ यादव, मिथिलेश कुमार सिंह, बचोले प्रसाद पटेल, रमेश कुमार विश्वकर्मा, राजेश कुमार विश्वकर्मा, विनीत सरोज, विनोद यादव, दीपक केसरी के साथ सैकड़ो कार्यकर्ताओं ने संबोधित किया।

सोनभद्र मिट्टी धंसी, पांच महिलाएं जिसमे तीन की मौत,एक को अस्पताल भेजा

सोनभद्र। म्योरपुर थाना क्षेत्र में सोमवार सुबह मिट्टी

धंसने से बड़ा हादसा हो गया। किरवानी जंगल में छुही मिट्टी निकालने के दौरान पांच महिलाएं दब गईं। इस हादसे में दो महिलाओं की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि रस्क्यू के दौरान दो महिलाओं को निकाला गया, जिनमें एक ने अस्पताल में दम तोड़ दिया। एक महिला का इलाज चल रहा है। यह घटना तब हुई जब गांव की महिलाएं जंगल में छुही मिट्टी निकालने के लिए खुदाई कर रही थीं। अचानक मिट्टी का एक बड़ा हिस्सा भरभराकर गिर पड़ा, जिससे वहां काम कर रही महिलाएं उसकी चपेट में आ गईं। आसपास मौजूद लोगों ने शोर सुनकर तुरंत पुलिस और प्रशासन को सूचना दी। सूचना मिलते ही एसडीएम, सीओ और पुलिस टीम मौके पर पहुंच गई। जेसीबी मशीन की मदद से तत्काल राहत और बचाव कार्य शुरू किया गया।हादसे में सद्दकी निशा पत्नी कमरूदीन(35) निवासी बडहोर, अकीली पत्नी मेराज(35)निवासी किरवानी की मौके पर ही मौत हो गई। सीता पत्नी देववरन (30) निवासी किरवानी और फुल कुमारी पत्नी उदय शंकर गोड (35) को घायल हालत में निकाला गया। लेकिन अस्पताल में सीता को डॉक्टरों ने मृत करार दे दिया। जबकि फूल कुमारी का इलाज चल रहा है। जबकि एक महिला को समय रहते लोगों ने ही सुरक्षित बाहर निकाल लिया, जिससे उनकी जान बच गई। इस घटना के बाद गांव में शोक का माहौल है। मृतकों के परिजनों का बुरा हाल है।

डिस्ट्रिक्ट बार एसोसिएशन सोनभद्र के चुनाव में अध्यक्ष पद पर 1 सहित 9 प्रत्याशियों ने नामांकन पत्र लिया

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। डिस्ट्रिक्ट बार एसोसिएशन (डीबीए) के निर्वाचन सत्र 2025-26 के लिए नामांकन प्रक्रिया सोमवार को शुरू हो गई। पहले दिन अध्यक्ष पद के लिए 1 सहित कुल 9 प्रत्याशियों ने विभिन्न पदों के लिए नामांकन पत्र लिया। इससे चुनाव प्रक्रिया में बहुत तेजी आ गई है। मुख्य निर्वाचन अधिकारी राजेश कुमार यादव एडवोकेट ने बताया कि अध्यक्ष पद के लिए सत्यप्रकाश सिंह एड ने पर्चा लिया है। वरिष्ठ उपाध्यक्ष पद के लिए बिंदु यादव एड ने नामांकन पत्र लिया है। महामंत्री पद के लिए राजेंद्र कुमार यादव और उपाध्यक्ष 10 वर्ष से ऊपर के लिए चतुर्भुज शर्मा एडवोकेट, 10 वर्ष से नीचे के लिए आशुतोष देव पांडेय पद के लिए नामांकन पत्र लिया है। कार्यकारिणी सदस्य कनिष्ठ के लिए चंद्रकला गिरी एडवोकेट, सुमन एडवोकेट, मार्तंड प्रताप सिंह एडवोकेट एवं रमन कुमार ने नामांकन पत्र लिया है। नामांकन पत्र विक्रय की अंतिम तिथि 24 फरवरी 2026 निर्धारित है। प्रत्याशी 24 फरवरी को अपने नामांकन पत्र दाखिल कर सकेंगे। चुनाव में सहयोग में प्रदीप कुमार मौर्य एड, पवन कुमार सिंह एड, चंद्रप्रकाश सिंह एड व शांति वर्मा एवं सहायक चुनाव अधिकारी सुरेश सिंह कुशवाहा व राजकुमार सिंह पटेल उपस्थित रहे।

म्योरपुर में पंचायती राज प्रशिक्षण पूरा हुआ,ग्राम प्रधानों,सचिवों सहित सदस्यों को दिया गया प्रशिक्षण

सोनभद्र। म्योरपुर ब्लॉक सभागार में सोमवार को पंचायती राज प्रशिक्षण संस्थान द्वारा एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण में ग्राम प्रधान, पंचायत सचिव, पंचायत सहायक और प्रत्येक गांव से एक-एक पंचायत सदस्य शामिल हुए। कार्यक्रम का शुभारंभ खंड विकास अधिकारी दिनेश मिश्रा ने सरस्वती प्रतिमा पर दीप प्रज्वलित कर किया। प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य ग्राम पंचायत विकास योजना (जीपीडीपी) के निर्माण और उसके प्रभावी क्रियान्वयन के संबंध में जनप्रतिनिधियों व कर्मचारियों को विस्तृत जानकारी प्रदान करना था। इस दौरान विकास खंड की लगभग 40 ग्राम पंचायतों से आए ग्राम प्रधानों, ग्राम सभा सदस्यों, पंचायत सहायकों और सचिवों ने सहभागिता की। डिस्ट्रिक्ट मास्टर ट्रेनर भास्कर अग्रहरि ने प्रतिभागियों को पांच प्रमुख बिंदुओं पर विस्तार से प्रशिक्षण दिया। उन्होंने बताया कि 'सबका योजना, सबका विकास' अभियान के तहत जन-योजना अभियान संचालित किया जा रहा है। ग्राम पंचायत स्तर पर समग्र विकास सुनिश्चित करने के लिए जीपीडीपी एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जो पांच चरणों में पूरी होती है।ग्राम सभा से अनुमोदन के बाद योजनाओं को प्रशासनिक और वित्तीय स्वीकृति प्रदान की जाती है। निर्धारित प्रावधानों के अनुसार, ग्राम पंचायतों की 5 लाख से 7.50 लाख रुपये तक की योजनाओं को एडीओ पंचायत द्वारा, 10 लाख रुपये तक की योजनाओं को डीआरडीओ द्वारा तथा 10 लाख से अधिक की राशि के लिए जिलाधिकारी की स्वीकृति आवश्यक होती है। प्रशिक्षण के अंत में सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए। उन्हें स्टेशनरी, भोजन और यात्रा भत्ता भी प्रदान किया गया। इस अवसर पर खंड विकास अधिकारी, एसबीएम अधिकारी कनकलता, साहिन बानो सहित अन्य कर्मचारी उपस्थित रहे।

संत गाडगे महाराज जी की जयंती पर आयोजित हुआ भव्य कार्यक्रम

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। रावटसगंज नगर स्थित चाचा नेहरू पार्क मे

सोमवार को संत गाडगे महाराज जी की जयंती अनुसूचित मोर्चा जिला अध्यक्ष सरजू बैसवार के नेतृत्व में मनाया गया। कार्यक्रम आयोजन भाजपा नगर मंत्री आलोक रावत के नेतृत्व में किया गया। इस अवसर पर उपस्थित लोगों ने संत गाडगे महाराज जी के चित्र पर माल्यार्पण किया और उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। जिला अध्यक्ष सरजू बैसवार ने बताया कि संत गाडगे महाराज जी एक महान संत और समाज सुधारक थे, जिन्होंने समाज में व्याप्त अंधविश्वास और कुरीतियों के खिलाफ लड़ाई लड़ी। उन्होंने समाज के पिछड़े वर्गों के उत्थान के लिए काम किया और शिक्षा के महत्व पर बल दिया। इस अवसर पर उपस्थित लोगों ने संत गाडगे महाराज जी के जीवन और कार्यों को याद करते हुए उनके आदर्शों पर चलने का संकल्प लिया। कार्यक्रम में उपस्थित लोगों ने संत गाडगे महाराज जी के जीवन और उनके कार्यों को याद किया और उनके आदर्शों पर चलने का संकल्प लिया। शाहगंज मंडल अध्यक्ष यशवंत कोल, चुर्क मंडल अध्यक्ष मोहन राम, प्रदीप , धन कुमारी, बृजेश, कमलेश, सुनील, परमानंद, राजन, अजय आदि लोग मौजूद रहें। पूरे कार्यक्रम का संचालन कर रहे अनुसूचित मोर्चा के जिला महामंत्री पन्नालाल पासवान ने अंत मे सभी का आभार प्रगट कर कार्यक्रम समापन किया। इस अवसर पर उपस्थित लोगों ने संत गाडगे महाराज जी के जीवन और उनके कार्यों को याद किया और उनके आदर्शों पर चलने का संकल्प लिया।

संत गाडगे महराज सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत थे-कमलेश चौधरी,अखिल भारतीय धोबी महासघ के तत्वाधान में मनायी गयी 150वीं जयन्ती

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। अखिल भारतीय धोबी महासंघ के तत्वाधान में लोकहितवादी लोक कल्याणकारी निष्काम कर्मयोगी संत गाडगे महराज की 150वीं जयन्ती जिलाधिकारी निवास के पास स्थापित गाडगे महराज की मूर्ति परिसर क्षेत्र में मनायी गयी। इस अवसर पर महासंघ के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष कमलेश चौधरी ने कहा कि गाडगे महराज सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत थे। श्री चौधरी ने कहा कि महराज अपढ़ होते हुए भी शिक्षा के महत्व को बखूबी जानते थे, उनका मानना था कि निरक्षरता अन्याय की जन्मदात्री है। प्रान्तीय व्यापारी नेता मुकेश रस्तोगी ने कहा कि बच्चों को शिक्षित करके ही हम उनके मिशन को आगे बढ़ा सकते हैं। संस्थान के महासचिव कैलाश कनौजिया ने कहा कि हम सभी को उनके दिखाये रास्ते पर चलकर समाज का उत्थान करना है। वरिष्ठ समाजसेवी राजेन्द्र चौधरी ने कहा भिखारी, अपंग, पागल लोगों की बढ़ती संख्या से महराज चिंतित रहते थे, आज हम सभी को इस कुव्यवस्था को दूर करने की आवश्यकता है। कांग्रेस नेता राजेश यादव ने कहा कि वे स्वच्छता अभियान के जनक थे। कर्मचारी नेता अनूप मिश्रा ने कहा कि हमें अपने महापुरूषों से प्रेरणा लेनी चाहिए। बहुजन चिंतक रोहित चौधरी ने कहा कि हमें मानवता के लिए कार्य करना चाहिए। समाजसेवी श्रीराम ने कहा कि शिक्षा में कभी लिंग भेद नहीं करना चाहिए। वरिष्ठ अधिवक्ता घनश्याम निर्मल ने कहा कि दलित पिछड़े समाज को उत्थान के लिए शिक्षा का मार्ग अपनाना चाहिए। इस अवसर पर मुख्य रूप से रूपचन्द्र यादव, मदनलाल, गंगा प्रसाद, गंगा किसन, मंशाराम, रामसरन, रामनरेश चौधरी, सुरेश निर्मल, राजेश कुरील, विश्वदलित सबरा, गुड्डू कनौजिया, अविनीश चौधरी, सत्य नरायन निर्मल, शशिान्ति एडवोकेट, जग प्रसाद, राम औतार, दुर्गेश कुमार, सुखमीलाल, राजाराम, आशाराम, अमरजीत, महराजदीन राजवंशी, अजीत कनौजिया, अशोक कुमार सिंह, श्रीकानत कनौलिया, सतीश कुमार, राम किसुन निर्मल, अमर कनौजिया, अशोक कुमार निर्मल, दिलीप निर्मल, मान सिंह, राम प्रसाद आर्य, रत्नेश चौधरी आदि लोगों ने संत गाडगे महराज की मूर्ति पर माला-फूल अर्पित कर उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला।

डायबिटीज रातों-रात नहीं होती,शरीर देता ये 8 संकेत, एक भी लक्षण दिखे तो न करें इग्नोर, तुरंत लें डॉक्टर की सलाह

नयी दिल्ली। द लैंसेट ग्लोबल हेल्थ जर्नल की हालिया स्टडी के मुताबिक, साल 2019 में हर पांच में से दो लोग यानी लगभग 40फीसदी लोग यह नहीं जानते हैं कि उन्हें डायबिटीज है। 45 साल और उससे ज्यादा उम्र के हर पांच में से एक व्यक्ति को डायबिटीज है। ऐसे लोगों की संख्या 5 करोड़ से भी ज्यादा

है। अगर डायबिटीज लंबे समय तक कंट्रोल न की जाए तो इससे शरीर के कई अंग प्रभावित होने लगते हैं। इससे हार्ट डिजीज, स्ट्रोक, किडनी फेलियर, आई साइट कमजोर होने, नसों को नुकसान और पैरों में गंभीर समस्याए हो सकती हैं। इसके बावजूद भारत में कई लोग, खासकर बुजुर्ग, डायबिटीज को मैनेज करने में लापरवाही बरतते हैं। क्या आपको पता है कि ज्यादा प्यास लगना या बार-बार पेशाब जाना डायबिटीज का पहला संकेत हो सकता है? यह बीमारी दो मुख्य प्रकार की होती है- टाइप 1 और टाइप 2, टाइप 1 में शरीर इंसुलिन नहीं बना पाता, जो ज्यादातर बच्चों और युवाओं में होती है। टाइप 2 सबसे आम है, जहां शरीर इंसुलिन का सही इस्तेमाल नहीं कर पाता। अगर आपका वजन ज्यादा है या परिवार में किसी को डायबिटीज है, तो खतरा बढ़ जाता है। आज 'फिजिकल हेल्थ' में हम डायबिटीज की शुरुआती संकेत जानेंगे। साथ ही जानेंगे कि- टाइप 1 और टाइप 2 में क्या फर्क है? कॉम्प्लिकेशंस के वॉर्निंग साइन्स क्या हैं? ब्लड शुगर को मैनेज कैसे करें? डायबिटीज क्या है और इसे समझना क्यों जरूरी है? डायबिटीज ब्लड शुगर की समस्या है। हम जो खाते हैं, शरीर उसे इस्तेमाल करने के लिए ग्लूकोज में बदलता है। इससे शरीर की कोशिकाओं को ऊर्जा मिलती है। कोशिकाओं को ग्लूकोज इस्तेमाल करनेके लिए इंसुलिन हॉर्मोन की जरूरत पड़ती है। अगर इंसुलिन कम बने या सही काम न करे, तो ग्लूकोज ब्लड में ही रह जाता है। इससे थकान, कमजोरी और दूसरी परेशानियां महसूस हो सकती हैं। पूरी दुनिया में डायबिटीज के केस तेजी से बढ़ रहे हैं। अगर इसे समय पर डायग्नोज न किया जाए तो हार्ट प्रॉब्लम, किडनी फेलियर या आई साइट में वीकनेस हो सकती है। अच्छी बात यह है कि लाइफस्टाइल बदलकर इसे कंट्रोल किया जा सकता है। यह दो तरह का होता है, टाइप-1 और टाइप-2 डायबिटीज दोनों के लक्षण लगभग एक जैसे होते हैं। अगर ब्लड शुगर बढ़ गया है तो शरीर कुछ संकेत देता है। अगर ज्यादा भूख लग रही है तो इसका मतलब है कि कोशिकाओं को पर्याप्त ऊर्जा नहीं मिल पा रही है। इसलिए थकान भी लगने लगती है। बार-बार पेशाब जाना भी इसका बड़ा संकेत है। सामान्य व्यक्ति दिन में 4-7 बार पेशाब करता है, लेकिन डायबिटीज में किडनी ज्यादा शुगर बाहर निकालने की कोशिश करती है, तो पेशाब ज्यादा लगती है। इसमें प्यास भी ज्यादा लगती है। मुंह सूखना, स्किन ड्राई और खुजली होना, धुंधला दिखना- ये सब डायबिटीज के कॉमन लक्षण हैं। इसमें अचानक वजन भी कम हो सकता है, क्योंकि शरीर फैट और मसल्स जलाने लगता है। जब ब्लड शुगर कम होता है तो सिरदर्द भी हो सकता है। टाइप-1 और टाइप-2 डायबिटीज में लक्षणों का फर्क-टाइप-1 के लक्षण अचानक और तेजी से दिखने लगते हैं। इसके लक्षण आमतौर पर बच्चों में देखने को मिलते हैं। इसके मुख्य लक्षण- ज्यादा पेशाब, प्यास, थकान और वजन कम हना हैं। टाइप-2 में लक्षण धीरे-धीरे सामने आते हैं, ये कई सालों तक नजर नहीं आते हैं। लोग सोचते हैं कि उन्हें बढ़ती उम्र की वजह से थकान हो रही है। ये टाइप-2 डायबिटीज का संकेत हो सकता है। महिलाओं और पुरुषों में फर्क- महिलाओं और पुरुषों में लक्षण लगभग एक जैसे होते हैं, लेकिन महिलाओं को डायबिटीज होने पर वैजाइनल इंफेक्शन या यूरिन इंफेक्शन ज्यादा हो सकता है। पुरुषों में मसल्स वीकनेस या सेक्शुअल प्रॉब्लम्स के लक्षण दिख सकते हैं। बच्चों में डायबिटीज के शुरुआती संकेत- बच्चों को आमतौर पर टाइप-1 होता है, यह 5-6 की उम्र से लेकर या 11-13 साल की उम्र में होता है। इसके लक्षणों में ज्यादा भूख-प्यास, बार-बार पेशाब, थकान, धुंधला दिखना, चिड़चिड़ापन हो सकता है। लड़कियों में वैजाइनल इंफेक्शन और छोटे बच्चों में डायपर रैश की समस्या हो सकती है। टाइप-2 डायबिटीज से बच्चों को मोटापा हो सकता है, थकान, प्यास, डार्क स्किन जैसे लक्षण भी दिख सकते हैं। प्रेग्नेंसी में जेस्टेशनल डायबिटीज के संकेत- प्रेगनेंसी में डायबिटीज के कोई खास लक्षण नहीं दिखते हैं। थोड़ी ज्यादा प्यास, बार-बार पेशाब, मुंह सूखना या थकान देखने को मिल सकता है। अगर वजन ज्यादा हो या फैमिली हिस्ट्री हो तो डॉक्टर 24-28 हफ्तों

में टेस्ट करते हैं। डायबिटीज का पता लगाने के लिए टेस्ट-ए1सी टेस्ट ब्लड शुगर की औसत बताता है। यह प्रतिशत में आता है- 5.7फीसदी से कमः नॉर्मलः 5.7-6.4फीसदी : प्री-डायबिटीज-6.5फीसदी या ज्यादाः डायबिटीज, डायबिटीज वाले लोगों के लिए 7फीसदी से कम टारगेट अच्छा है। प्रेग्नेंसी में ग्लूकोज चैलेंज टेस्ट होता है, जहां मीठा घोल पिलाकर ब्लड शुगर चेक करते हैं। डायबिटीज की कॉम्प्लिकेशंस के वॉर्निंग साइन- अगर डायबिटीज कंट्रोल न हो, घाव जल्दी नहीं भरते, स्किन में खुजली, यीस्ट इंफेक्शन, वेट गेन, गर्दन-कांख की स्किन डार्क होना, हाथ-पैर सुन्न होना, आंखें कमजोर होना, पुरुषों में इरेक्टाइल डिसफंक्शन जैसे संकेत बताते हैं कि समस्या बढ़ रही है। डॉक्टर से कब कंसल्ट करें? अगर उम्र 45 साल से ऊपर हैं या रिस्क फैक्टर हैं, तो टेस्ट करवाएं। अगर पेट दर्द, बहुत प्यास, सांस तेज, सांस से नेल पॉलिश जैसी गंध आए तो- तुरंत डॉक्टर के पास जाएं। शुरुआत में ही डायग्नोज होने से नर्व डैमेज और हार्ट प्रॉब्लम से बच सकते हैं। डायबिटीज को मैनेज कैसे करें?लाइफस्टाइल टिप्स- डायबिटीज मैनेजमेंट में डेली रूटीन। ब्लड शुगर को कंट्रोल करने के लिए खानपान, एक्सरसाइज, दवाएं और स्ट्रेस मैनेजमेंट जरूरी है। खानपान से ब्लड शुगर होगी कंट्रोल हेल्दी ईटिंग सबके लिए जरूरी है, लेकिन डायबिटीज में और ज्यादा जरूरी है। खाने में कार्ब्स काउंटिंग या प्लेट मेथड यूज करें। प्लेट मेथड में आधी प्लेट नॉन-स्टार्ची सब्जियां, एक चौथाई लीन प्रोटीन और एक चौथाई हेल्दी कार्ब्स लें। स्वीट ड्रिंक्स कम पिएं। फाइबर वाली चीजें जैसे फल, सब्जियां, होल ग्रेन खाएं। रिफाइंड कार्ब्स जैसे व्हाइट ब्रेड और केक कम खाएं।

टी-20 वर्ल्डकप

टी-20 में भारत की दूसरी सबसे बड़ी हार

भारत 2023 के बाद पहली बार आईसीसी इवेंट में हारा,बुमराह हाईएस्ट विकेट टेकर

अहमदाबाद। अहमदाबाद में भारत 2023 के बाद पहली बार किसी आईसीसी इवेंट में मैच हार गया। टी-20 वर्ल्ड कप के सुपर-8 स्टेज में साउथ अफ्रीका ने टीम इंडिया को 76 रन से हराकर उसके 12 मैचों के जीत के सिलसिले पर ब्रेक लगा दिया। यह हार रन के लिहाज से टी-20 इंटरनेशनल में भारत की दूसरी सबसे बड़ी हार भी है। टूर्नामेंट में शानदार फॉर्म में चल रहे जसप्रीत बुमराह ने 3 विकेट लेकर भारत के लिए सबसे ज्यादा विकेट लेने का रिकॉर्ड अपने नाम किया। अफ्रीका के लिए बल्लेबाजी में डेविड मिलर ने 63 रन बनाए। उन्होंने 26 बॉल पर फिफ्टी लगा दी।

टी-20 वर्ल्ड कप में भारत को सबसे बड़ी हार झेलनी पड़ी। इससे पहले 2010 में ऑस्ट्रेलिया (49 रन) और 2016 में न्यूजीलैंड (47 रन) ने भारत को बड़े अंतर से हराया था। यह भारत की टी-20 इंटरनेशनल में दूसरी सबसे बड़ी हार भी है। सबसे बड़ी हार 80 रन से न्यूजीलैंड के खिलाफ वेलिंगटन 2019 में हुई थी।साउथ अफ्रीका के खिलाफ 111 रन पर ऑलआउट होना भारत का टी-20 वर्ल्ड कप इतिहास का तीसरा सबसे कम स्कोर है।

सबसे कम स्कोर 79 (न्यूजीलैंड, 2016) है, जबकि 2021 में दुबई में भी न्यूजीलैंड ने भारत को 110/7 तक रोका था।2023 वनडे वर्ल्ड कप फाइनल में ऑस्ट्रेलिया से हार के बाद भारत आईसीसी टूर्नामेंट में 18 मैचों तक अजेय रहा था।

यह शानदार सिलसिला अहमदाबाद में साउथ अफ्रीका के खिलाफ मिली हार के साथ

टूट गया। वहीं, मल्टी-नेशन टी-20 इंटरनेशनल टूर्नामेंट की बात करें तो भारत 2022 टी-20 वर्ल्ड कप सेमीफाइनल में इंग्लैंड से हारने के बाद पहली बार हारा।

इस दौरान टीम ने 23 मैच खेले, जिसमें 21 जीते (एक जीत सुपर ओवर में), 1 मैच हारा और 1 बेनतीजा रहा। इसके अलावा, टी-20 वर्ल्ड कप में भी भारत का लगातार जीत का क्रम टूटा।

टीम को 12 लगातार मैच जीतने के बाद हार का सामना करना पड़ा।जसप्रीत बुमराह टी-20 वर्ल्ड कप इतिहास में भारत के लिए सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज बन गए। उन्होंने 33 विकेट लेकर अर्शदीप सिंह और रविचंद्रन अश्विन (32-32 विकेट) को पीछे छोड़ा। हार्दिक पंड्या 29 विकेट के साथ चौथे और रवींद्र जडेजा 22 विकेट के साथ पांचवें स्थान पर हैं। वरुण चक्रवर्ती ने टी-20 इंटरनेशनल में लगातार 18 पारियों में विकेट लेकर भारत के लिए नया रिकॉर्ड बना दिया है।

उन्होंने अर्शदीप सिंह (17) का रिकॉर्ड तोड़ा। इस सूची में आशीष नेहरा (13), वॉशिंगटन सुंदर (11) भी शामिल हैं।

यानी लगातार मैचों में विकेट लेने के मामले में वरुण अब भारत के नंबर-1 गेंदबाज बन गए हैं।

डेविड मिलर भारत के खिलाफ टी-20 इंटरनेशनल में सबसे ज्यादा छक्के लगाने वाले बल्लेबाज बन गए। उन्होंने 26 पारियों में 39 छक्के जड़कर ग्लेन मैक्सवेल (38) को पीछे छोड़ दिया। निकोलस पूरन 35 छक्कों के साथ तीसरे स्थान पर हैं।

डेविड मिलर ने 26 गेंदों में अर्धशतक लगाकर भारत के खिलाफ चौथी सबसे तेज फिफ्टी लगा दी।

हालांकि उनसे पहले लिटन दास (21), हेनरिक क्लासन (23) और ट्रैविस हेड (24) तेज फिफ्टी लगा चुके हैं।

दिलचस्प बात यह है कि इन पहले तीनों मुकाबलों में भारत ने मैच जीता था, लेकिन मिलर की फिफ्टी वाला मैच भारत हार गया।

पूरा बचपन हॉस्टल में अकेले दिवाली मनाई,आज भी त्योहार पर घर जाने का मन नहीं करता, बढ़ता डिप्रेशन, अकेलापन

नयी दिल्ली। त्योहार हमारे समाज में खुशी, अपनेपन और सामूहिकता का प्रतीक माने जाते हैं। लेकिन कई लोगों के लिए यह समय खुशी का न होकर उदासी, डिप्रेशन और अकेलेपन का होता

है। जब पूरी दुनिया परिवार के साथ मिलकर खुशियां मना रही होती है, कुछ लोगों के लिए ये वो वक्त होता है, जब पुराना ट्रॉमा और पुराने दर्द फिर से उभर जाते हैं। मनोविज्ञान में इसे 'फेस्टिव ब्लूज' कहा जाता है। विषय पर बात करेंगे एक्सपर्ट- डॉ. द्रोण शर्मा, कंसल्टेंट साइकेट्रिस्ट, आयरलैंड, यूके। यूके, आयरिश और जिब्राल्टर मेडिकल काउंसिल के मेंबर जी से और समझेंगे उपाय सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- बहुत पहले मैंने एक आर्टिकल में पढ़ा था फेस्टिव ब्लूज के बारे में। फेस्टिवल के समय

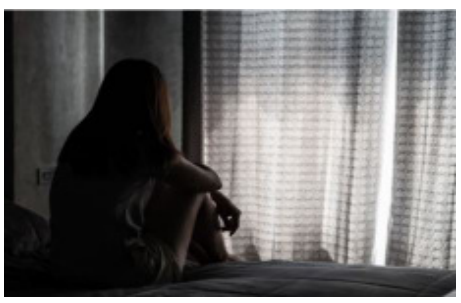

कुछ लोग डिप्रेशन और एंग्जाइटी महसूस करते हैं। वो आर्टिकल पढ़कर मुझे लगा कि मेरे साथ भी तो कुछ ऐसा ही होता है। खासकर दिवाली और होली के टाइम पर मैं बहुत डिप्रेशन महसूस करता हूं। शायद इसका कारण फैमिली के साथ मेरे डिफिकल्ट रिश्ते हैं। मैं पांच साल का था, जब मेरी मां की डेथ हो गई। पापा ने दूसरी शादी कर ली और दूसरी मां ने कभी मुझे और मेरी बहन को अपने बच्चों की तरह एक्सेप्ट नहीं किया। रहते हम एक ही घर में थे, लेकिन मुझे मां का प्यार महसूस नहीं हुआ। पापा भी हम बच्चों से बिल्कुल डिटैच ही रहते थे। 12 साल की उम्र में मैं हॉस्टल पढ़ने चला गया। दिवाली के समय जब सारे बच्चे अपने घर जाते थे, मैं हॉस्टल में ही रहता था। अब मेरी उम्र 33 साल है और मैं दिल्ली में जॉब करता हूं। अभी भी जब फेस्टिवल का टाइम आता है और मैं अपने कुलीग्स को घर जाते या घर पर फैमिली के साथ फेस्टिवल मनाते देखता हूं तो मुझे बहुत डिप्रेशन महसूस होता है। दिवाली के दिन मैं घर पर अकेले ही रहता हूं और देर रात तक ड्रिंक करता रहता हूं। क्या आप मुझे कुछ सुझाव दे सकते हैं कि मैं अवसाद और उदासी की इस फीलिंग से कैसे बाहर निकलूं? बचपन में त्योहार का मतलब सिर्फ पटाखे, मिठाई या छुट्टियों तक सीमित नहीं रहता। यह वह समय होता है, जब बच्चा सबसे ज्यादा जब बाकी बच्चे सजाए-संवारे जाते हैं, उन्हें तोहफे और मिठाई मिलती है, वहीं उपेक्षित बच्चा भीतर से टूट जाता है। पिता का इमोशनली डिटैच होनाः जब पिता खुद भी भावनात्मक रूप से दूर हों, तो बच्चा पूरी तरह अकेला महसूस करता है। त्योहारों पर उसके लिए कोई सुरक्षित कोना नहीं होता। हॉस्टल में अकेलापनः जब 12 साल की उम्र से ही बच्चा त्योहारों पर हॉस्टल में रह जाए, जबकि बाकी बच्चे घर जा रहे हों, तो उसके मन को एक गहरी चोट लगती है कि 'मैं अलग हूं, मेरे पास कोई नहीं है।'इन अनुभवों से त्योहार बच्चे के लिए 'खुशियों' की नहीं बल्कि 'खोई हुई चीजों की याद' बन जाते हैं। एडल्ट लाइफ में फेस्टिव ब्लूज- अमूमन लोग बचपन के ट्रॉमा को एडल्ट जीवन में भी कैरी करते रहते हैं। बच्चा जब बड़ा होता है, जॉब करता है और इंडीपेंडेंट होता है, तब भी त्योहार पर वही पुराना ट्रॉमा ट्रिगर होता है। ऑफिस कुलीग्स परिवार के साथ त्योहार मनाते हैं, सोशल मीडिया पर तस्वीरें डालते हैं। यह सब देखकर उसके भीतर का पुराना खालीपन और गहरा हो जाता है। बचपन का पैटर्न फिर से एक्टिव हो जाता हैः त्योहार, अकेलापन, उपेक्षा, तुलना। नतीजा ये होता है कि त्योहार के दिन वह अकेले अपने कमरे में रहता है, देर रात तक शराब पीता है और डिप्रेशन महसूस करता है। यह केवल एक दिन की बात नहीं है। धीरे-धीरे यह सोच मन में पक्की हो जाती है कि 'त्योहार मेरे लिए नहीं हैं' और व्यक्ति जीवन के सुखद पलों को भी खो देता है।गाइडलाइंस बताती हैं कि बचपन की नकारात्मक भावनात्मक यादें वयस्कता में डिप्रेशन और एंग्जाइटी का सबसे बड़ा ट्रिगर हो सकती हैं। सीबीटी की मदद से सेल्फ हेल्प-त्योहारों के मायने बदलें, नई यादें बनाएं याद रखिए, हम अतीत की घटनाओं को नहीं बदल सकते, लेकिन उनसे जुड़ा अर्थ जरूर बदल सकते हैं। यही सीबीटी (कॉग्निटिव बिहेवियरल थेरेपी) की बुनियादी सोच है।

गुड हैबिट्स- भोजन में ढेर सारी सब्जियां खाने की आदतःसब्जी खाने से दिमाग होता तेज, बढ़ती उम्र, कब्ज, अपच, बीमारियां दूर रहती हैं

नयी दिल्ली। दुनिया में 5 ब्लू जोन हैं। यहां के लोगों की औसत उम्र 100 साल से ज्यादा है। ये लोग लंबे जीवन के लिए 9 नियम

अपनाते हैं। उनमें सबसे खास है कि प्लांट बेस्ड खाना ही खाएंगे। ऐसी सभी चीजें खाएंगे, जो पेड़-पौधों के रूप में प्रकृति ने हमें दी हैं। ये खाने में ज्यादा-से-ज्यादा सब्जियां शामिल करते हैं। इसमें कोशिश ये होती है कि जितने ज्यादा रंगों की सब्जियां खाने में शामिल कर सकें। सब्जियां विटामिन्स, मिनरल्स और फाइबर से भरपूर होती हैं। इनसे मिले न्यूट्रिएंट्स से इम्यून सिस्टम मजबूत होता है और डाइजेस्टिव सिस्टम बेहतर होता है। इससे हार्ट डिजीज, स्ट्रोक और टाइप-2 डायबिटीज जैसी क्रॉनिक बीमारियों का जोखिम कम हो जाता है। खास बात ये है कि इनमें कैलोरी और फाइबर कम होता है। आज 'गुड हैबिट्स' कॉलम में ज्यादा सब्जियां खाने की आदत के बारे में जानेंगे। साथ ही जानेंगे कि- खाने में सब्जियां ज्यादा क्यों होनी चाहिए? ज्यादा

सब्जियां खाने के क्या फायदे हैं? सब्जियां क्यों हैं इतनी खास? सब्जियां हमारे शरीर के लिए एक सुपरफूड की तरह हैं। इनमें विटामिन्स, मिनरल्स, फाइबर और एंटीऑक्सिडेंट्स होते हैं, जो हमें अंदर से मजबूत बनाते हैं। लेकिन ऐसा क्या है जो इन्हें इतना जरूरी बनाता है? विटामिन और मिनरल्स का खजाना- फल और सब्जियां विटामिन ए,सी,ई और मिनरल्स जैसे मैग्नीशियम, जिंक, फॉस्फोरस और फोलिक एसिड से भरपूर होती हैं। पोटेशियम के लिए एवोकाडो, शकरकंद, केला, आलूबुखारा और टोमैटो प्यूरी खाएं। स्वाद और टेक्सचर की ढेरों वैरायटी- हर फल और सब्जी का स्वाद और बनावट अलग होती है। आप चाहें तो तीखे स्वाद वाले प्याज, जैतून और मिर्च ट्राई करें या फिर हल्के स्वाद वाले मशरूम और कॉर्न। मीठा खाने का मन हो तो अंगूर, अनन्नास और आलूबुखारा खाएं और खट्टे स्वाद के लिए नींबू और चकोतरा बढ़िया हैं। फाइबर से भरपूर- अधिकतर फल और सब्जियां फाइबर से भरपूर होते हैं, जो पेट भरने और पाचन को दुरुस्त रखने में मदद करते हैं। ज्यादा फाइबर वाली सब्जियां हैं- मटर, ब्रोकली और फूलगोभी। फाइबर वाले फल हैं- रसभरी, नाशपाती और सेब। कम कैलोरी, कम फैट- अमूमन फल और सब्जियां कम कैलोरी और फैट वाली होती हैं, इसलिए इन्हें ज्यादा मात्रा में खा सकते हैं बिना वजन बढ़ने की चिंता के। उदाहरण के तौर पर, आधा कप अंगूर खाने से आप एक चौथाई कप के मुकाबले 200 से ज्यादा कैलोरी बचा सकते हैं। हां, एवोकाडो, जैतून और नारियल जैसे कुछ अपवाद भी हैं जिनमें थोड़ा ज्यादा फैट होता है। बीमारियों से बचाव- फल और सब्जियों में कुछ खास प्राकृतिक तत्व फाइटोकेमिकल्स होते हैं जो कई बीमारियों से बचाव करते हैं। इन्हें खाने से डायबिटीज टाइप 2, हार्ट अटैक, स्ट्रोक, हाई ब्लड प्रेशर और कैंसर का खतरा कम हो सकता है। खासकर ब्रोकली, पत्ता गोभी, सरसों और जलकुंभी जैसी क्रूसीफेरस सब्जियां कैंसर से बचाव में मददगार मानी जाती हैं। अच्छी सेहत में मददगार- इनमें सैचुरेटेड फैट, नमक और चीनी बहुत कम होती है, इसलिए ये बैलेंस्ड डाइट का हिस्सा बनती हैं। ये वजन कम करने या बढ़ने से बचाने में मदद करती हैं। साथ ही सूजन कम करने, कोलेस्ट्रॉल और ब्लड प्रेशर घटाने में भी असरदार हैं। बहुत कम सोडियम और कोलेस्ट्रॉल- ताजे फल और सब्जियों में सोडियम बहुत कम होता है। जैसे बहुत लोग मानते हैं कि सेलरी में सोडियम ज्यादा होता है, लेकिन एक डंठल में सिर्फ 30 मिलीग्राम होता है, जो सिर्फ 1फीसदी डेली वैल्यू है। सब्जियां कैसे खाएं? अब सवाल यह है कि सब्जियों को अपनी रोज की डाइट में कैसे शामिल करें। बहुत से लोग सोचते हैं कि सब्जियां

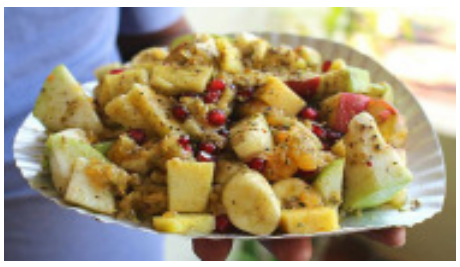

खाना बोरिंग है, लेकिन ऐसा बिल्कुल नहीं है। कुछ आसान तरीके हैं-सब्जियों को सलाद बनाएंः पालक, टमाटर, खीरा और गाजर को मिलाकर एक रंग-बिरंगा सलाद तैयार करें। थोड़ा नींबू और नमक डालें, मजा दोगुना हो जाएगा। सूप में डालकर खाएंः ठंड के दिनों में सब्जियों का सूप बनाएं। गाजर, मटर और ब्रोकली डालकर इसे सेहतमंद और स्वादिष्ट बनाएं। भूनकर खाएंः आलू, शिमला मिर्च और बैंगन को हल्का तेल लगाकर भून लें। यह नाश्ते के लिए भी बढ़िया है। स्मूदी ट्राई करेंः पालक या चुकंदर को फलों के साथ ब्लेंड करें। यह पीने में आसान और पोषण से भरपूर होता है। दाल में मिलाकर खाएंः अपनी रोज की दाल में थोड़ी सी सब्जियां डालें, जैसे लौकी या पालक। स्वाद और सेहत दोनों बेहतर होते हैं। सब्जियां खाने के फायदे - सब्जियां खाने से हमारे शरीर को ढेर सारे फायदे मिलते हैं। इसके कुछ खास फायदे हो सकते हैं- पेट की सेहत बेहतर रहती है सब्जियों में फाइबर भरपूर मात्रा में होता है, जो पाचन तंत्र को दुरुस्त रखता है और कब्ज की समस्या नहीं होने देता। बीमारियों से बचाव होता है सब्जियों में मौजूद एंटीऑक्सिडेंट्स शरीर की कोशिकाओं को नुकसान से बचाते हैं और इम्यून सिस्टम को मजबूत करते हैं। वजन कंट्रोल में रहता है सब्जियां कैलोरी में कम और पोषण में ज्यादा होती हैं, जिससे वजन बढ़ने का खतरा नहीं रहता और शरीर फिट रहता है। दिमाग की कार्यक्षमता बढ़ती है हरी सब्जियों में पाए जाने वाले विटामिन्स और मिनरल्स मस्तिष्क को सक्रिय रखते हैं और याददाश्त बेहतर बनाते हैं। त्वचा निखरती है- विटामिन ए और सी से भरपूर सब्जियां त्वचा को स्वस्थ, चमकदार और जवां बनाए रखने में मदद करती हैं। हर दिन कम से कम 2-3 कटोरी सब्जियां खानी चाहिए। इससे न सिर्फ शरीर स्वस्थ रहता है, बल्कि आपका मूड भी अच्छा रहता है। सब्जियां न खाने का नुकसान- अगर सब्जियां नहीं खाते, तो शरीर को जरूरी तत्व नहीं मिलते। इम्यूनिटी कमजोर होती है, पेट खराब रहता है और वजन बढ़ने का खतरा रहता है। लंबे समय तक ऐसा चला तो डायबिटीज और हार्ट की बीमारियां भी हो सकती हैं। आपके शरीर को कई मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है- पाचन की दिक्कतः फाइबर की कमी से पेट खराब रहता है। कमजोरीः विटामिन्स न मिलने से थकान जल्दी होती है। बीमारियों का खतराः दिल और डायबिटीज जैसी बीमारियां बढ़ सकती हैं। वजन बढ़ताः सब्जियों की जगह जंक फूड खाने से मोटापा हो सकता है। सब्जियों को खाने में कैसे शामिल करें? सब्जियां खाना कोई मुश्किल काम नहीं है। बस थोड़ा सा दिमाग लगाएं और ये आपकी जिंदगी का हिस्सा बन जाएंगी। मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ। पहले मुझे पालक और भिंडी बिल्कुल पसंद नहीं थे। कुछ आसान तरीके आजमाएं और अब मेरी थाली में हर दिन कोई न कोई सब्जी जरूर होती है। सब्जियां खाना सिर्फ सेहत के लिए ही नहीं, पूरी जिंदगी के लिए फायदेमंद है। ये छोटी-सी आदत आपको लंबा और खुशहाल जीवन दे सकती है। आज से ही शुरू करें। अपनी थाली में रंग भरें और देखें कि आपका शरीर और मन दोनों कैसे खिल उठते हैं।

'पॉटरी कला' को 'नया योग' क्यों कहा जा रहा है?

इस रविवार, वाट्सएप मैसेज का बैकलॉग चेक करते समय मैंने अपने एक दोस्त के स्टेटस पर तस्वीर देखी। वह क्ले से बनी कुछ सजावटी व प्राचीन चीजों के बीच खड़ा था। जब मैंने ये जानने के लिए तस्वीर पर क्लिक किया कि वो कहां है, तो मैं हैरान रह गया। सफेद पैंट-शर्ट पहने हुए उसके हाथ क्ले में भिड़े थे और वह लालटेन पकड़े था। जब मैंने उसे फोन किया, तो उसने मुझे एक और तस्वीर भेजी। इसमें हमारे कुछ अन्य परिचित भी उसके साथ रविवार की एक पॉटरी क्लास में पोज दे रहे थे। हर कोई पिछले तीन रविवार की क्लास में खुद की बनाई कलाकृति पकड़े था। पहले हफ्ते में उन्होंने कला सीखी, दूसरे हफ्ते में कप, गिलास या फूलदान बनाया और एक हफ्ते तक सूखने दिया। इस रविवार को उन्होंने उसे रंगा। उनके चेहरों पर सुंदर-

झलक रही थी। तभी मुझे एहसास हुआ कि सिरेमिक व पॉटरी (क्ले या मिट्टी से कलात्मक चीजें बनाना) की दुनिया युवाओं के बीच लोकप्रिय हो रही है। यह स्थिरता व आत्म-अभिव्यक्ति का संगम है, जो उनकी व्यस्त जिंदगी में ताजगी भरी राहत प्रदान करती है। आज के समय में जब वेलनेस ट्रेंड्स तेजी से बदल रहे हैं, प्राचीनतम कलाओं में से एक पॉटरी एक बार फिर से लोकप्रिय हो रही है। कई युवा मानते हैं कि यह कला, मानसिक शांति और आराम का सही मिश्रण है, जो योग या ध्यान के समान एक चिकित्सीय अनुभव प्रदान करती है। चाहे आप रचनात्मक पुनरुत्थान की तलाश में हों, तनाव से राहत चाहते हों, या आत्म-अभिव्यक्ति का माध्यम खोज रहे हों, पॉटरी एक नया क्लासरूम बन गया है। पिछले आठ-दस वर्षों में बन गया है। 1 से 12 हफ्तों के ये कार्यक्रम शहरी युवाओं को आकर्षित कर रहे हैं? पहला कारण इसकी पहुंच है और दूसरा ध्यान केंद्रित करने वाला गुण। पहले क्ले पकाने के लिए भट्ठी एक बड़ी बाधा थी, पर आज ये छोटे एयर कंडीशंड स्टूडियो में उपलब्ध हैं। दबाव में काम करने वाले अधिकांश युवा समझ चुके हैं कि पॉटरी के चिकित्सीय लाभ हैं। मेरे एक मित्र ने कहा, 'ये ध्यान की तरह है, जो आपको दिनचर्या से अलग करने में मदद करता है। 'अधिकांश शिक्षित लोग इस प्राचीन कला की ओर लौट रहे हैं क्योंकि यह न केवल विज्ञान है, जिसमें सामग्री, ऑक्साइड, फायरिंग, ग्लेजिंग का ज्ञान जरूरी है, बल्कि कला भी है, जिसमें पेंटिंग है। आप ताज्जुब कर रहे होंगे कि आखिर क्यों पॉटरी लोकप्रिय वेलनेस ट्रेंड बनता जा रहा है? इसके पीछे कई कारण हैं। 1. माइंडफुलनेस व मेडिटेशनः मिट्टी के साथ काम करने के लिए फोकस की जरूरत है, इससे मानसिक उथल-पुथल कम होती है। बार-बार चाक घुमाकर बर्तन बनाना या हाथ से आकार देना, दोनों ही क्रियाएं ध्यान की तरह शांतिप्रद और थेरेप्यूटिक होती हैं। 2. तनाव में कमीः मिट्टी को आकार देने का स्पर्श अनुभव व रचनात्मक प्रक्रिया दैनिक चिंताओं से ध्यान हटाने में मदद करती है। इसका सीधा असर होता है कि यह कोर्टिसोल को कम करता है। कोर्टिसोल एक ऐसा हार्मोन है जो तनाव और चिंता से जुड़ा होता है। 3. थेरेप्यूटिक लाभः कुछ लोगों के लिए शब्दों में अपनी बात कहना मुश्किल होता है। उनके लिए कुछ बनाना एक प्रकार का संवाद है। इसका एक स्पष्ट लाभ यह है कि यह स्क्रीन से डिस्कनेक्ट कर प्राकृतिक स्व के साथ जुड़ने का मौका देता है। पॉटरी मूर्त कला के माध्यम से आत्म-अभिव्यक्ति की अनुमति देता है। यह प्रक्रिया आत्म-सम्मान और उपलब्धि की भावना को बढ़ा सकती है। 4. शारीरिक लाभः फायदों की सूची में ये सबसे निचले क्रम पर हो सकते हैं। लेकिन मिट्टी को गूंथने, आकार देने और मोल्ड करने की शारीरिक क्रिया उन लोगों के लिए फायदेमंद हो सकती है जो शारीरिक चोटों से उबर रहे हैं। मिट्टी के साथ काम करना फाइन मोटर स्किल्स और हाथ की दक्षता में सुधार कर सकता है। फंडा यह है कि पॉटरी कला युवाओं को उनकी व्यस्त जिंदगी से बचने का मौका देता है। यह कला, माइंडफुलनेस और रिलैक्सेशन का मिश्रण है और इस तरह यह 'नया योग' बनती जा रही है।

बुरी जीत से अच्छा है, शान से हार जाएं

1960 में दक्षिण अफ्रीका में जन्मे केविन कार्टर रंगभेद युग में पले-बढ़े थे। गोरे होने के नाते उन्हें विशेषाधिकारों का आनंद लिया, पढ़ाई की और वायुसेना में शामिल हुए। 1980 में भेदभाव का सामना कर रहे एक अश्वेत का बचाव करने पर उन्हें पीटा गया। यह घटना उनकी जाग्रति का महत्वपूर्ण मोड़ बनी। 1983 में उन्होंने कुछ भयानक बम विस्फोट देखे और हिंसा से खिन्न होकर उन्होंने रंगभेद की भयावहता को उजागर करने के लिए खुद को समर्पित कर दिया। 1984 में वे जोहान्सबर्ग स्टार अखबार के फोटोग्राफर बन गए। अगले 10 वर्षों में केविन को विरोध प्रदर्शनों, अंतिम संस्कारों और पुलिस व रंगभेद विरोधी कार्यकर्ताओं के बीच झड़पों की तस्वीरें लेने के लिए कई बार गिरफ्तार किया गया। 1993 में कार्टर को सूडान में एक असाइनमेंट मिला। सूखे और गृहयुद्ध से बर्बाद इस देश पर दुनिया के मीडिया ने तब तक बहुत कम ध्यान दिया था। केविन संयुक्त राष्ट्र के एक फूड-कैम्प में पहुंचे। वहां उन्होंने एक बच्ची को देखा, जो अकाल से ग्रस्त होकर मिट्टी में पड़ी थी। उसके बगल में एक गिद्ध लालचपूर्ण-धैर्य के साथ

उसके मरने का इंतजार कर रहा था। केविन के शरीर की हर रग उस भयावह दृश्य को देखकर चीख उठी। उन्होंने यंत्रवत ही कैमरा उठाया और अनेक छायाचित्रों में हर कोण से उस बच्ची की पीड़ा को कैमरे में कैद कर लिया। उन्हें इस त्रासदी को दुनिया के सामने लाने वाला भयावह दृश्य मिल गया था। कुछ खबरों के मुताबिक केविन ने गिद्ध को भगा दिया था और उस कृशकाय बच्ची को उठाकर उसके कानों में फुसफुसाते हुए उसे सांत्वना दी थी कि जल्द ही सब ठीक हो जाएगा। फिर उन्होंने बच्ची को बचाव दल को सौंप दिया था। लेकिन उन्हें नहीं पता था कि यह तस्वीर उन्हें आजीवन परेशान करेगी। वापस लौटने पर उन्हें इस तस्वीर के लिए प्रतिष्ठित पुरस्कारों से नवाजा गया। लेकिन प्रशंसा के साथ-साथ आलोचना और पड़ताल भी हुई। कई लोगों ने उनके इरादों पर सवाल उठाए और उन पर अपने निजी मकसद के लिए एक बच्ची की पीड़ा का फायदा उठाने का आरोप लगाया। अप्रैल 1994 में जब केविन को पुलित्जर पुरस्कार मिला तो यह उनके लिए सबसे बड़ी उपलब्धि होनी चाहिए थी। लेकिन वह पुरस्कार उन्हें अपने उस असहनीय अपराध-बोध की याद दिलाने लगा। मुझे 1994 में जोहान्सबर्ग में केविन से मिलने का मौका मिला था, जब मैं नेल्सन मंडेला के दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति बनने की घटना को कवर कर रहा था। इसके चार महीने बाद ही केविन ने 33 साल की उम्र में आत्महत्या कर ली। उसी साल (1994) और उसी देश (सूडान) से आठ साल के गुओर मारिअल गृह युद्ध के दौरान दक्षिण सूडान के एक शरणार्थी शिविर से भाग निकले थे। एक रात सैनिकों ने उनके घर पर छापा मारा था और एक राइफल के प्रहार से उनका जबड़ा तोड़ दिया था। वे बेहोश हो गए। बाद में उन्होंने खुद को एक शरणार्थी शिविर में पाया। उनके परिवार के 28 सदस्य मारे गए, लेकिन वे मिस्र भागने में सफल रहे, और फिर 16 साल की उम्र में स्थायी रूप से अमेरिका चले गए। चूंकि वे बचपन से ही सशस्त्र विद्रोहियों से भागते आ रहे थे, इसलिए 28 की उम्र में उन्हें 2012 के लंदन ओलिम्पिक में मैराथन के लिए प्रतिस्पर्धा करने का अवसर मिला। तब सवाल उठा कि वे किस देश का झंडा लेकर चलेंगे? वे अमेरिकी नागरिक नहीं थे और उनकी मातृभूमि दक्षिण सूडान को 2011 में ही एक स्वतंत्र देश का दर्जा मिला था। वह देश ओलिम्पिक में सम्मिलित होने की पात्रता को पूरा नहीं कर पाया था। यही कारण था कि जब गुओर के समक्ष सूडान का झंडा लेकर चलने की पेशकश की गई, तो उन्होंने विनम्रता से मना कर दिया। क्योंकि सूडान से हुआ गृहयुद्ध ही उनके परिवार की हत्या के लिए जिम्मेदार था। उन्होंने ओलिम्पिक ध्वज उठाया और वे पहले या तीसरे नहीं, बल्कि 47वें स्थान पर रहे। लेकिन पूरी दुनिया और मीडिया ने उनकी 'विजयी' हार का जश्न मनाया, क्योंकि उन्होंने मात्र एक साल पुराने एक देश को पहचान दी थी। फंडा यह है कि तय करें हमारे बच्चों को क्या चुनना चाहिए- एक विजयी हार को अपनाना या एक बुरी जीत का आनंद लेना।

अच्छी सड़कें सिर्फ जोड़ती नहीं हैं, जीवन को भी समृद्ध बनाती हैं

चेन्नई से 300 किलोमीटर दूर-दराज के एक गांव में एक महिला प्रसव पीड़ा में थीं। उन्हें मदद की जरूरत थी। बच्चा जन्म लेने वाला था। लेकिन उन्हें अस्पताल ले जाने के लिए सिर्फ सात किमी की दूरी तय करने में कई घंटे लग जाते। लेकिन यह जोखिम भरा था क्योंकि रास्ते उबड़-खाबड़ थे, कावेरी नदी उफान पर थी और गर्भवती महिला के साथ तैरकर पार करना संभव नहीं था। ऐसे में सबसे आसान और तेज विकल्प था कि दाई को बुलाया जाए। वह दाई उन सैकड़ों पारंपरिक दाइयों में से एक थी जो आसपास के कई गांवों में प्रसव कराती थीं। दाई पहुंची और उन्होंने सबसे पहले महिला से कहा, 'धैर्य रखो, हम मिलकर बच्चे को जन्म देंगे, बस हम पर भरोसा रखो।' इन शब्दों ने महिला को आत्मविश्वास दिया और उन्हें थोड़ा सुकून मिला। गांव की सभी महिलाएं उस घर के सामने इकट्ठा हो गईं। पुरुषों को थोड़ी दूरी पर खड़ा रहने को कहा गया ताकि दाई को कुछ जरूरत हो तो वे बाजार से ला सकें। और अचानक सभी महिलाएं खुशी से झूम उठीं, जैसे क्रिकेट स्टेडियम में छक्का लगने पर होता है। यह खुशी नवजात के रोने की आवाज सुनकर थी। गली के कोने पर खड़े पुरुषों ने भी राहत की सांस ली। कुछ ने आसमान की ओर देखकर भगवान का धन्यवाद किया, तो कुछ ने अपनी गर्दन में लटके लॉकेट को उतारकर सम्मानपूर्वक अपनी आंखों पर लगाया। यह घटना 1940 की है और इसी तरह

मेरी मां का जन्म हुआ था। एक दशक बाद जब उनके सबसे छोटे भाई का जन्म हुआ, तो यह दृश्य दोबारा नहीं देखा गया, क्योंकि तब तक वहां पक्की सड़क बन चुकी थी और लोग बैलगाड़ी में एक घंटे से भी कम समय में गर्भवती महिलाओं को पास के अस्पताल ले जाने लगे थे। हाल ही में जब मैं उस गांव में गया, तो देखा कि अब वही दूरी, आपस में जोड़ती दो लेन की सड़कों के कारण मात्र 15 मिनट में तय हो जाती है। यह पुरानी यादें इस गुरुवार को तब ताजा हो गईं, जब महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे और अजीत पवार के साथ नाशिक के इगतपुरी में हिंदू हृदयसम्राट बालासाहेब ठाकरे महाराष्ट्र समृद्धि महामार्ग के अंतिम चरण का उद्घाटन किया। 701 किमी लंबे नागपुर-मुंबई एक्सप्रेसवे के अंतिम 76 किमी खंड के उद्घाटन के साथ ही महायुति द्वारा राज्य के विकास के लिए किया गया वादा पूरा हुआ। यह एक्सप्रेसवे अब राज्य के बंदरगाह आधारित विकास योजना के तहत 24 जिलों को सीधे और अप्रत्यक्ष रूप से बंदरगाहों से जोड़ता है। अपने भाषण में फडणवीस ने कहा कि उनकी सरकार एक और वादा पूरा करेगी, जो है एक्सेस-कंट्रोल्ड शक्तिपीठ हाईवे का निर्माण। महाराष्ट्र के विभिन्न कोनों में चार शक्तिपीठ हैं। इनके जुड़ने से न केवल तीर्थयात्रियों को लाभ होगा, बल्कि इससे मराठवाड़ा के आर्थिक विकास को बल मिलेगा, जिसकी अमेरिका जैसे विकसित देशों के अंतरराज्यीय हाईवे सिस्टम से तुलना की जा सकती है। इसमें कोई शक नहीं कि अमेरिका की सड़कें दुनिया की सबसे बेहतरीन सड़कों में गिनी जाती हैं। खासकर इंटरस्टेट हाईवे सिस्टम देश की अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करता है। ये सड़कें न केवल परिवहन को सुगम बनाती हैं, बल्कि लॉजिस्टिक लागत को भी कम करती हैं। इससे व्यापारियों को व्यापक बाजार तक पहुंच मिलती है। यह नेटवर्क, उत्पादकों को उपभोक्ताओं से जोड़ता है, सुरक्षा में सुधार करता है और आर्थिक उत्पादकता को बढ़ाता है। इससे जीवन स्तर में भी सुधार होता है। सड़कों के निर्माण से स्वास्थ्य सेवाएं भी अंतिम व्यक्ति तक पहुंचती हैं, जो मानव जाति के लिए एक बड़ा लाभ है। इसके अलावा, सड़क नेटवर्क पर्यटन को बढ़ावा देता है, जिससे होटल, रेस्टोरेंट और मनोरंजन जैसे संबंधित उद्योगों को बढ़ावा मिलता है। फंडा यह है कि अच्छी सड़कों का निर्माण केवल कनेक्टिविटी नहीं बढ़ाता, बल्कि जीवन को भी समृद्ध बनाता है। इससे न केवल व्यक्ति, बल्कि पूरा देश भी समृद्ध होता है, क्योंकि इनसे व्यापार और वाणिज्य में उछाल आता है।

भारत अब केवल कूटनीति पर ही निर्भर नहीं रहने वाला है

अब जब ऑपरेशन सिंदूर को एक महीना पूरा होने आया है, उससे जुड़े कुछ निष्कर्षों को ठीक से समझ लेना जरूरी है। भारत की सेना ने पाकिस्तानी क्षेत्र में आतंकवादी ठिकानों और अन्य फेसिलिटीज पर जोरदार लेकिन ऐहतियाती और टारगेटेड हमला किया था।यहां तक ??कि आक्रमण का समय भी रात को इसलिए चुना गया ताकि नागरिकों को होने वाली क्षति से बचा जा सके। पाकिस्तान हाई-अलर्ट पर था, इसके बावजूद भारत ने सफलतापूर्वक उसकी डिफेंसिव-लाइंस को

भेद दिया और अपने लक्ष्यों पर प्रहार करके कुछ आतंकवादियों का खात्मा करने में सफलता पाई। याद रहे कि इन आतंकवादियों के अंतिम संस्कार में उच्च-स्तरीय पाकिस्तानी अधिकारी शामिल हुए थे।इस ऑपरेशन के बाद पाकिस्तान से भारत के इंगेजमेंट्स की शर्तें हमेशा के लिए बदल गई हैं, क्योंकि अब भारत ने सैन्य-कार्रवाई को लेकर झिझक छोड़ दी है। एक अरसे तक कश्मीर मुद्दे के 'अंतरराष्ट्रीयकरण' के अंदेशे ने भारत को निरर्थक कूटनीतिक गतिविधियां अपनाने के लिए प्रेरित किया था, लेकिन उनसे हमें बहुत कम हासिल हो सका। यहां तक ??कि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की आतंकवाद प्रतिबंध समिति ने भी लंबे समय तक पाकिस्तान को अपने एक स्थायी सदस्य की छत्रछाया में रहने की अनुमति दी है।भारत अंतरराष्ट्रीय कूटनीति को छोड़ नहीं रहा है, लेकिन अब वह केवल उसी पर निर्भर भी नहीं रहेगा। इसके बजाय, भारत अब आतंकवाद का सैन्य-बल से जवाब देगा और किसी भी जवाबी कार्रवाई का स्पष्ट और दृढ़ संकल्प के साथ सामना भी करेगा। लेकिन भारत पाकिस्तान को उसके परमाणु हथियारों की धौंस दिखाने की अनुमति नहीं देने वाला।2016 में सीमा पार सर्जिकल स्ट्राइक से लेकर 2019 में खैबर पख्तूनख्वा में हवाई हमले तक, भारत ने अपने अभियानों के दायरे का उत्तरोत्तर विस्तार किया है और ऐसा करते हुए नियंत्रण रेखा और अंतरराष्ट्रीय सीमा दोनों को लांघा है। ऑपरेशन सिंदूर के तहत पाकिस्तान के गढ़ में प्रहार किए गए। भारत ने दिखाया है कि आतंकवाद का मुकाबला परमाणु-युद्ध को आमंत्रित किए बिना भी एक संतुलित सैन्य-प्रतिक्रिया से किया जा सकता है।पाकिस्तान का सैन्य नेतृत्व अब जब भविष्य में कश्मीर या अन्य जगहों पर तबाही मचाने के लिए आतंकवादियों को भेजने पर विचार करेगा, तो पहले उसे खुद से पूछना होगा कि क्या वह भारत के जवाबी हमले के लिए भी तैयार है? उलटे इससे पाकिस्तान के लोगों को पानी की किल्लत हो सकती है। भारत ने सिंधु जल संधि को स्थगित करके यही संदेश दिया था।जहां उसके बाद से भारत ने जलप्रवाह को मोड़ने के लिए कोई इच्छा नहीं दिखाई है, लेकिन इस संदेश ने उपमहाद्वीप की भू-राजनीति को मौलिक रूप से बदल दिया है। भारत अब शांति के लिए बातचीत भर नहीं कर रहा है; वह पानी की निरंतर आपूर्ति के बदले में आतंकवाद की समाप्ति की मांग भी कर रहा है।ऑपरेशन सिंदूर के जरिए भारत ने दुनिया को यह भी याद दिलाया है कि पाकिस्तान के आतंकवाद से कितने गहरे ताल्लुक हैं। युद्ध विराम को अंजाम देने वाली परदे के पीछे की बातचीतों के बारे में नए विवरण निस्संदेह सामने आएंगे, लेकिन यह निर्विवाद है कि यह भारतीय सैन्य दबाव के बिना संभव नहीं था।इसके बाद अब निकट-भविष्य में भारत और पाकिस्तान के द्विपक्षीय संबंधों में कोई खास बदलाव होने की संभावना नहीं है, क्योंकि ऐसी कोई भी बातचीत- खासकर कश्मीर मुद्दे पर- फिलहाल दूर की संभावना है।वैसे भी कश्मीर भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव का मूल कारण नहीं है, यह तो पाकिस्तान द्वारा भारतीय क्षेत्र पर अपने दावों को सही ठहराने के लिए फैलाया गया एक मिथक है। यह नैरेटिव एक ऐसे कट्टरपंथी तर्क पर आधारित है- जिसे हाल ही में पाकिस्तान के सेना प्रमुख आसिम मुनीर ने दोहराया था- कि मुसलमान गैर-मुस्लिम बहुसंख्यक देश में नहीं रह सकते।भारत व पाकिस्तान में कोई तुलना नहीं है। भारत की जीडीपी पाकिस्तान से 11 गुना अधिक है और उसकी सैन्य-श्रेष्ठता के आगे भी पाकिस्तान नहीं टिकता। पाकिस्तान में उसकी फौज को हासिल अत्यधिक अधिकार, राष्ट्रीय बजट पर नियंत्रण, चीन और तुर्किए के साथ रणनीतिक गठबंधन उसे सशस्त्र संघर्ष को बनाए रखने के लिए शक्तिशाली उपकरण प्रदान करते हैं, जबकि किसी भी पारंपरिक युद्ध में भारत हमेशा पाकिस्तान पर न केवल जीत हासिल करेगा, बल्कि उसे काफी नुकसान भी पहुंचा सकता है। भारत ने सीमापार आतंकवाद का सामना करने में जैसी दृढ़ता दिखाई, उस पर वह गर्व कर सकता है।अब भारत ने सैन्य-कार्रवाई को लेकर झिझक छोड़ दी है। एक अरसे तक कश्मीर मुद्दे के 'अंतरराष्ट्रीयकरण' के अंदेशे ने भारत को निरर्थक कूटनीतिक प्रक्रियाएं अपनाने के लिए प्रेरित किया था, लेकिन उनसे हमें क्या हासिल हुआ? (शशि थरूर)

आपका टैरेस भविष्य में आपको 'पॉवर-फुल' बना सकता है!

हमने परिवहन में इलेक्ट्रिक कारों के विचार को स्वीकार कर लिया है। हमने पेसमेकर के विचार को भी अपना लिया है, जिसे दिल की धड़कनों को स्थिर रखने के लिए डिजाइन किया गया है। लेकिन अब अगले स्तर पर जाने के लिए तैयार हो जाइए।आने वाले समय में इलेक्ट्रिक विमान भी होंगे और वही बिजली रुमेटॉइड आर्थराइटिस जैसी बीमारियों से लेकर ग्लियोब्लास्टोमा जैसे मुश्किल से इलाज होने वाले मस्तिष्क कैंसर और पैंक्रियाटिक कैंसर को ठीक करने के लिए भी तैयार हो रही है!जी हां, न केवल बीमारियों के संभावित उपचार के रूप में, बल्कि नई ग्रीन-टेक्नोलॉजी को अपनाकर 2050 तक ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करने के अपने जलवायु-लक्ष्य तक पहुंचने में एविएशन क्षेत्र की मदद करने के लिए भी बिजली तैयार हो रही है।टोरंटो से 135 किमी दूर ओंटारियो के लिंडसे में एक छोटे-से हवाई अड्डे पर आपका स्वागत है। यहां होराइजन एयरक्राफ्ट लिमिटेड नामक कंपनी चुपचाप

दुनिया का पहला हाइब्रिड इलेक्ट्रिक वर्टिकल टेकऑफ और लैंडिंग विमान बना रही है।इसे 'ईवीटीओएल विमान' के नाम से जाना जाता है! खोज और बचाव कार्यों, टाइट लैंडिंग्स, छोटे समूहों और क्षेत्रीय उड़ानों के लिए डिजाइन किए गए होराइजन का सात सीटर विमान पायलट सहित किसी हेलीकॉप्टर की तरह टेकऑफ और लैंड करता है, लेकिन वह 450 किलोमीटर प्रति घंटे से अधिक की गति से यात्रा करने में सक्षम है। कंपनी के सीईओ ब्रैंडन रॉबिन्सन को भरोसा है कि अगले 24 महीनों में उड़ान परीक्षण शुरू करने के लिए एक फुल-स्केल प्रोटोटाइप तैयार हो जाएगा।यदि आप 'ईवीटीओएल विमान' की मदद से दो घंटे की यात्रा करके अमेरिका के सिनसिनाटी विश्वविद्यालय जाते हैं, जो कि वहां से 800 किमी दूर है और पोर्ट्समाउथ, जो कि 900 किमी दूर है, तो आप नोवोक्योर नामक ऑन्कोलॉजी कंपनी के मुख्यालय में पहुंच जाएंगे।वे संयुक्त रूप से पता लगा रहे हैं कि डिवाइस के आकार को कैसे छोटा किया जाए और इलेक्ट्रिक फील्ड्स और प्लेसेस को ऐसे कैसे ?उपयोग किया जाए कि इससे कैंसर के इलाज में मदद ली जा सके। उन्होंने पहले से ही ऐसी तकनीक विकसित कर ली है, जो ट्यूमर के विकास को धीमा करने के लिए शरीर के सेल-डि?वीजन में इलेक्ट्रू?किल फोर्सेस को बाधित करती है।शरीर में विद्युत-घटकों के होने का यह नया विचार हमारे भविष्य के इलाज के तरीकों के बारे में हमारी सोच को बदल रहा है। नोवोक्योर के सीईओ एशले कॉर्डोवा का तो यही मानना ??है। 62 वर्षीय मैकेनिकल इंजीनियर टिम नुगेंट जैसे ग्लियोब्लास्टोमा के रोगी पहले ही अपने सिर पर इलेक्ट्रोड्स युक्त पैचेस पहन रहे हैं, जो एक बैटरी पैक से इलेक्ट्रोड्स डिलीवर करते हैं।इसके पीछे यह सोच है कि सेल-डिवीजन को बाधित करने के लिए कम तीव्रता वाले इलेक्ट्रिकल फील्ड्स का उपयोग किया जाए। इनमें से कुछ निष्कर्ष अभी मानव परीक्षण के चरण में हैं। यह बताता है कि भविष्य में नई तकनीकें इस बात का दायरा बढ़ाने जा रहे हैं कि कैसे बिजली हमारे दैनिक जीवन में और महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। हो सकता है बिजली कैंसर का इलाज करने में कामयाब हो जाए।आने वाले वर्षों में हमारे जीवन का हिस्सा बन सकने वाली ये वैश्विक गतिविधियां एक प्रमुख बदलाव की ओर इशारा करती हैं।

एक लोकतंत्र में जनता को विश्वास में लेना जरूरी है

अक्टूबर 1962 में चीन ने भारत के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया था। सरकार ने राष्ट्रीय आपातकाल घोषित किया। उस समय संसद में सबसे छोटी पार्टियों में से एक जनसंघ से पहली बार राज्यसभा सांसद बने 36 वर्षीय एक युवा नेता ने प्रधानमंत्री नेहरू से संसद का विशेष सत्र बुलाने का अनुरोध किया। उनका नाम अटल बिहारी वाजपेयी था। पं. जवाहरलाल नेहरू की कांग्रेस सरकार को उस समय लोकसभा में दो-तिहाई बहुमत प्राप्त था। 72 वर्ष के नेहरू वाजपेयी से ठीक दोगुनी आयु के भी थे। लेकिन नेहरू ने उनके अनुरोध पर सहमति जताई और अपनी ही पार्टी के सदस्यों के इस सुझाव को खारिज कर दिया कि यह एक 'गुप्त सत्र' होना चाहिए। जब ??संसद की बैठक हुई, तो वाजपेयी ने सरकार पर तीखा हमला किया। लेकिन नेहरू ने इसे देशभक्ति के खिलाफ नहीं माना। इतिहास को हमारे लिए मार्गदर्शक की भूमिका निभानी चाहिए। जब ऑपरेशन सिंदूर चल रहा था, तो भारत के लोग सरकार के साथ एकजुट थे और हमारे बहादुर सशस्त्र बलों का पूरा समर्थन किया गया, जिन्होंने सफलतापूर्वक लड़ने के लिए अपनी जान की बाजी लगा दी। हालांकि, अब जब युद्ध विराम हो गया है, तो ऑपरेशन से संबंधित किसी वैध सवाल को यह कहकर नहीं टाला जा सकता कि यह राष्ट्र-विरोधी है। लोकतंत्र में सरकार को राष्ट्रीय हित की सीमाओं के भीतर लोगों को विश्वास में लेना चाहिए और किसी सवाल को टालना नहीं चाहिए। खास तौर पर, इसको लेकर बहुत प्रासंगिक सवाल उठ रहे हैं कि युद्ध को अचानक क्यों समाप्त कर दिया गया। युद्ध में हमने कितने विमान खोए या नहीं खोए, इसका सटीक विवरण महत्वपूर्ण नहीं है। क्योंकि किसी भी युद्ध में दोनों पक्षों को कुछ ना कुछ नुकसान तो होगा ही, और हमारी सरकार ने पाकिस्तान में महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानों को हुए नुकसान के पर्याप्त विजुअल प्रमाण भी उपलब्ध कराए हैं। लेकिन अब सार्वजनिक वृत्त में इस बात पर कुछ गंभीर विरोधाभास सामने आए हैं कि युद्ध विराम कैसे और क्यों हुआ। अमेरिकी वाणिज्य मंत्री हॉवर्ड लुटनिक ने 23 मई को अमेरिकी अंतरराष्ट्रीय व्यापार न्यायालय में शपथ लेकर कहा कि भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध विराम 'केवल तभी संभव हो सका' जब ट्रम्प ने उसमें हस्तक्षेप किया और 'एक फुल-स्केल परमाणु युद्ध को टालने' के लिए दोनों देशों को व्यापार-पहुंच की पेशकश की। हालांकि इससे पहले 13 मई को भारतीय विदेश मंत्रालय के आधिकारिक प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने सार्वजनिक तौर पर इसके ठीक उलट बात कही थी। अपनी प्रेस ब्रीफिंग में उन्होंने कहा कि 7 से 10 मई के बीच भारतीय और अमेरिकी नेताओं के बीच केवल 'बातचीत' हुई थी और 'व्यापार के मुद्दों पर कोई चर्चा नहीं हुई थी।' जायसवाल ने आगे कहा कि युद्ध विराम भारत और पाकिस्तान के बीच 'सीधे संपर्क' के जरिए हुआ था, 'अमेरिकी मध्यस्थता के जरिए नहीं'। पाठक इस बात से सहमत होंगे कि अमेरिका के सबसे वरिष्ठ मंत्रियों में से एक के द्वारा न्यायालय में शपथ लेकर कही गई बात और हमारे आधिकारिक प्रवक्ता द्वारा प्रेस वार्ता में दिया गया बयान-दोनों एक-दूसरे के बिल्कुल विपरीत हैं। भारतीय जनता इन विपरीत रुखों को कैसे समझे? यह भी रहस्य बना हुआ है कि राष्ट्रपति ट्रम्प युद्ध विराम की घोषणा कैसे कर सकते हैं, जबकि हमारे आधिकारिक प्रवक्ता ने सार्वजनिक रूप से कहा है कि भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध विराम 'प्रत्यक्ष संपर्क' के माध्यम से हुआ है। फिर इस मामले में अमेरिका की क्या भूमिका थी? युद्ध कब छेड़ा जाए और युद्ध को समाप्त करने का सबसे अच्छा समय कौन-सा है- इसको लेकर हमें निर्वाचित सरकार पर भरोसा करना चाहिए। लेकिन सरकार को भी और अधिक पारदर्शी होना चाहिए। ऐसा कहना 'पाकिस्तानी एजेंट' होना नहीं है। अगर सार्वजनिक क्षेत्र में सूचना पर तथ्यात्मक स्पष्टीकरण का प्रावधान है, तो जनता को इसे पूछने का अधिकार है। चुनावी लाभ के लिए तिरंगा यात्रा निकालना इसका उत्तर नहीं है। युद्ध का पक्षपातपूर्ण राजनीतिकरण भले राजनीति के लिए आकर्षक हो, लेकिन इसमें कुछ सतहीपन और अवसरवादिता की झलक मिलती है। लोकतंत्र में परिपक्व-संवाद उसकी मजबूती का प्रतीक है, कमजोरी का नहीं। युद्ध विराम का अमेरिकी संस्करण हमारे संस्करण से अलग क्यों है- सरकार को इसे स्पष्ट करना चाहिए, या तो संसद के विशेष सत्र के माध्यम से या सर्वदलीय ब्रीफिंग के जरिए। अतीत में नेहरू और वाजपेयी द्वारा स्थापित ऐतिहासिक उदाहरण को हमें नहीं भूलना चाहिए। अब जब युद्ध विराम हो गया है, तो ऑपरेशन ??सिंदूर से संबंधित किसी वैध सवाल को यह कहकर नहीं टाला जा सकता कि यह राष्ट्र-विरोधी है। सरकार को राष्ट्रीय हित की सीमाओं के भीतर लोगों को विश्वास में लेना चाहिए। (ये लेखक के अपने विचार हैं।)

एपस्टीन फाइल्स

अमेरिकी यौन अपराधी का विमान खस्ता हालत में, नाबालिग लड़कियों को ले जाता था

अडल्ट नॉवेल से 'लोलिता' नाम मिला

अमेरिका।अमेरिकी यौन अपराधी जेफ्री एपस्टीन का निजी विमान 'लोलिता एक्सप्रेस' अब दक्षिणी अमेरिका के एक एयरक्राफ्ट यार्ड में जर्जर हालत में खड़ा है। करीब छह दशक पुराना यह बोइंग 727 अब दोबारा कभी उड़ान नहीं भरेगा। करीब 60 साल पुराना और 133 फीट लंबा लोलिता एक्सप्रेस कभी महंगी साज-सज्जा और निजी केबिन के लिए जाना जाता था। अब इसकी बाहरी सतह पर जंग और गंदगी की परत जमी है। इंजन वर्षों पहले हटा दिए गए, जिससे यह स्थायी रूप से जमीन पर खड़ा है। अभियोजन पक्ष के मुताबिक, इस विमान का इस्तेमाल नाबालिग लड़कियों को न्यूयॉर्क और फ्लोरिडा ले जाने में किया गया। पीड़ितों ने बयान दिए कि उड़ानों के दौरान भी शोषण हुआ। एक सर्वाइवर वर्जीनिया जिउफ्रे ने भी दावा किया था कि उनके साथ विमान में यौन उत्पीड़न हुआ। रिपोर्ट के मुताबिक, विमान के भीतर अब भी फ्लाइट मैनुअल, फाइलें, नैपकिन और प्लेसमैट रखे हैं, जिन पर नंबर छपा है। बाथरूम कैबिनेट में टॉयलेट्री आइटम और निजी सामान पड़े हैं।मुख्य सोने वाले हिस्से में अब भी गद्दा मौजूद है, जिसके ऊपर इमरजेंसी ऑक्सीजन मास्क लटके हैं।

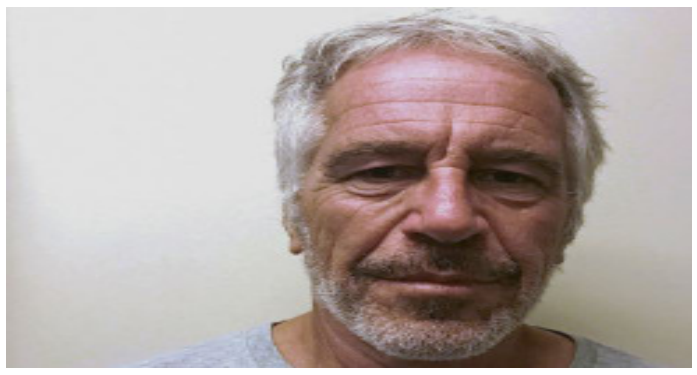

लाल रंग के अपहोल्स्ट्री वाले सीटिंग लाउंज अब धूल से ढंके हैं। रिकॉर्ड के अनुसार, 2001 में एपस्टीन से जुड़ी एक कंपनी ने यह विमान खरीदा था। 2019 में संघीय सेक्स-ट्रैफिकिंग आरोपों में उसकी गिरफ्तारी से ठीक पहले मालिकाना हक बदला गया। इसके बाद यह कई एविएशन कंपनियों के जरिए ट्रांसफर हुआ।

हालांकि पहले इसे स्क्रैप करने की योजना थी, लेकिन अब तक इसे पूरी तरह तोड़ा नहीं गया है। विमान को 'लोलिता एक्सप्रेस' उपनाम इसलिए दिया गया क्योंकि आरोप थे कि इसमें नाबालिग लड़कियों की तस्करी हुई। यह नाम 1955 के अडल्ट नॉवेल 'लोलिता' से लिया गया है, जिसमें एक पुरुष की 12 साल की लड़की के प्रति आसक्ति की कहानी है।

अफगानिस्तान पर एयरस्ट्राइक कर 80 लड़ाके मार डाले,टीटीपी-आईएस को टारगेट किया

इस्लामाबाद। यह समझौता अफगानिस्तान में 2001 से चल रहे युद्ध को समाप्त करने और अमेरिकी बलों की वापसी का रास्ता बनाने के लिए किया गया था।तालिबान ने प्रतिबद्धता जताई कि वह अफगानिस्तान की जमीन को अमेरिका और उसके सहयोगी देशों की सुरक्षा के लिए खतरा पैदा करने वाले किसी भी समूह या व्यक्ति को इस्तेमाल नहीं करने देगा। इसमें विशेष रूप से अल-कायदा और अन्य अंतरराष्ट्रीय आतंकवादी संगठनों से संबंध तोड़ने और उन्हें अफगानिस्तान में भर्ती, प्रशिक्षण, फंडिंग या हमले की अनुमति न देने का वादा शामिल था। समझौते के बाद अमेरिका ने 2021 में अपनी सेना वापस बुला ली, जिसके बाद तालिबान ने तेजी से काबुल पर कब्जा कर लियाअफगानिस्तान के रक्षा मंत्रालय ने सही समय पर पाकिस्तान को जवाब देने की चेतावनी दी है। मंत्रालय ने इन हमलों को अफगानिस्तान की गोपनीयता नीति का उल्लंघन बताया। अफगान सूत्रों के अनुसार पक्तिका में एक धार्मिक स्कूल पर ड्रोन हमला हुआ और नांगरहार प्रांत में भी कार्रवाई की गई। पाकिस्तान लंबे समय से तालिबान सरकार से मांग करता रहा है कि वह अपनी जमीन का इस्तेमाल किसी भी आतंकी संगठन को न करने दे। इस्लामाबाद का आरोप है कि टीटीपी अफगानिस्तान से संचालित हो रहा है, जबकि तालिबान इन आरोपों से इनकार करता रहा है।एयरस्ट्राइक से कुछ घंटे पहले खैबर पख्तूनख्वा के बन्नू जिले में सुरक्षा काफिले पर आत्मघाती हमला हुआ, जिसमें दो सैनिक, जिनमें एक लेफ्टिनेंट कर्नल भी मारे गए। 16 फरवरी को पाकिस्तान के बाजौर में विस्फोटकों से भरी गाड़ी सुरक्षा चौकी से टकरा दी गई थी। इस हमले में 11 सैनिक और एक बच्चे की मौत हुई। अधिकारियों ने हमलावर को अफगान नागरिक बताया था। इससे पहले 6 फरवरी को इस्लामाबाद में जुमे की नमाज के दौरान शिया मस्जिद (इमामबाड़ा) में आत्मघाती हमला हुआ था। पाकिस्तानी अखबार द डॉन के मुताबिक, हमले में 31 लोगों की मौत हो गई है और 169 घायल हुए हैं। इस हमले की जिम्मेदारी इस्लामिक स्टेट ने ली थी।अक्टूबर में सीमा पर हुई झड़पों में दोनों तरफ के सैनिकों और नागरिकों की मौत के बाद से पाकिस्तान और अफगानिस्तान के रिश्ते तनावपूर्ण बने हुए हैं। कतर की मध्यस्थता से 19 अक्टूबर को युद्धविराम हुआ था, लेकिन तुर्किये के इस्तांबुल में वार्ता औपचारिक समझौते तक नहीं पहुंच सकी।

दरअसल, 9 अक्टूबर को अफगानिस्तान की राजधानी काबुल में तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान के ठिकानों पर हवाई हमले हुए थे। तालिबान का कहना था कि ये हमले पाकिस्तान ने किए थे। हालांकि पाकिस्तान ने साफ तौर पर ये नहीं कहा कि ये हमले उसने किए, लेकिन उसने तालिबान को चेतावनी दी कि वह अपनी जमीन पर टीटीपी को पनाह न दे।अफगानिस्तान में 2021 में तालिबान के सत्ता में आने के बाद से टीटीपी ने पाकिस्तानी सुरक्षा बलों के खिलाफ गुरिल्ला युद्ध छेड़ रखा है। टीटीपी को पिछले बारह साल में पाकिस्तान के लिए सबसे बड़ा आतंकवादी खतरा माना जा रहा है। पाकिस्तान का आरोप है कि टीटीपी के लड़ाके सीमा पार अफगानिस्तान से ट्रेनिंग लेकर पाकिस्तान लौटते और हमला करते हैं। हालांकि तालिबान दावा करता है कि वह टीटीपी का समर्थन नहीं करता। पाकिस्तान इंस्टीट्यूट फॉर पीस स्टडीज के अनुसार, देश में आतंकवादी हमले 2015 के बाद सबसे ज्यादा हो गए हैं और टीटीपी ही इसकी मुख्य वजह है। वैश्विक आतंकवाद सूचकांक के इन हमलों की वजह से ही पाकिस्तान आतंकवाद प्रभावित देशों की सूची में दूसरे नंबर पर पहुंच गया है।

नेपाल में पत्नी की मौत, पति ने मांगे 100 करोड़,बोले कौन हैं जिम्मेदार

काठमांडू। 8 सितंबर 2025, नेपाल में सरकार के खिलाफ जेन जी प्रोटेस्ट शुरू हुआ। अगले ही दिन प्रोटेस्ट हिंसक हो गया। सरकारी इमारतें, होटल और दुकानें प्रदर्शनकारियों के निशाने पर आ गए। राजधानी काठमांडू में होटल हयात रीजेंसी को भी निशाना बनाया गया। चारों तरफ गोलियों की आवाज और आग की लपटें थीं। इसी होटल में भारत के गाजियाबाद से आए रामबीर सिंह गोला और उनकी पत्नी राजेश देवी रुके थे। दोनों चौथी बार नेपाल तीर्थ करने पहुंचे थे। हर बार दोनों साथ आते और साथ लौटते थे लेकिन इस बार रामबीर सिंह को पत्नी के शव के साथ लौटना पड़ा। क्योंकि हिंसा के दौरान उनकी मौत हो गई। इन सबके करीब 5 महीने बाद अब 27 जनवरी 2026 को रामबीर सिंह ने दिल्ली हाईकोर्ट में एक याचिका दायर की। उन्होंने नेपाल में पत्नी की मौत के लिए इंडियन एंबेसी, भारतीय विदेश मंत्रालय और होटल हयात रीजेंसी को जिम्मेदार बताया है और 100 करोड़ जुर्माने की मांग की है। रामबीर कहते हैं, 'स्टाफ ने हमसे कहा था कि हम होटल में पूरी तरह सेफ हैं, लेकिन जब आग लगी तो स्टाफ सबसे पहले भाग गया। इंडियन एंबेसी को घंटों कॉल किया, लेकिन किसी ने फोन नहीं उठाया। मेरी पत्नी की मौत नेचुरल नहीं, होटल, इंडियन एंबेसी और भारतीय विदेश मंत्रालय की लापरवाही से हुई है।'गाजियाबाद के रहने वाले रामबीर सिंह गोला की कहानी किसी ट्रेजिडी फिल्म से कम नहीं है। वे पूरा घटनाक्रम बताते हुए कहते हैं, '7 सितंबर को हम काठमांडू पहुंचे थे। अगले ही दिन 8 सितंबर को नेपाल सरकार के खिलाफ यहां बड़ा जेन जी आंदोलन होने लगा।' '9 सितंबर को हमें काठमांडू से मिथिला के लिए निकलना था। सुबह निकलने की तैयारी भी हो गई थी। तभी पता चला कि प्रदर्शन हिंसक हो गया है। होटल के नीचे प्रदर्शनकारियों ने आग लगानी शुरू कर दी है। होटल स्टाफ ने हमें दूसरे से चौथे फ्लोर पर शिफ्ट कर दिया और भरोसा दिलाया कि यहां हम सेफ हैं। हमें भी लगा था कि 5 स्टार होटल है तो ये बात जिम्मेदारी से कह रहे होंगे।' रामबीर आगे बताते हैं, 'जब हिंसा ज्यादा भड़क गई तो हमने जनरल मैनेजर और दूसरे स्टाफ को ऊपर से आवाज लगाई लेकिन सब गायब थे। होटल का सारा स्टाफ जा चुका था। मैं और मेरी पत्नी दोनों सुबह 9 बजे से होटल के कमरे में बंद थे। हमने मदद के लिए नेपाल में इंडियन एंबेसी को भी 30 से 40 कॉल किए लेकिन फोन नहीं उठा। हो गया। हमने एंबेसी में घंटों कॉल किया लेकिन न फोन उठा और न कॉलबैक आया। क्योंकि एंबेसी से भी सब गायब थे।' 'अगर इंडियन एंबेसी में हमारा फोन उठा लिया जाता तो पत्नी जिंदा होतीं। हमने से लापरवाही का मामला है।' हमने पूछा कि लापरवाही किसने की? जवाब मिला, 'काठमांडू में मौजूद इंडियन एंबेसी के एंबेसडर और को-एंबेसडर ने की। जिस होटल हयात रीजेंसी में ये लोग ठहरे थे, वो तो जिम्मेदार है ही। बाकी लापरवाही एंबेसी को निर्देश देने वाले विदेश मंत्रालय के संचालक यानी विदेश मंत्री की भी है।' एडवोकेट चौधरी कहते हैं, 'हमारी सरकार ने युद्ध के हालात में उन देशों से भी भारतीय स्टूडेंट्स निकाल लिए, जहां पासपोर्ट और वीजा की जरूरत थी। फिर नेपाल तो पड़ोस में था। वहां फ्लाइट भेजने की भी जरूरत नहीं थी।'एडवोकेट चौधरी इसे डिटेल में समझाते हुए कहते हैं, 'मेनका गांधी बनाम यूनियन गवर्नमेंट का एक केस है। इसमें भी वही सवाल था, जो इस केस में है। क्या दूसरे देश में जाने के बाद भी किसी भारतीय नागरिक के राइट टु लाइफ की रक्षा भारत सरकार करेगी? तो उस केस में तय हुआ था कि हां, भारत सरकार का ये कर्तव्य है कि अपने नागरिकों की सुरक्षा सिर्फ देश के अंदर ही नहीं, दूसरे देश में भी करे।' 'केस के फैसले में साफ लिखा है कि दूसरे देशों में एंबेसी बनाई ही इसलिए जाती है कि अपने देश के नागरिकों के हितों और उनकी जान की सुरक्षा कर सकें। एंबेसी को बाकायदा एक जमीन का टुकड़ा दिया जाता है। इस जमीन के टुकड़े पर बनी भारतीय एंबेसी, भारत का ही हिस्सा मानी जाती है, ये भारत का ही प्रतिनिधित्व करती है।' 'इसका काम ही है कि उस देश में पढ़ने, नौकरी करने, घूमने या तीर्थयात्रा करने आए अपने लोगों के अधिकारों और जीवन जीने के अधिकार को सुरक्षित करना।

'इस केस को लेकर हमने नेपाल

हम इंतजार कर रहे थे कि शायद कोई बचाने आएगा लेकिन कोई नहीं आया।' 'हम दोनों पूरे दिन कमरे में ही बंद रहे। क्योंकि चारों तरफ गोलियों की आवाज थी और जगह-जगह आगजनी हो रही थी। शाम करीब 7 बजे हमारे कमरे में दरवाजे के नीचे से धुआं आने लगा और हमारा दम घुटने लगा। अब आग के चलते सीढ़ियों के रास्ते उतरना मुमकिन नहीं था। हमने खिड़की के पर्दे निकाले और रस्सी बनाई। तय किया कि चौथी मंजिल से रस्सी के सहारे नीचे उतर जाएंगे।' 'हालांकि पत्नी राजी नहीं थी। वे कहती रहीं कि मैं नहीं उतर पाऊंगी। आप चले जाओ, कम से आपकी जान बच जाएगी। हालांकि मैं नहीं माना और कहा- दोनों साथ जाएंगे। रात करीब 8.45 से 9 बजे हम दोनों नीचे भी उतर आए लेकिन पत्नी उतरते वक्त कुछ ऊंचाई से नीचे गिर पड़ी थी। उन्हें पसलियों और सिर पर चोट आई थी लेकिन उस वक्त उन्होंने मुझे कुछ नहीं बताया।रामबीर बताते हैं, 'जब हम नीचे उतरे तो चारों तरफ आगजनी हो रही थी, गोलियां चल रही थीं। हमें बचाने वाला कोई नहीं था। कई और लोग भी फंसे हुए थे। मिलिट्री की गाड़ियां आते-जाते देखकर हमने उनसे मदद की गुजारिश की लेकिन वो नहीं माने।' 'बड़ी मुश्किल के बाद मैंने पत्नी को एक गाड़ी पर चढ़ाया लेकिन मैं नहीं चढ़ सका और गाड़ी वहां से निकल गई। अब मैं पत्नी से भी बिछड़ गया था। पूरी रात हिंसा और गोलियों की आवाज के बीच यहां-वहां भटकता रहा। रात करीब 9.30 बजे से लेकर दूसरे दिन दोपहर तक मुझे पता नहीं चल सका कि मेरी पत्नी कहां हैं।' '10 सितंबर को काफी पूछताछ और खोजबीन के बाद दोपहर करीब 1.45 बजे मुझे पत्नी का क्लू मिला। मिलिट्री के एक अधिकारी ने बताया कि वो काठमांडू के टीचर्स अस्पताल में भर्ती है। उसका इलाज चल रहा है। जब मैं अस्पताल पहुंचा तो उसकी मौत की खबर मिली। मैं भागा-भागा मोर्चरी पहुंचा तो उसकी लाश रखी थी।'रामबीर कहते हैं, 'हम 5 स्टार होटल में रुके थे। उम्मीद थी कि यहां सबसे ज्यादा सेफ रहेंगे लेकिन हमारी सेफ्टी की फिक्र किए बिना होटल स्टाफ गायब बात कंपन्सेशन की नहीं है, बात जिम्मेदारी तय करने की है। हमारी सरकार कहती है कि हम यूक्रेन से अपने लोग निकाल लाए तो फिर नेपाल में वही काम क्यों नहीं किया?'केस को लेकर हमने रामबीर सिंह के वकील अभिषेक चौधरी से भी बात की। वे कहते हैं, 'दुर्भाग्य है कि बुजुर्ग महिला की जान एक ऐसे देश में गई, जहां आप सिर्फ आधार कार्ड लेकर भी जा सकते हैं। वहां वीजा और पासपोर्ट की भी जरूरत नहीं होती। यहां यूपी के गोरखपुर जिले से कुछ घंटों में पहुंचा जा सकता है। फिर भी हमारी सरकार अपने लोगों को नहीं बचा सकी। ये पूरी तरह यूपी सीएमओ ऑफिस में भी फोन किया था लेकिन वहां से भी मदद नहीं मिली। उसके बाद मुझसे पत्नी के कफन और डेडबॉडी फ्रीजर बॉक्स में रखने के नाम पर भी अनाप-शनाप पैसे वसूले गए। मैंने डेडबॉडी रखने के लिए 25 हजार रुपए और पोस्टमार्टम के लिए करीब डेढ़ लाख रुपए चुकाए।' 'फिर 12 सितंबर को मैंने करीब डेढ़-पौने दो लाख रुपए में एंबुलेंस बुक की और अकेले पत्नी का शव लेकर भारत लौटा। लेकिन मेरा सवाल यही है कि आखिर दूसरे देश में हमारी एंबेसी क्यों होती है? क्या हिंसा के वक्त एंबेसी का ऐसे गायब होना भारी लापरवाही नहीं है?' केस के बारे में पूछने पर वे कहते हैं, 'हजार करोड़ भी मिल जाएं तो मेरी पत्नी वापस नहीं आ सकती है। इसलिए में मौजूद इंडियन एंबेसी का पक्ष जानने के लिए उनके अफसर बशिष्ठ नंदन से बात की। लापरवाही के आरोप पर उन्होंने कहा कि अभी इस केस के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है। मीडिया से ही पता चल रहा है। उस वक्त एंबेसी से जो मदद मुमकिन हो सकती थी, वो एंबेसी की तरफ से की गई थी। किसी एक केस के बारे में हम कुछ नहीं कह सकते। इसके बाद हमने काठमांडू में मौजूद होटल हयात रीजेंसी से भी कॉन्टैक्ट करने की कोशिश की। हमने होटल की वेबसाइट पर दिए सभी मोबाइल और फोन नंबरों पर कॉल किया, लेकिन सभी बंद मिले।

दिल्ली में राहुल गांधी से मिले 'मोहम्मद दीपक',बोले- कोटद्वार आकर तुम्हारे जिम की मेंबरशिप लूंगा

नयी दिल्ली। उत्तराखंड के कोटद्वार में 'बाबा' शब्द को लेकर शुरू हुआ विवाद अब दिल्ली तक पहुंच गया। एक बुजुर्ग मुस्लिम दुकानदार को बचाने के लिए खुद को 'मोहम्मद दीपक' बताने वाले जिम ट्रेनर दीपक कुमार ने आज दिल्ली में राहुल गांधी से मुलाकात की। राहुल ने इस मुलाकात की तस्वीरें साझा करते हुए दीपक को 'साहस की लौ' बताया है। मुलाकात के बाद राहुल गांधी ने इंस्टाग्राम पर लिखा-'हर इंसान, एक समान... यही है भारतीयता, यही है मोहब्बत की दुकान। उत्तराखंड के भाई 'मोहम्मद दीपक' से मुलाकात - एकता और साहस की ऐसी ही लौ हर भारतीय युवा में जलनी चाहिए।' दीपक ने बताया कि राहुल जी ने मुझे मिलने के लिए बुलाया था। उन्होंने मेरी फैमिली से बात की। जो भी यह मैटर हुआ, उसे लेकर उन्होंने मुझे समझाया। उन्होंने मेरी फैमिली और बच्चों से भी बात की। मुझे तसल्ली दी कि घबराने वाली कोई बात नहीं है। आपने कोई गलत काम नहीं किया है, आपने अच्छा काम किया है। उन्होंने कहा कि वे कोटद्वार आकर मेरे जिम की मेंबरशिप लेंगे और जिम विजिट करेंगे। यह सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई। अगर राहुल जी मेरे जिम आएंगे और मेंबरशिप लेंगे, तो यह मेरे लिए बहुत खुशी की बात होगी। धमकियां मुझे पहले भी मिलती रही हैं। ऐसा नहीं है कि यह अभी की बात है; काफी पहले भी धमकियां मिली थीं। अब माहौल पहले से बेहतर है और स्थिति ठीक है। राहुल गांधी जी ने मेरा हालचाल पूछा। उन्होंने मेरी फैमिली के बारे में पूछा कि घर में सब ठीक है या नहीं। मैंने बताया कि मेरी फैमिली पहले से बेहतर है और अच्छा महसूस कर रही है। उन्होंने मेरी वाइफ से भी बात की।

मुझे सोनिया जी से भी मिलवाया।भाजपा विधायक और प्रदेश प्रवक्ता विनोद चमोली ने राहुल गांधी और 'मोहम्मद दीपक' की मुलाकात को कांग्रेस की तुष्टिकरण की घटिया रणनीति करार दिया है। उन्होंने तंज कसते हुए कहा कि जो व्यक्ति दीपक से 'मोहम्मद दीपक' बनेगा, वह कांग्रेस के लिए पूजनीय और 'बब्बर शेर' बन जाएगा, लेकिन देवभूमि की जनता ऐसी 'कालनेमि' प्रवृत्ति और डेमोग्राफी बिगाड़ने की कोशिशों को कभी स्वीकार नहीं करेगी। चमोली ने आरोप लगाया कि कांग्रेस का यह कृत्य उत्तराखंड की शांति और सांस्कृतिक स्वरूप के लिए खतरनाक है, जिसे भाजपा किसी भी कीमत पर सफल नहीं होने देगी।

सिंगापुर में योगी दहाड़े- ब्रह्मोस ने अच्छे-अच्छे को कंपा दिया,महिला बोलीं- योगी है तो यूपी सुरक्षित है

सिंगापुर। सीएम योगी आदित्यनाथ ने सोमवार को सिंगापुर में प्रवासी भारतीयों से मुलाकात की। उन्होंने कहा, यूपी में डिफेंस कॉरिडोर बना है। ऑपरेशन सिंदूर में जो ब्रह्मोस मिसाइल दागी गई थी, वह लखनऊ की थी। कितना सटीक निशाना था, न। अच्छे-अच्छे को कंपा दिया था। इस पर लोगों ने जय श्रीराम के नारे लगाए। सीएम ने कहा, अगर आप 5 साल पहले अयोध्या आए होंगे, तो अब पहचान नहीं पाएंगे। लगेगा तेत्रायुग की अयोध्या आ गई है। भगवान राम के समय की। इस पर प्रवासी भारतीयों ने जय श्रीराम के नारे लगाए। सीएम ने कहा- '75 हजार एकड़ का लैंड बैंक यूपी के पास है। हमने कलस्टर तैयार किए हैं। वहां बिजली की निर्बाध सप्लाई है। सुरक्षा का माहौल है। किसी तरह का अब कोई डर नहीं। हां, 9 साल पहले बेटियां डरती थीं। अब तो लड़कियां नाइट शिफ्ट में काम कर रही हैं।' योगी ने कहा, नया भारत दुनिया के अंदर अपनी ताकत दिखा रहा है। दिल्ली में एआई समिट को देखा होगा। 20 देशों के राष्ट्राध्यक्ष इसमें शामिल हुए थे। 100 से ज्यादा देशों के लोग इसमें आए थे। विकसित देशों के राष्ट्राध्यक्ष ने पीएम मोदी के नए भारत के द्वारा 140 करोड़ लिए अहम कदम उठाए हैं। सबने इसकी प्रशंसा की है। राइटर स्वाती लाहौटी ने सीएम से कहा, मैं यूपी से हूं तो आपकी बहन हुई।

यूपी की 11 करोड़ महिलाओं की तरफ से हमें सुरक्षा देने के लिए आप को धन्यवाद देती हूं। उन्होंने कहा, योगी है तो यूपी है। योगी है तो यूपी सुरक्षित है।सीएम योगी 4 दिवसीय सिंगापुर-जापान के दौरे पर हैं। आज सोमवार को सीएम ने सिंगापुर में कारोबारियों के साथ बैठक की। यूपी में निवेश के लिए आमंत्रित किया। यूनिवर्सल सक्सेस ग्रुप के साथ 6,650 करोड़ रुपए के निवेश के लिए तीन एमओयू पर हस्ताक्षर किए। यह निवेश ग्रुप हाउसिंग, लॉजिस्टिक्स और हाइपरस्केल डेटा सेंटर जैसे अहम क्षेत्रों में किया जाएगा। इनसे 20 हजार से ज्यादा लोगों को रोजगार मिलेगा।

उन्होंने निवेशकों को बताया- हम निवेशकों को आसान और तेज मंजूरी दे रहे हैं। यूपी की 25 करोड़ से ज्यादा की बड़ी आबादी एक बड़ा बाजार है। कानून-व्यवस्था बेहतर है, एक्सप्रेसवे और कनेक्टिविटी मजबूत हो रही, जिससे लंबे समय के निवेशकों को फायदा मिलेगा। सीएम के साथ वित्त मंत्री सुरेश खन्ना और उद्योग मंत्री नंद गोपाल नंदी नजर आए। नंदी और वित्त मंत्री कोट-पैंट पहने हुए थे, जबकि सीएम पारंपरिक परिधान यानी भगवा कपड़ों में नजर आए। सीएम 3 दिन में 25 कंपनियों के सीईओ से मुलाकात करेंगे। इसके बाद 25 फरवरी को जापान पहुंचेंगे।

फिल्म 'द केरल स्टोरी 2' पर विवाद,कामाख्या नारायण सिंह ने अनुराग कश्यप को बताया मानसिक रूप से कमजोर

मुंबई। 'द केरल स्टोरी 2' के निर्देशक कामाख्या नारायण सिंह ने मशहूर फिल्ममेकर

अनुराग कश्यप को अपने तीखे बयान के जवाब में गंभीर आरोप लगाए हैं। यह विवाद खास तौर पर फिल्म के एक सीन को लेकर शुरू हुआ है, जिसमें ट्रेलर में दिखाया गया है कि एक मुस्लिम परिवार एक्ट्रेस को जबरदस्ती गोमांस खिला रहा है।कुछ दिनों पहले अनुराग कश्यप ने इस सीन पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा था कि कोई किसी को इस तरह गोमांस नहीं खिलाता, तो क्या खिचड़ी तक कोई जबरदस्ती नहीं खिला सकता। उन्होंने फिल्म को पूरी तरह बकवास और प्रोपगैंडा करार दिया था तथा फिल्म के उद्देश्यों पर भी सवाल उठाए थे।अब इसी टिप्पणी के जवाब में निर्देशक कामाख्या नारायण सिंह ने सोशल मीडिया पर एक वीडियो पोस्ट किया है जिसमें उन्होंने अनुराग कश्यप पर तीखा हमला बोला है। उन्होंने कहा कि अनुराग मानसिक रूप से दुर्बल' हो गए हैं और उन्हें हर चीज से शिकायत रहती है। चाहे वह फिल्म इंडस्ट्री हो, ब्राह्मण समुदाय हो या नेटफ्लिक्स। कामाख्या ने कहा, 'अनुराग कश्यप जी अब मानसिक रूप से दुर्बल हो गए हैं। इनको हर चीज से दिक्कत है।'कामाख्या ने अपने वीडियो में यह भी कहा कि समाज में कुछ निर्दोष लड़कियों को धर्म परिवर्तन कराने के लिए गोमांस खिलाया जाता है, और यह एक गंभीर अपराध है। उन्होंने अनुराग कश्यप की फिल्म ' द गर्ल इन येलो बूट्स' का भी जिक्र किया और उस पर तीखी आलोचना की। उन्होंने कहा कि अनुराग ने उस फिल्म में एक पिता-बेटी के रिश्ते को अवैध तरीके से दर्शाया था, जो सभ्य समाज में सोचना भी मुश्किल है।सिंह ने कहा कि अनुराग की फिल्में पिछले कुछ समय से फ्लॉप चल रही हैं और वह चाहते हैं कि उन्हें अक्ल आए। उन्होंने यह भी कहा कि 'द केरल स्टोरी 2' तथ्यों पर आधारित है और ट्रेलर को दर्शकों द्वारा अच्छी प्रतिक्रिया मिल रही है। दूसरी तरफ, अनुराग कश्यप ने मीडिया से बातचीत में फिल्म को बकवास बताते हुए कहा था कि इससे विभाजन और सौहार्द को नुकसान पहुँच सकता है। यह विवाद तब और बढ़ गया जब कई फिल्म हस्तियों और राजनीतिक हस्तियों ने भी फिल्म पर अपनी प्रतिक्रियाएं दीं। फिल्म 27 फरवरी 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है, लेकिन इस विवाद ने पहले से ही इसके आसपास बहस का एक बड़ा विषय तैयार कर दिया है।

रश्मिका मंदाना और विजय देवरकोंडा ने शादी की कन्फर्म,कहा- इतना प्यार देने के लिए शुक्रिया

मुंबई। रश्मिका मंदाना और विजय देवरकोंडा शादी करने जा

रहे हैं। लंबे समय से चल रही शादी की खबरों पर अब कपल ने खुद मुहर लगा दी है। दोनों ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट शेयर कर अपनी वेडिंग का टाइटल 'विरोश' रखने का ऐलान किया है। रश्मिका और विजय ने इंस्टाग्राम पर शेयर किए गए पोस्ट में लिखा, हमारे सबसे प्यारे अपनों, इससे पहले कि हम कोई प्लान बनाते या अपने लिए कुछ तय करते आप पहले से ही हमारे साथ थे। आपने हमें ढेर सारे प्यार से एक नाम दिया विरोश। इसलिए आज पूरे दिल से हम अपने इस मिलन को आपके सम्मान में एक नाम दे रहे हैं। हम इसे नाम दे रहे हैं 'विरोश की शादी'। हमें इतना प्यार देने के लिए धन्यवाद। आप हमेशा हमारे एक हिस्से रहेंगे। ढेर सारा प्यार।रश्मिका और विजय ने पहली बार 2018 में रिलीज हुई फिल्म गीता गोविंदम में साथ काम किया था। इसके बाद 2019 में आई 'डियर कॉमरेड' में भी उनकी ऑन-स्क्रीन जोड़ी को खूब पसंद किया गया। इन फिल्मों की शूटिंग के दौरान ही दोनों के डेटिंग की खबरें सामने आने लगी थीं।इसके अलावा रश्मिका और विजय को कई बार साथ में स्पॉट किया गया, जिससे अफवाहों को और हवा मिली। हालांकि, दोनों ने कभी भी अपने रिश्ते को लेकर आधिकारिक तौर पर कोई बयान नहीं दिया था। हाल में सोशल मीडिया पर एक कार्ड भी सामने आया,जिसमें विजय देवरकोंडा का नाम लिखा है। इसके बाद कयास लगाए जाने लगे कि ये दोनों की शादी का कार्ड है। कार्ड में लिखा है-परिवार के आशीर्वाद से रश्मिका और विजय 26 फरवरी को एक छोटे और निजी समारोह में शादी करेंगे। इस शादी में उदयपुर सिर्फ करीबी परिवारजन और कुछ चुनिंदा दोस्त ही शामिल होंगे। एक वीडियो भी सामने आया है, जिसमें विजय देवरकोंडा का घर फूलों और लाइट्स से सजा नजर आ रहा है। हालांकि दोनों स्टार्स की तरफ से अभी तक कोई ऑफिशियल बयान सामने नहीं आया है। अक्टूबर में हुई विजय-रश्मिका की सगाईविजय देवरकोंडा और रश्मिका मंदाना ने 3 अक्टूबर को हैदराबाद में सगाई की है। ये एक प्राइवेट सेरेमनी थी, जिसमें कपल के परिवार के चंद लोग ही शामिल हुए थे। इसके बाद रश्मिका को कई मौकों पर एंगेजमेंट रिंग के साथ स्पॉट किया गया था, हालांकि कपल ने अब तक सगाई की ऑफिशियल अनाउंसमेंट नहीं की है।

अमिताभ बच्चन को पहला साउथ फिल्मफेयर अवॉर्ड मिला,कल्कि के लिए बेस्ट सपोर्टिंग एक्टर चुने गए

मुंबई। 70वें साउथ फिल्मफेयर अवॉर्ड्स का

आयोजन शनिवार को केरल के कोच्चि में हुआ। इस दौरान अमिताभ बच्चन को फिल्म कल्कि 2898एडी के लिए बेस्ट सपोर्टिंग एक्टर मेल का अवॉर्ड दिया गया। यह उनका पहला साउथ फिल्मफेयर अवॉर्ड है। प्रभास स्टारर फिल्म में अमिताभ बच्चन ने अश्वत्थामा का रोल निभाया था। इस सेरेमनी में तेलुगु, तमिल, मलयालम और कन्नड़ फिल्म इंडस्ट्री की बेहतरीन फिल्मों और कलाकारों को सम्मानित किया गया। फिल्म पुष्पा 2 ने तेलुगु कैटेगरी में पांच अवॉर्ड जीते, जिनमें बेस्ट फिल्म, बेस्ट डायरेक्टर (सुकुमार) और बेस्ट एक्टर (अल्लू अर्जुन) शामिल रहे। तमिल कैटेगरी में फिल्म अमरन ने सात अवॉर्ड अपने नाम किए, जिनमें बेस्ट फिल्म, बेस्ट एक्टर (सिवकार्तिकेयन) और बेस्ट एक्ट्रेस (साई पल्लवी) शामिल हैं। मलयालम सिनेमा से सुपरस्टार ममूटी को ब्रमायुगम के लिए बेस्ट एक्टर चुना गया। लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड दिवंगत एक्टर-फिल्ममेकर श्रीनिवासन को मरणोपरांत दिया गया।फिल्म कल्कि 2898 एडी 27 जून 2024 को रिलीज हुई थी। इसने बॉक्स ऑफिस पर शानदार सफलता हासिल करते हुए दुनियाभर में रु1,000 करोड़ से ज्यादा की कमाई की थी। फिल्मफेयर अवॉर्ड्स साउथ (तेलुगु) 2026 में फिल्म ने दो अवॉर्ड्स जीते, बेस्ट सपोर्टिंग एक्टर (मेल) का अवॉर्ड अमिताभ बच्चन ने जीता। बेस्ट प्रोडक्शन डिजाइन का अवॉर्ड नितिन जियानी चौधरी को मिला। हालांकि, अमिताभ बच्चन इस सेरेमनी में शामिल नहीं हुए। फिल्मफेयर अवॉर्ड्स साउथ टाइम्स ग्रुप की फिल्मफेयर मैगजीन द्वारा प्रस्तुत किए जाते हैं। फिल्मफेयर अवॉर्ड्स की शुरुआत 1954 में हुई थी, शुरुआत में केवल हिंदी फिल्मों के लिए यह सेरेमनी होती थी। फिर 1964 में दक्षिण भारतीय भाषाओं (तमिल-तेलुगु) के लिए अवॉर्ड्स की शुरुआत हुई। वहीं, मलयालम 1967 में और कन्नड़ भाषा की फिल्में 1970 में शामिल हुईं। समय के साथ हर इंडस्ट्री के लिए अलग सेरेमनी आयोजित होने लगी। पहले ये सेरेमनी मुंबई में हिंदी फिल्मों के अवॉर्ड्स के साथ होती थी, लेकिन 1976 के बाद साउथ सेगमेंट को अलग कर चेन्नई और हैदराबाद में शिफ्ट किया गया।

9 साल की बेटी अलग कमरे में नहीं सोती,डरती और रोती है, उसे इंडीपेंडेंट कैसे बनाएं, हमसे अलग सोने की आदत कैसे डालें

नयी दिल्ली। विषय को समझेंगे एक्सपर्टः डॉ. अमिता श्रृंगी, साइकोलॉजिस्ट, फैमिली एंड चाइल्ड काउंसलर, जयपुर से सवाल जवाब के माध्यम से. सवाल- मैं इंदौर का

रहने वाला हूं। मेरी 9 साल की बेटी है। वह रात में अकेले सोने से डरती है। वह अक्सर कहती है कि उसे अंधेरे से डर लगता है और वह सपना देखती है कि हम कहीं चले गए हैं। हमारा मानना है कि अब वह बड़ी हो गई है और उसे अलग कमरे में सोने की आदत डालनी चाहिए ताकि वह आत्मनिर्भर बन सके। हम उसकी भलाई चाहते हैं। लेकिन हमारे लिए यह तय कर पाना मुश्किल हो गया है कि आखिर किस उम्र में बच्चे को अकेले सोने के लिए तैयार करना चाहिए। हमारा डर यह भी है कि कहीं उसे अकेलापन न महसूस हो या यह

बदलाव उसके आत्मविश्वास को नुकसान न पहुंचा दे। कृपया मेरा मार्गदर्शन करें। जवाब- आपकी चिंता स्वाभाविक है। बहुत से पेरेंट्स को इस स्थिति का सामना करना पड़ता है। हालांकि इसमें बहुत चिंता करने की बात नहीं है। आपकी बेटी 9 साल की उम्र में भी आपके साथ ही सो रही है या रात में अकेले सोने से डरती है तो इसका मतलब है कि वह बचपन से ही आपके पास सोती आ रही है। यह उसके लिए सुरक्षा, सुकून और प्यार का प्रतीक बन चुका है, जो एक स्वाभाविक और सुंदर अनुभव है। लेकिन अब समय है कि प्यार के साथ-साथ उसमें धीरे-धीरे स्वतंत्रता के बीज भी बोए जाएं। हेल्दी पेरेंटिंग का मतलब है 'प्यार और स्वतंत्रता का संतुलन' बच्चे जैसे-जैसे बड़े होते हैं, खुद से खाना सीखते हैं, पॉटी-सुसु बताने लगते हैं, स्कूल जाते हैं और पानी की बोतल से खुद पानी पीना सीखते हैं। ये छोटी-छोटी चीजें आत्मनिर्भरता और स्वतंत्रता के संकेत हैं। वह समय के साथ छोटे-छोटे काम खुद से करना सीखते हैं, जबकि बचपन में ये सारे काम कोई बड़ा उनके लिए कर रहा था। इसी तरह से अकेले सोना भी उस स्वतंत्रता की दिशा में एक कदम है। बच्चे को बचपन से ही आत्मनिर्भर बनाना जरूरी- अगर बच्चे बढ़ती उम्र में भी हर काम के लिए पेरेंट्स पर निर्भर रहते हैं तो इसका मतलब है कि अब तक के पालन-पोषण में कुछ कमी रह गई है। कुल मिलाकर इस समय उन्हें स्वतंत्रता देने की जरूरत है। छोटे-छोटे कामों से इसकी शुरुआत करें। बच्चे की क्षमता के अनुसार जितने काम उसके दायरे में आते हैं, वे काम करने के लिए उसे प्रेरित करें। चाहे वह घर के काम हों या उसके खुद के काम। जैसेकि 'पानी का गिलास ला दो', 'अखबार दे दो' और 'ये पैकेट डस्टबिन में फेंक दो' वगैरह-वगैरह। ये काम देखने में छोटे लग सकते हैं, लेकिन इनसे बच्चा महसूस करता है कि वह परिवार का एक अहम हिस्सा है। जब वह कोई काम खुद करता है तो उसकी तारीफ करें और कहें, 'वाह! अब तो तुम बड़े हो गए हो।' इससे वह स्वाभाविक रूप से जिम्मेदारी लेना शुरू करता है। बच्चे में आत्मनिर्भरता बढ़ाने के लिए कुछ

और कदम उठा सकते हैं। कई बार माता-पिता प्यार में ऐसा व्यवहार करने लगते हैं, जो अनजाने में बच्चे को बहुत ज्यादा डिपेंडेंट बना देता है। जैसेकि- खाना भी मां ही खिलाएं, कपड़े भी मां ही पहनाएं, सामान भी कोई और उठाए, जिस चीज की जरूरत हो उसे बोलने से पहले ही पूरा कर दिया जाए। ऐसे में बच्चा हर छोटी-बड़ी चीज के लिए दूसरों पर निर्भर रहना सीख जाता है। इससे वह न जिम्मेदारी सीखता है, न निर्णय लेना, न धैर्य, न आत्मविश्वास। वह हर काम में किसी और की मदद ढूंढ़ने लगता है। इसलिए पेरेंट्स को चाहिए कि वे बच्चे को बचपन से ही अपने छोटे-छोटे फैसले लेने दें, उसे अपने काम खुद करना सिखाएं। याद रखें कि हर बार आगे बढ़कर मदद करने से ज्यादा जरूरी उसे यह भरोसा देना है कि वह ये काम खुद भी कर सकता है। इन छोटे-छोटे कामों और बदलावों से बच्चे में जिम्मेदारी की भावना विकसित होती है, जो उसे अकेले सोने के लिए प्रेरित करती है। इसके साथ ही माता-पिता को यह समझना चाहिए कि अकेले सोना भी आत्मनिर्भर और स्वावलंबी बनने की प्रक्रिया का एक अहम हिस्सा है। यह कोई सजा नहीं, बल्कि बच्चे के लिए खुद पर भरोसा करना सीखने का एक अवसर है। इसलिए जरूरी है कि पहले उसे मानसिक रूप से तैयार करें, प्यार और स्नेह के साथ प्रेरित करें और समय आने पर धीरे-धीरे सोने की यह स्वतंत्रता उसे सौंपें। इसके लिए धीरे-धीरे कोशिश करें और इस दौरान कुछ बातों का विशेष ध्यान रखें। बच्चे को अचानक खुद से न करें दूर- बच्चे को अचानक अलग करना सही तरीका नहीं है। अगर उसे अचानक अकेले सोने के लिए मजबूर किया जाता है तो वह खुद को असुरक्षित, असहाय और अस्वीकृत महसूस कर सकता है। यह बदलाव उसके आत्मविश्वास को मजबूत करने के बजाय कमजोर कर सकता है। ऐसे में बच्चा या तो हर वक्त माता-पिता की छाया में रहना चाहेगा या फिर भीतर ही भीतर डर और चिंता को दबाकर जीना शुरू कर देगा। इसलिए जरूरी है कि यह बदलाव धीरे-धीरे, प्यार और समझदारी से किया जाए ताकि वह न सिर्फ अलग सोना सीखे, बल्कि खुद पर भरोसा करना भी। अंत में यही कहूंगी कि बच्चों को स्वतंत्र बनाना है तो पहले उन्हें सुरक्षित महसूस कराना होगा क्योंकि आत्मनिर्भरता वहीं पनपती है, जहां विश्वास और भावनात्मक जुड़ाव की जड़ें गहरी हों। इससे उसमें धीरे-धीरे अलग सोने की आदत विकसित होगी।

बॉयफ्रेंड पजेसिव था तो ब्रेकअप कर लिया,अब वो अमीर हो गया है तो उसे मिस कर रही हूं, क्या मेरी फीलिंग सही है?

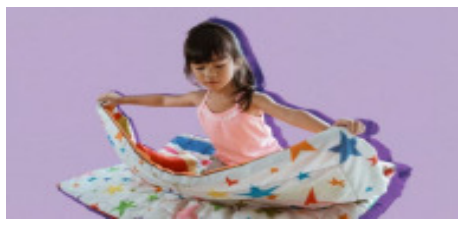

नयी दिल्ली। मामले को समझेंगे एक्सपर्टः डॉ. जया सुकुल, क्लिनिकल साइकोलॉजिस्ट, नोएडा से सवाल जवाब के माध्यम से

सवाल- मैं 28 साल की हूं और करीब दो साल तक एक रिलेशनशिप में थी। मैंने उस रिश्ते को निभाने की बहुत कोशिश की, लेकिन बात नहीं बनी। मेरा बॉयफ्रेंड मुझसे बहुत प्यार करता था, लेकिन वो जरूरत से ज्यादा ही प्रोटेक्टिव और शक्की मिजाज था। वो हर वक्त यह जानना चाहता था कि मैं कहां हूं, किससे बात कर रही हूं, क्या पहन रही हूं, यहां तक कि सोशल मीडिया पर किससे कनेक्ट हूं। धीरे-धीरे मुझे लगने लगा कि ये प्यार नहीं, एक तरह का कंट्रोल है। कई बार हमने इस बात को लेकर बहस की, पर कुछ सुधरा नहीं। आखिरकार मैंने ब्रेकअप कर लिया। ब्रेकअप के बाद भी मैं पूरी तरह उबर नहीं पाई। मैं कभी-कभी उसकी इंस्टाग्राम प्रोफाइल देखती थी। कुछ दिन पहले मुझे पता चला कि उसने लैंड रोवर गाड़ी खरीदी है। पता चला कि उसकी फैमिली के जो खेत थे, वहां से हाईवे निकला है। पहले वो एक साधारण मिडिल क्लास लड़का था, लेकिन अब रातोंरात करोड़पति हो गया है। उसके इंस्टाग्राम से पता चलता है कि वो काफी एलीट लाइफ स्टाइल इंजॉय कर रहा है। आए दिन क्लबिंग और पार्टी चल रही है। ये जानकर मन में अजीब-सा अफसोस हुआ। अब जब वो इतना अमीर हो गया है तो मैं उसकी जिंदगी में नहीं हूं। मुझे समझ नहीं आ रहा है- क्या मैं उसे सच में मिस कर रही हूं या फिर उसके अमीर होने की खबर से मुझे दुख हो रहा है। क्या ये फीलिंग्स नॉर्मल हैं? क्या मुझे उससे माफी मांगकर दोबारा कोशिश करनी चाहिए? जवाबः सबसे पहले तो ये जान लीजिए कि आप अकेली नहीं हैं। आपने जो महसूस किया और जो सवाल पूछे, वो बहुत से लोग अपने दिल में सोचते हैं। 28 साल की उम्र में आपने दो साल तक एक रिश्ते को दिल से निभाया। ये आसान नहीं होता, खासकर तब जब वो रिश्ता आपको खुशी की जगह घुटन देने लगे। आपने हिम्मत दिखाई और खुद को उस टॉक्सिक रिलेशनशिप से बाहर निकाला, ये बहुत बड़ी बात है। अपने लिए ऐसा फैसला लेना हर किसी के बस की बात नहीं होती। अब जो आप महसूस कर रही हैं- वो बेचैनी, वो अफसोस ये सब इंसान होने की निशानी है। जब हम किसी के साथ इतना वक्त बिताते हैं और फिर वो हमारी जिंदगी से चला जाता है, तो उसकी लाइफ के अपडेट्स सुनकर मन में उथल-पुथल होना आम बात है। खासकर तब, जब वो इंसान अचानक बहुत आगे बढ़ जाता है। क्या आप सच में उसे मिस कर रही हैं या कुछ और है? हम सब अच्छी जिंदगी के सपने देखते हैं। ऐसी जिंदगी, जिसमें पैसों की टेंशन न हो, शानदार गाड़ियां हों, छुट्टियों की प्लानिंग हो और हर दिन खुशी से बीत रहा हो। जब आप अपने एक्स की नई जिंदगी देखती हैं, उसकी लैंड रोवर, उसकी पार्टियां, तो शायद आपको लगता है कि काश, मैं भी उसकी जिंदगी का हिस्सा होती। ये सोचना बिल्कुल नॉर्मल है। लेकिन सवाल ये है कि क्या आप उसे सचमुच मिस कर रही हैं या उसकी नई चमक-दमक को? अगर वो आज भी वही मिडिल-क्लास लड़का होता, जिसके पास न गाड़ी होती, न पैसे होते तो क्या तब भी आप उसे इतना याद करतीं? शायद नहीं। इसलिए हो सकता है कि आपका दुख उसके जाने का कम और उसकी नई जिंदगी का हिस्सा न होने का ज्यादा हो। आपने जो बताया, उससे यह स्पष्ट है कि वो रिश्ता आपके लिए सही नहीं था। प्यार में इंसान को अपने पार्टनर की फिक्र होती है, पर किसी को हर कदम पर कंट्रोल करना प्यार नहीं होता। वो हर वक्त आप पर नजर रखता था, कहां जा रही हो, क्या पहन रही हो, किससे बात कर रही हो। ये सब सुनने में प्यार जैसा लग सकता है, पर असल में ये घुटन की तरह महसूस होता है। अगर वो आपके लिए सही इंसान होता तो आपको उससे दूर जाने की जरूरत ही नहीं पड़ती। आप खुश रहतीं, अपने फैसले ले पातीं और वो आप पर भरोसा करता। लेकिन ऐसा नहीं था। इसलिए ब्रेकअप आपकी गलती नहीं थी, बल्कि ये आपका सबसे समझदारी भरा कदम था। अब उसकी अमीरी को देखकर ये मत सोचिए कि आपने गलत किया। पैसा जिंदगी को आसान बना सकता है, पर रिश्ते को नहीं। अगर वो पहले कंट्रोलिंग था, तो पैसा आने से उसका स्वभाव नहीं बदलेगा।आपका दो साल का रिलेशनशिप था। इतने वक्त में बहुत सारी यादें बन जाती हैं। ऐसे में उसकी जिंदगी में क्या चल रहा है, ये जानने का मन करना स्वाभाविक है। इंस्टाग्राम पर उसकी नई-नई तस्वीरें देखना आपके लिए एक आदत बन गई होगी। लेकिन सच ये है कि सोशल मीडिया पर लोग सिर्फ अपनी अच्छी चीजें दिखाते हैं। उसकी गाड़ी, उसकी पार्टियां- ये सब उसकी जिंदगी का एक छोटा हिस्सा है। उसकी असली जिंदगी में क्या चल रहा है, ये कोई नहीं जानता। हो सकता है कि वो अंदर से खुश भी न हो। अगर उसकी प्रोफाइल बार-बार देखकर परेशान हो रही हैं तो ये एक संकेत है कि आपको इससे बाहर निकलने की जरूरत है। इस बेचैनी से कैसे निकलें? अब बात करते हैं कि आप इस उलझन से बाहर कैसे आ सकती हैं। कुछ आसान तरीके हैं- सोशल मीडिया से ब्रेक लें- उसकी प्रोफाइल देखना बंद करें। अगर मुश्किल हो तो उसे म्यूट या ब्लॉक कर दें। ये आपके लिए बेहतर है, न कि उसे सजा देने के लिए। पुरानी बातें याद करें- एक कागज पर लिखें कि आपने ब्रेकअप क्यों किया। जब भी उसका ख्याल मन में आए तो इस कागज के टुकड़े को पढ़ें। ये आपको सच्चाई याद दिलाता रहेगा। खुद को वक्त दें- दोस्तों के साथ समय बिताएं, कोई नया शौक शुरू करें। जो वक्त आप उसकी प्रोफाइल देखने में लगाती हैं, उसे किसी ऐसे काम में लगाएं, जिससे आपको खुशी मिले। किसी से बात करें- अगर मन बहुत भारी हो तो किसी दोस्त या काउंसलर से बात करें। अपने एहसासों को बाहर निकालना जरूरी है।आपने पूछा कि क्या आपको उससे माफी मांगकर रिश्ता फिर से जोड़ना चाहिए। इस सवाल पर मेरा जवाब है, बिल्कुल नहीं। आपने कुछ गलत नहीं किया है। एक टॉक्सिक रिलेशनशिप से निकलना आपका हक था। अगर आप माफी मांगेंगी, तो इससे आपके मन में अपने लिए ही इज्जत कम हो जाएगी। पैसा किसी इंसान के दिल या बर्ताव को नहीं बदलता। वो पहले जैसा था, शायद आज भी वैसा ही होगा। खुद को ये मत समझाइए कि शायद अब सब ठीक हो जाएगा। आपकी जिंदगी उससे बेहतर चीजों की हकदार है।आप जो महसूस कर रही हैं, वो गलत नहीं है। लेकिन ये समझना जरूरी है कि ये एहसास कहां से आ रहे हैं। आपने अपने लिए सही फैसला लिया था और आज भी आपको उस पर टिके रहना चाहिए। वक्त के साथ ये दुख कम हो जाएगा।

'चिरैया' का टीजर आउट,घरों में महिलाओं पर होने वाले अन्याय पर आधारित,दिव्या दत्ता मुख्य किरदार में

मुंबई। दिव्या दत्ता की नई वेब सीरीज 'चिरैया' का टीजर आ गया है। यह टीजर भारतीय घरों में होने वाले अन्याय पर सवाल उठाता है। इस टीजर की शुरुआत एक शादी के खुशी भरे मंजर से होती है। एक नई दुल्हन, पूजा, बेहतर जिंदगी की उम्मीद के साथ नया जीवन शुरू करती दिखती है, लेकिन अचानक एक डरावना मोड़ सामने आता है, जिसमें दुल्हन को छत पर उदास और सदमे में दिखाया जाता है। उसके चेहरे पर आंसू हैं और शरीर पर चोट के निशान दिखते हैं। सीरीज की कहानी शादी के जश्न के पीछे एक

कड़वी सच्चाई के बारे में है। यह सीरीज सवाल उठाती है कि क्या शादी के बाद अगर पति अपनी पत्नी पर किसी भी तरह का दबाव डाले, तो क्या यह सही है? शादी कोई लाइसेंस नहीं है और हर बार चुप रहना का मतलब हां नहीं होता। 20 सेकेंड का टीजर इतना बताने के लिए काफी है कि इस सीरीज में कितना गंभीर और सेंसिटिव सब्जेक्ट उठाया गया है। 'चिरैया' का टीजर इस बात पर विचार करने का आग्रह करता है कि शादी कोई लाइसेंस नहीं है और चुप्पी को सहमति नहीं समझना चाहिए।दिव्या ने 'चिरैया' को लेकर कहा, 'हम अक्सर रिश्ते बचाने या शांति बनाए रखने के नाम पर खुद को चुप कर लेते हैं।

शादी को बिना सवाल किए सहमति मान लिया जाता है और त्याग को इतना रोमांटिक बना दिया जाता है कि दर्द गायब हो जाता है।' वेब सीरीज शशांत शाह के निर्देशन में बनी है। इसमें संजय मिश्रा, सिद्धार्थ शॉ, प्रसन्ना बिष्ट, फैसल राशिद, टीनू आनंद और सरिता जोशी भी हैं।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक डॉ. दीपक अरोरा द्वारा रामा प्रिंटर्स 53/25/1 ए बेली रोड न्यू कटरा प्रयागराज (उ.प्र) 211002 से मुद्रित एवं सी-41यूपी एसआईडीसी औद्योगिक क्षेत्र नैनी प्रयागराज।
संपादक/प्रकाशक डा.पुनीत अरोरा
मो.न.09415608710
RNINO.UPHIN/2015/63398
www.adhuniksamachar.com
नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगा।